

Durgābhaktitaranginī



मले ४५४॥ नाऊ नीकं चूकाय न सीना न न पथाधना । कोण मध्या यो न वक्रा जिवली मध्या दूषिणा ॥ मूलं वडं च वा लं च स्वमं ग किं ग ये व च । दक्षिणे ४ पाणि किं
देवी गृहीत्वा दिविना जिगा ॥ गदी द्युष्ठां च वा यं च त्रमेगं खन ये व च । उद्गोदि कमणा देवी दधनी वाम पाणि किं ॥ सिंह स्थाप विमिष्टनी आद्यु त्रमे विमो निः
का । विरु नी चूय मकुलं ससूना स्रवभाहर्न ॥ ॥ अथ चामुष्ठा नृयं ॥ नीला लल दल स्या मा च कु दू वे स म चि ना । खट्वां ग च न्द्र हा स च विरु नी दक्षिणे क न ॥
वाम च मे च या गं च उद्गो द्या ला व न ४ य न ४ दधनी मूला लां च आद्यु च मे ध ना स्रवा ॥ कृष्णं गी दी द्यु दं द्या च अग्नि दी धो निरी यत्ना । लाल जिह्वा निमन क न य
ना वा ले की यत्ना ॥ कं व न्ध वा ह ना सी ना विस्त्रा विश्र व दान ना । न का काली स मा ख्या ना चामुष्ठा नि च क थ न ॥ ॥ अथ स च मे ग ला नृयं ॥ दवी यू ना ॥ ॥ व धा
वा च ॥ अ व ना न स मा स न क थि ना स च मे ग ला । य नि मा ल क र्णं स मा क थ या मि य थ रु व न ॥ सिंह य ना स ना सी या रु द मू क र म छि ना । मूला रु स्रु व न दा क म
कुल क ना मुला ॥ च उ उ ना स मा ख्या ना क थ च रु रु ना मूला व न दं वा रु यं ख न म रु रु नं रु द क्षि ॥ ॥ द ये लं मूल वा यं च च उ थं ख र कं रु व न । न वं च रु रु रु रु

दक्षीमंगलासर्वमंगला॥ ॥अथ पुनिमार्गगादिवावस्तु॥ ननु वस्तुना॥ ॥ दत्तानां पुनिमायुग्युगायंगमायुवनायलानि ननु दयानि शुद्धयायं च विंगमिं॥
 अक्षरुचयवगर्गं स्नानदयं च सर्वदा॥ दसहस्रयलान्यु महांस्नानमुसंख्याया॥ दानव्यं यनसर्वोत्तु दिक्कनियोगिर्गं द्युर्गं॥ दवानामिनिपुस्तमविवक्तिर्गं उ
 द्दग्धकाटित्वनानाकांक्रिकत्वाग्मनदवीनामपि उद्वृत्तं दधिदूग्धादिष्वपि स्रघनदयं वृत्तं यमवसंख्यायुग्युगहलस्योयलकलत्वाग्म्युगायंगमदिशु
 वल्लूदिपुनिमा वगन्कमत्वाग्म्युमयाकु निवदनमार्गं दय्येयनिविंविगायां कविदावर्जनि॥ दवीयुना॥ ॥ द्युगमत्वाग्मं द्युगायुक्तां दूर्गं यत्नादिनृकः
 यग्रायवगाधूमके मूल्ये येषेयदत्तलं ननु॥ वल्लूलेला॥ ॥ रुविष्यायुना॥ ॥ नकुवित्वाग्मं ४ पूथे दधिद्वर्वा कलोक्तेले ४ सामान्य ४ सर्वदवानामधो
 यं यत्रिकीर्तिर्गं॥ नकुमगु कृद्गमं॥ सर्वदवानामिनिपुस्तमविवक्तिर्गं दवीनामपि यका ना कत्वाग्मं॥ रुविष्यायुना॥ ॥ आदानवार्थयाद्यादिहमयागुलदाय
 यग्रा॥ आदानकृते निगेष॥ दवीयुना॥ ॥ हमनागुगमायादि काष्ठमृच्छेलगानिच॥ नत्वादीनिचयागालिगुरुलेखाकिमानिच॥ अर्घ्यनिवद्यपूजायै वलिदा

४

नच कल्ययग्रा॥ रुविष्यायुना॥ ॥ षड्विंशदं गुलं पागु मरुमं यत्रिकीर्तिर्गं॥ मधुमनुविहागानं कनिष्ठं द्वादशांगुलं॥ वस्त्रं गुलविहीनं ननु पार्श्वका नयग्राः
 विग्रा॥ उरुमत्वादि कीर्तिर्गं रुलाधिवर्धे नकुचिदिनिवचनादष्टं गुलविहीनयागुस्य सर्वे धर्मकर्मणि निषध॥ दवीयुना॥ ॥ पागुलाहमनुत्थात्कं पूजा
 यां पुवलेमर्गं॥ द्युर्गं गिलाग्धसामार्थे मदस्यादनूलयर्गं॥ मद४ कस्तुत्रिका पूजाहामादिउयनीत्यादिमर्गं ७ नदकंदवीयुना॥ ॥ पूजयलिलहामनुदधि
 कीनद्युगादिरि॥ कुर्याद्वाग्ममनुलयादिधाय॥ अयं गीर्मंगला काली रुद्रकाली कपालिनी॥ दूर्गं कृमागिवाधानी स्वधास्वाहानमाशुन॥ अननेव कृमनुल
 रुयहामो रुका नयग्रा॥ रुयदूर्गं मर्गं ७ वायुजा नदकं गिलिगाम् ॥ नवयद्यात्मकस्यानपूजा दूर्गं ४ स्वमूर्तिर्गं ४ आदीमधुमत्वादी नवगत्वाग्मं ४ कृमाग्रा॥
 दूर्गे दूर्गे नक्रिलिस्वाहनि नवगत्वाग्मनामनु ४ पूजादीयलवादि ४ पथाकृत्वा ४ कालिकायुना॥ ॥ गन्धपूष्यमथाधुया दीयानेव द्यमवच॥ यस्यायदीयनवः
 सुमर्लका नादिकिंचन॥ नयां देवनमूत्रायै कत्वाया कलपूजयग्रा॥ उल्लसमूलमर्गं ७ यमिनामो निवदयग्रा॥ गथायदीयनवदवशा गन्धपूष्यादिकं गः

था॥ अथ या कृष्णिने स्नाथे नरिष्वि च नदत्तुं न॥ स्वयमकनलः च दाना पूजादिका नयिष्यं॥ नदुक्तं दवीयुना॥ स्वयं वाच्यं न वापि धूजय नूयुजय नः
 वा॥ रुविश्रयुना॥ विनायकं यः कुर्यात् पूजितं या कृष्णिनी किर्या॥ विरुला जायते सच्चिदाह नोदिधनाय हा॥ वलिहीनं दुर्लभं गन्धहीनं त्वराय नां॥ धू
 यहीनं गन्धं वसुहीनं धनं कुर्यात्॥ यायूया यादिनि गाय॥ नलहीनं सिधं राया विद्यना कच नायकः॥ कुरुहीनं न चकुरुं विमानमनकारु वन॥ विमानं
 विमानं नहीन॥ वदीहीनं नुना संशो न गनस्य पूनस्य च॥ कल गे चैधूना गन्धं वद्वे मुनि सरुम॥ कल गे हीनं नूय नूय अम॥ नाना ना मरा वा रु हया
 कृगिस वा श्ववाना दकि ला वहि न स चैथ थैत्या नारु सं गय॥ मनु विद्या विहीनं नु संयु लूमयिन ग्यं नि॥ याग मनु समायुक्तं सर्वे दाया पदं रु वन॥ मथ विष्णु
 ॥ स्नातस्वयं कालि नया लिया द॥ अविचेद्व गिस्वीदरु या ली ना चान् ॥ पाद्म खा द द्वा खा वा उय विष्णु आनी मोनी दवना संयुक्तं न॥ लोम म॥ नाग वदं मुखं क
 यो द्व व कार्ये सदेव हि॥ गिवा चै न समाथ वं रु वि॥ कुर्यादं मुखं ॥ रुविश्रयुना॥ अवि॥ स व रुधु कृया कृ मोनी आ नय ना य ल॥ गगन का मारु यद्व द्वा नाग माः

५

सयं वज्रि न॥ आत्मानं पूजयित्वा च सुगन्धसि न वाससा॥ समुद्ररु यरु दवानु स कीयाम न सस्ति न॥ ॥ अथ पूजा पत्रा ना॥ गगन लयनं॥ कालि काय ना॥
 सर्वेषु गन्धजातेषु यमस्मा मलथा रु व॥ मस्मा त्सर्वे यय ले न द द्या त्तलय रुं सदा॥ दवीयुना॥ दृग्मं निला श्वहामा थै म द ल्पे वानु लयनं॥ चन्द्र ना गुन क पून
 नयं धूय तनं मं॥ मद॥ कस्तू लिका॥ गन्ध॥ चन्द्रा ख्यं लेयनं दयं सर्वे सिद्धि यदा यकं॥ चन्द्रा ख्यं कयू नं॥ कालि काय ना॥ कृष्ण गुनं स कयू न॥ सहि ना मल
 थारु वे॥ कंक मा गुन कस्तू नी चन्द्रा ले॥ समी क्ते॥ गन्धं पी निस दा द द्या दू र्ग या॥ सह सं रु ना॥ दवीयुना॥ मद कयू न का ग्मी न ना च ना नां च रु रु यं॥ न
 न न ले यथ द्वां सर्वे कामान वाप्नु या न॥ ॥ अथ पूया लि दवीयुना॥ पृथ्वी न न ल्पे सं रु के॥ यरे वो गि नि स रु वे॥ अय य धि नि नि स्थि डे॥ पा क्ति ने रु वज्रि
 ने॥ आत्म ना मारु वे वा यि पृथ्वी संयुक्तं यद्वि वा॥ स रु काला रु वे॥ पृथ्वी॥ मलिका जा नि कृ द्वा के॥ सिग न के स थ य मी नी ल य मी श्व या रु वे॥ किं रु के स ग न्धे व
 किं कि ना ने॥ स च म्य के॥ किं कि ना ना वा॥ व कू ले॥ श्वे व मं दा ने॥ कृद य श्वे लि नी ट के॥ गि नी ट कां ला ध॥ क न वी ना के॥ पृथ्वी श्व शां ग ये श्व या ना जि ने॥ सिग न के स

सहावसमगी सहननद्विदं दयं । स्वकाययादद्यान्नु दीयद्यानं गयेवच ॥ नमिगी रुह्यदद्यादु दीयस्तहान्दु गादिकान् । रुह्यामिगी रुहं हं गामिभं ननकः
 वरुगु ॥ यद्यस्तु रुवादर्गं रुहं रुवाधवा । गलजावादनवायि रुलंकाधुवायिवा ॥ वरुिकादीय रुहं रुसदायं वविधास्तु गा ॥ वादनाकार्यासिक
 रुहं रुवा रुलंकाधुवाकोलायस्तु रुवा ॥ गानं वादनकं वरुं जीर्णं मलिनमवच । उय यूकं रुनादद्यावर्हिकार्थकदाचन ॥ नेवनिर्वायथ दीयं दवाः
 र्थमूयकल्यिर्गं । दीयहर्हं रुवदश्च ४ काष्ठा निर्वोयनारुवगु ॥ ॥ अथनेवद्यानि ॥ दवीयनालादिषु ॥ नेवद्यं रुय रुहं रुदयं दद्या ४ रुहाविर्गं ४ यनमानं १
 यिष्टकं च यावकं रुगवकथा । भादकं पृथुकादीनि कन्दूयवो निचास्तु रुगु ॥ हवि ४ गाल्यादनं दिद्यमाय यूकं सगर्कं न । निवदथ महादये संवो लिच्यं रु
 नानिव ॥ श्रीनादीयधगद्या निमाहिषानिव सर्वे सै ४ कयिल्कं लांगलं चैव द्वाकाकमुकमवच ॥ लांगलं नानिकलं ॥ कचुर्कं रुवाकं कनकं गीरुलं कालं
 कृष्णालं यनसकथा ॥ कनकं दालिमी कालं वदनं वकूलं चमधूकं च नसालामाकनथा । ओदुम्वनं वयूनागं कनू लं कर्कटीरुलं ॥ कनू लं गोठयसिद्धं

१

जाम्बवधि ७ खरु नं वीरुयुनं रुलं ॥ रुं रुं रुं वीनं ॥ हनीरुकीमामलकं षड्विधं नागनंगकं । माहुनं गं वलकं च कदलीकनमदकं ॥ गं गटकं कला
 नं च गाल्कं च मृ लालकं । कूमदानां यं कजालां रुलानि विनिवदथ ॥ कथा वानयिथेथे नेवद्ये लोकां रुल रुलादिहि ४ ॥ रुदले ४ सिगारि म्वलवगी नागनं
 गके ४ ॥ यूरुथ रुगगांधगी सर्वे कामार्थसिद्धय ॥ ॥ अथदवी महात्सवं यूजाविधि ४ ॥ नाऊधर्मदवीयनाला ॥ रुं रुं उवाच ॥ आग्निनस्य सिनेय रु नवम्यां यमि
 वत्सवं । आहुमिन्नाम्यहं नाग उयवासवगादिकं ॥ गृणु गकयव कामियथालं यनिष्टु रुसि । महासिद्धि युदंधनं सर्वे सगु निवहलं ॥ सर्वे लाकायका नार्थ विना
 सादसिष्ट रुष । कर्हं वा द्वालाश्च रु रुतिथे लोकयलके ४ ॥ लाधनार्थे गथावे ल्ये ४ गूडे ४ यूरुसुखाधि हि ४ महावनं महायू लं गक नाथे ननृष्टिर्गं ॥ कर्हं रुं रुन
 नाऊदु दवी रुकि समन्विर्गं ४ कं न्यासं रुन वी गक रुकामां नस्य नदिकं ॥ रुजा वी रुथनकागी नकागी रुथवायूद ४ नदिकं षष्ठी मयकम्य षष्ठादि निधिचु
 रुथ ॥ नियमवकु रुयस्य यथासंख्यमसि समू ल्हाययविल्यक ॥ नन्दाय नि यदमालस्य यथमनं दानिधि कुमका नलाहावा ॥ नियमवकु रुयस्य गङ्गा यकयावि

कल्पना नृको यय रुचि यय ॥ वायुदा वायु रुच ॥ यागं स्त्रायी जिह्वं द्वि कालं मित्रयूज क ॥ रुच हाम स मायू क ॥ कय का रुच यत्सदा ॥ जिह्वं द्वि द ॥ ख वृन्
 द्वि मचिरु ॥ मित्रयूज क ॥ मित्रयूज मित्रयूज मित्रयूज ॥ यूज क ॥ दवी यूजा वन हने क ॥ ग ॥ य ॥ य ॥ ॥ रुच हामो द ॥ गो द व ना को द ॥ गो व न विहि ग त्वा न स दान द्याः
 दिन व म्य न य मि दि न ॥ अरु म्य न व ॥ ग हा नि दान नृ जानि ग रानि च ॥ न कं वा विरु गा व न का न यत्स न स रु म ॥ न स्मिन्द वी यु क र्त्तु या हे मी वा ना रु मी न धा ॥ मृ द्वा
 की ल क ॥ ला य ना य म्य नृ ल व यूज य न ॥ सर्वा य हा न स म्य नृ व नृ व त्त्त रु ला दि हि ॥ का न य द ध द ला दि व लि यूजं च दे वि की ॥ दे वि की रु वि द्या क न य या ना व लि
 रा हि द व स म्य मि नी ॥ यू य म्य द्वा ल वि द्या म् जा नी यू न्ना ग व म्य के ॥ वि वि र्गं च न य त्थू जा म र्म म्य स म्पा स य न ॥ उ य वा स य न्ना ना ध य न ॥ द र्गो य ना रु य न्म नृ
 म क चि न स मा हि न ॥ मं र्द र्गो द व ना क म व न द र्द य मि नी ॥ ग ॥ य वि रु या र्थ नृ या रु म ॥ यं वा र्द ल क ॥ ला य नं ग न्ध धू प स म्पा मि नं ॥ वि धि व त्कालि काली मि रु द्वा
 ख र्ज न द्या न य न ॥ यं वा र्द यं च वा र्मि कं म हि ष म र्ज म र्म वा ॥ न द र्त्त नृ धि नं मी र्गं गृ ही त्वा यू न ना दि य ॥ नि म न र्ग ॥ य दान र्गं म हा को गि क म र्मि नं ॥ यू न ना दि यि द्या दि

८

मिः

गद्य न वि दानि च न की पा य ना रु स्य उ क्ता ॥ च रु र्थे स फ मी ॥ म हा को गि क म र्मा व न्म न ॥ म र्मा य ना नृ य ॥ स्त्रा या च्छु र्गं रु त्वा थ पि रु यं ॥ ख र्ज न द्या न यि त्वा रु द
 द्या र्त्तं दे वि ग र्थ य ॥ म र्मा द द्या नृ य न ॥ वि स र्ज नी य ला य स व लू दी य त्वं च्छं द सं नृ य स्त्रा या न ॥ किं रु त्वा पि रु र्जं ग र्गं रु त्वा ख र्ज न द्या न यि त्वा रु द वि ग
 र्थ य ॥ द द्या द नं र्गं स्त्रा या न ॥ अ र्था र्थे न क म ल या ॥ क मा वा ध्वा न्म र्मा च न क मी न न र्गं रु द्या या द क स्य स्त्रा न द्या चि न त्वा न ना द वीं स य थ न्पा र्क ॥ कान
 स र्पि र्ज ला दि रु ॥ कं क मा रु नृ क यू न च न्द ने म्भ र्थ यू ज य न ॥ अ र्थे अ न लि य ॥ ह मा दि य य न त्वा नि वा सां सै त्व ह मा नि च ॥ ने व र्गं स य रु र्गं च द यं द द्या ॥ र्गः
 सै वि र्ग ॥ द वी रु क्ता म्भ यू र्ज न क य का ॥ य थ मा द य ॥ द्वि रु दी ना नृ या ख ला न न दान न न ना खे थ न ॥ न द रु क्ता न वा य रु म हा व न ध ना म्भ थ ॥ यू ज य रु चि ल
 ष ल य स्मा रु दू प मा मि र्क ॥ न द रु द्वां द वी रु क्ता म हा व न ध ना ॥ कालि का ॥ मा रु र्गं च द वा नां यू ज का र्थ म दानि मि मा रु र्गं वा क्मी मा ह म्भ वी य रु मी नां ॥ ध र्ज रु
 न य ना का दि उ च्छ य च्छि का गृ ह ॥ च र्जि का द र्गो ॥ न य या र्गं व लि क य य द्वा द न वा क्ता ॥ का न य रु र्थ न य न द वी य रु नि या न र्ग ॥ प लि क य य द्वा द न

श्रुत्वा उक्तं ह यत्र मानसं गच्छति तत्र गच्छति ॥ अथ यथादिष्टं विधानं ॥ कालिकायुना ॥ वाधयद्विद्वत्पुत्रायां प्रस्थापयितुं ॥ सप्तम्यां
वित्तं गच्छन्मांसादहं यमियुक्तं ॥ पुनश्च पुनश्च नृणां विनाशाय समाचरन् ॥ जगन्त्रयं कुर्याद्वलिदानं महानिधि ॥ यद्वत्तं वलिदानं नृणां वसां
विधिवच्चरन् ॥ अथ द्वादशैव दूर्गा मन्त्रं युक्तं ॥ विसर्जनं द्वादशैव कुर्यात्सावनात्सर्वेषां कृत्वा विसर्जनं नृणां नृणां नृणां समाचरन् ॥ ग
वतोत्सवेऽष्टैव वाचि नवमरावा कर्दमालयादिभिः ॥ कर्दमं कालिकायुना ॥ अथ द्वादशैव कुर्यात्सावनात्सर्वेषां कृत्वा विसर्जनं नृणां नृणां समाचरन् ॥ ग
म्यां गवतां सर्वेषां ॥ गवतं कीर्तयन् ॥ वालिनीं कुर्यात् ॥ कुमात्रीं कुर्यात् ॥ चैत्र्यां कुर्यात् ॥ केसव्यां कुर्यात् ॥ गंखूर्यनिनादेभ्यः ॥ यद्वत्तं वलिदानं नृणां वसां
वित्तं गच्छन्मांसादहं यमियुक्तं ॥ पुनश्च पुनश्च नृणां विनाशाय समाचरन् ॥ जगन्त्रयं कुर्याद्वलिदानं महानिधि ॥ यद्वत्तं वलिदानं नृणां वसां
विधिवच्चरन् ॥ अथ द्वादशैव दूर्गा मन्त्रं युक्तं ॥ विसर्जनं द्वादशैव कुर्यात्सावनात्सर्वेषां कृत्वा विसर्जनं नृणां नृणां समाचरन् ॥ ग
वतोत्सवेऽष्टैव वाचि नवमरावा कर्दमालयादिभिः ॥ कर्दमं कालिकायुना ॥ अथ द्वादशैव कुर्यात्सावनात्सर्वेषां कृत्वा विसर्जनं नृणां नृणां समाचरन् ॥ ग
म्यां गवतां सर्वेषां ॥ गवतं कीर्तयन् ॥ वालिनीं कुर्यात् ॥ कुमात्रीं कुर्यात् ॥ चैत्र्यां कुर्यात् ॥ केसव्यां कुर्यात् ॥ गंखूर्यनिनादेभ्यः ॥ यद्वत्तं वलिदानं नृणां वसां
वित्तं गच्छन्मांसादहं यमियुक्तं ॥ पुनश्च पुनश्च नृणां विनाशाय समाचरन् ॥ जगन्त्रयं कुर्याद्वलिदानं महानिधि ॥ यद्वत्तं वलिदानं नृणां वसां
विधिवच्चरन् ॥ अथ द्वादशैव दूर्गा मन्त्रं युक्तं ॥ विसर्जनं द्वादशैव कुर्यात्सावनात्सर्वेषां कृत्वा विसर्जनं नृणां नृणां समाचरन् ॥ ग
वतोत्सवेऽष्टैव वाचि नवमरावा कर्दमालयादिभिः ॥ कर्दमं कालिकायुना ॥ अथ द्वादशैव कुर्यात्सावनात्सर्वेषां कृत्वा विसर्जनं नृणां नृणां समाचरन् ॥ ग
म्यां गवतां सर्वेषां ॥ गवतं कीर्तयन् ॥ वालिनीं कुर्यात् ॥ कुमात्रीं कुर्यात् ॥ चैत्र्यां कुर्यात् ॥ केसव्यां कुर्यात् ॥ गंखूर्यनिनादेभ्यः ॥ यद्वत्तं वलिदानं नृणां वसां

लथा। गयधमयदगमयनिकायुजनीयाश्रुष्ट्यां नाशिया। गहननियमविधौ यरूकर्मयदिष्टं। नानाजीवारिद्यानतिथिरयिनवमीयोददृष्टिय
दिष्टासायगीवेष्टुवान्कृमविहिमविधिः यषयलान्दगम्यां॥ तथा॥ मूलंयाययधमचन। लयचनं चलिकायाः ४ कृत्वा कृम्यामगननहिमल्यकनिड
म्ययुजा। याम४ कालयशुवलिविधिः ४ स्नानदानं नवम्यां निर्मोखं कुशवलादगमीवासवर्कषूज्यान्॥ कात्यायन४॥ मूलंनयमियुजयरूगवमीचलीय
वलाकृमिंवाकृम्यामयवाससंगमगयाकृत्वा समाजाधयन्। नानायागवमकृमांसूधिनैः ४ कृत्वा नवम्यां वलिं नैः कृम्यं वलां निधिं च दगमीं संपाद्य स
यषयन्॥ आनि४ गम्य॥ मकृगयचमूलादोसयम्यामाधिनसिन्। चलिकामयहाने म्ययुजयडाकृवृद्धय॥ कुर्यात्तागनमकृम्यां नवम्यां विधिवद्वलिं
। दगम्यां वलवृद्धयर्थं कुर्यान्नीजाजनं नृप४॥ मूलनवाधयद्वीं यूर्ध्वे लयमियुजयन्। उरुनं नार्चनं कृत्वा यवलेन विसर्जयन्॥ ॥ अथनकृगवला
वलं॥ गम्यकृचिलिथिकल्य४॥ कृचिनकृगंकल्यउकृम्याः ४ सनिर्सरुवथागनवादनलीय४ कृलाधिकार्ये४॥ कवलनिधिनकृग्यामुनिधिनादनलीय

ननकुरुं नि ॥ ४४ ॥ या धान्या गृह्यदाह आ नि ॥ ४५ ॥ भुगर्ग ॥ निधि ॥ गनी नं निधि नवका नर्ण निधि ॥ यधार्न निधि नवसा धर्न ॥ निधि चिना नेव च दृग्ध न गगी विनः
द्वना नेव च कर्म सिद्धि ॥ ४६ ॥ सुवि स च्छि ॥ निधि ॥ गनी नं द वस्य नि ॥ ४७ ॥ न कुरु मा गि र्ण ॥ गस्मा रिधि न कुरु न निधि चिना ॥ ४८ ॥ द वला प्याह ॥ निधि न कुरु था र्था ग
द्वथा न वानु पालनं ॥ था ग रा व निधि या द्या ॥ द्या ॥ ४९ ॥ न कर्म लि ॥ ५० ॥ लिंग पु ना ॥ ५१ ॥ मूला रा व रु स प र्था ॥ ५२ ॥ ग मा न न म च्छि का ॥ आ वा द्य रु वि धान न न गृह म
॥ ५३ ॥ य पू रु थ ग ॥ ५४ ॥ नी रु नि व ॥ ५५ ॥ अ स्था न कुरु य का र्था य र्था वि त्वा रि म नु र्ण ॥ स प र्था मूल य का र्था य रि का या ॥ ५६ ॥ य व ग र्ण ॥ ५७ ॥ पू र्वा या दानि ना स र्था द वी पूः
॥ ५८ ॥ या य र्ण ॥ ५९ ॥ उ रु न र्ण न र्मा च व लि रि ॥ ६० ॥ य पू रु थ च्छि वा ॥ ६१ ॥ य व र्ण न र्मा च य रि य र्था वि स र्ज थ ग ॥ मूला रा व रु स प र्था क व ला र्था य व ग थ ग ॥ ६२ ॥ ग थः
नि धि न य थ व मृ कृ षू रु रु ला च्छ य ॥ ६३ ॥ रु ला च्छ य ॥ ६४ ॥ रु ला नि ग य ॥ ६५ ॥ य छी च स प र्मा चै व अ रु मी य दि वा य न ॥ ६६ ॥ ग र्म स पा थ ग मूल न ग य गी पु व ग थ ग ॥ ६७ ॥ क व
ल मूल व च न म र्था वा द मा र्ग ॥ ६८ ॥ ग थ च रु वि ष्य पु ना ॥ ६९ ॥ न कुरु य न र्मा मूल क न्या र्था वि ना ग थ ॥ स र्वा य य गे म नी म ह नी न व मी रु ना ॥ ७० ॥ ग थ्या स्ना नं रु थाः

हमा दानं वा क्रयमुच्यते ॥ यत्नीयवर्गानविसर्जनं च कदाचित् कलानुनाधनापि नाशेन कर्तव्यं ॥ यदाह ॥ यत्किंविद्विर्जनं नाशे यवगम्या कनामियशम
स्यानाश्याविनाशं स्यादाज्ञाचविकलारुवम् ॥ सकथागानुनाधननाशे यत्नीयवर्गानविसर्जनं वाचनयुक्तं सनाशुः सविनश्यति ॥ यवलाभविद्विर्जन
मित्यादि वचनानुनाधननाशे विद्विर्जनं न कर्तव्यं ॥ यदाह ॥ अक्रयादानि गम्यानां यवलाभस्य यदाह वम् ॥ नदादद्यात्समूहं न दगम्यादिनरागमः
॥ समूहं न संयच्छं संयच्छिनादिगमं समूहं कृत्वा निरुल्लननिदिष्टं ॥ ॥ अथ किं विद्विधं वस्तु ॥ गम्याद्यन्यगुणयुक्ता यवा सवमादोसकमीषष्टी
मित्यादि दद्यात्समूहानि किं यमविधिवाक्यवलां गथापि षष्ठीदिनयुक्तौ कालसकमीलारुपियसिकासक्यदयगमिन्वापादयावस्तुनश्च यानि नि
यमविधिवाक्यवलां ॥ स्मृत्यं न वचनान्त्रयथावविद्विधं भूतं न गम्यते वा ॥ अष्टम्या नवमीयुक्ता नवम्या वा षष्ठीयुक्ता ॥ अर्धे नानीधनयाया मि
थिः स चैवमादिषु ॥ गम्ये स्मृतिवधि ॥ नकादगम्य षष्ठीयुक्ता यो लूमासी चतुर्दशी ॥ अमावास्या कृत्वा याचता उथाकाः ४ यनाशिताः ॥ अर्धे दयवा ॥ षष्ठीका

दस्येमावास्या पूर्वो विद्वन्मथस्मि । सप्तमी यत्र विद्वाच न यूजा निधिये चर्क ॥ श्रीमयनाक्रमः ॥ नदिवा ननिगापिच विद्धि हगानवस्यमिगल्यसभाय
 हगा यदिवास्ममी गायरुवानवमी श्रमनेन पियूजमाकथिमा ॥ अथार्थः ॥ यदि निधिद्वेधः स्ममी गायरुवानवमी गदास्ममी दवेन पियूजमर्
 रुवेन ॥ यनादिवा निगापि विद्धि हगानवमि सप्तमी सत्याय हगाचसानरुवेमी निदुर्गात्सवाधिकात्रकाजनाजः ॥ उमायानवमीथाकाहनस्य
 निधिचस्ममी । द्यथावेकमहायूष्मा उमामाह स्वमी निधिः ॥ लूंदयूना ॥ नवमी सहसंयूकामस्ममी कानयद्रुवं । दूर्गादवी गथायूष्मा पूर्वविः
 दानकात्रयन ॥ दवीयूना ॥ नवमी संयूगाकार्योसदा दूर्गास्ममी वृक्षे ॥ सप्तमी सहिनाहनि पूर्वयूष्मा रुलं केम ॥ गदवं सप्तमी गल्लाय हगाह
 मीत्याकावसीयन ॥ गथापि ॥ अग्निनस्य सिनयक या उद्याहिधिचस्ममी । गस्यां नागो यूजनीया महाविरुव विस्ने ॥ अथवमादिवचनसाफायाः
 नागि यूजायामस्यथानागि आग नवादनवीयः ॥ नक्रवगयसर्वे नानिथागविगिथन । कर्मल्लयस्य यः कालः कालायापिनी निधिः ॥ गथा

१२

कर्मलि कूर्वीरुद्रासवृद्धि नकात्रलमिनि वचनानुसामान्यवचनस्य बाधकं विना संकाशमाना रावागूयग्मविधिवाक्शानां दिवागन यूजा विषयद्वना
 पयः ॥ ॥ अथ गक्रुक्षे कदिनापि यूजा विधानं ॥ दवीयूना ॥ निष्कलं सकलं वापि न कंयं चकं भववा । यूजयं रुद्रकया रुद्रकं यूजानलं यथ
 न ॥ निष्कलं चन्द्रकलागूय निधिचमावास्या सकलं चन्द्रकला सहिना निधिः ॥ यूलिमा न कंयं चर्कं विदकं दिनं ॥ यं चकं यत्किं चिदिनयं चकं कया
 रुद्रवा विजिहासः ॥ कर्ण यूजानलं यथदिनि कर्ण दवी महात्सवं वायू यूजानलं यथ नागिकामदिहार्थः ॥ गथाचकालिकायूना ॥ रुगवानुः
 दात्र ॥ यामाहा दथवानस्या दवी दूर्गामहात्सवं । न यूजय निदक्राद्वा दद्याद्वा यथैव ॥ रुद्रारुगवगी गस्य कामानिष्ठा निहन्निवै । यनरुव
 महामाया वलिहत्वा सजायन ॥ रुद्रात्वा कहिनाथसर्वलाक विद्धमथ । इगोनकुलमकुल यूजिनय उरुमूयि ॥ रुद्रकालीचायचं श्रीमहा
 मायामहात्सवं ॥ ॥ अथपि यदियजमानस्य यनायगानि कलगस्य यनविधिः ॥ मस्ययूना ॥ पायुरुनल गस्माच्च दधकनसंमन्त्रि

नं। चू न पल्लव संकुं रूल वस्तु युगा विनं ॥ यं व न न समा यूकं पंचरुं गदलानि चू नाश्वत्थ वट यक्षा दम्ब नाका पल्लवानि ॥ स्थापय
 दकुलं कुं व नू लं ग न विनो स न्। गंगा द्या ४ स चि न् ४ स वा ४ स मुं दं श्व स नां सिवा ॥ गंगा श्व न थ्मा वली क संग मा द्दु द ला कला न् ॥ मृ द मानी य विथ न्द स वी ष धि रु
 लानि नां ॥ स्नानार्थं विनो स न् य रु मान स ध मे वि न्। सर्व समुदा ४ स चि न् ४ स नां सि व न दा रु दा ४ ॥ मृ यां रु य रु मान स्य द्नि न रु य का न का ४ ॥ रु विथ ॥
 गा काम मृ ल्य स ल म्य क् द ग वृ द्धि क नं गुरुं। कां व नं द्यं ग ल धू मान् द्वा नां व न या सह ॥ व द्म पू जा क ल गं ग थ द्वा नां स व य क न ला य रु य जा यां कालिका
 पुनालं ॥ अग्नि वे द्म रु वानी च ग रु व का म हा न ग ४ स्त न्दा रा नू मा रु ग ला दि क्ता ला श्व न व य हा ४ ॥ न षां द्य ट पू य ह्य कं पू रु यित्वा य थ वि धि ४ मू र्ति य
 वि रु म वे कं द द्या द स्य ४ स मा हि न ४ ॥ ॥ अथ स्व स्था य न वि धि ४ ॥ मार्क ॥ उ य पु ना ला ॥ ग स्मा त्म मे ग त्मा हा त्मं य ि न वं स मा हि न ४ ॥ अ न वं स दारु क्ताः
 य नं स्व स्था य लं म ह न् ॥ अग्नि ४ ग ४ मा हा त्मं रु ग व र्ण व पु ना ला दि षू की रु नं। य १० च गृ ष्ण या द्या पि सर्वे काम स मृ द्य य ॥ व द स्व स्था य न म पि का य ॥ ग थ व

१३

३३

लय द्वा नी ग ४ ॥ व द्या सा य वा धा नि पु न्ना थ्य च रु रु यं। ग ४ स्व स्था य न ग द्वा नां का मां श्व वि न्द नि ॥ ॥ अथ द वी मा हा त्म की रु न व व रु लं ॥ मार्क
 ॥ उ य पु ना ला ॥ द द्य वा च ॥ न रु रु वे श्व मा नि रु स्ना थ नं य ४ स मा हि न ४ ग स्मा हं स क लां वा धां ग म यि श्वा म्य स ग यं ॥ म धू के ट रु ना ग ४ म हि वा स न द्यां ग नं
 । की रु शि श्वां नि थ ग द्द द धं गुरु नि गुरु था ४ ॥ अ रु म्मां च रु द्वा नां व म्मां वे क व न स ४ ॥ अ र्थां नि वे व थ रु क्ता म म मा हा त्म मू रु मं ॥ न न वीं द रु र्ग किं वि द्द रु
 ना त्क न वा य द ४ रु वि थ नि न दा नि द्यं न वे व रु वि था रु नं ॥ ग गु ना न रु यं ग स्य द्वा नां वा न ना रु न ४ ॥ न ग स्ना न ल ना थो द्या क्ता दा वि रु रु वि थ नि ॥ उ य स ग्नां न ग र्थ
 शु म हा मा नी स मू रु वा न्। ग थ शि वि ध मू त्या गं मा हा त्मं ग म य न्म म ॥ यं गे ग ल्य श्व न स म्मा द्दि त्वा मा य न न म म। स दान ग द्दि मा श्वा मि सा नि धां ग रु म रु निं ॥ ग न काल
 म हा पू जा किय न या च वां षि का। ग स्मां म मे ग त्मा हा त्मं गु त्वा रु कि स म चि न ४ ॥ सर्व वा धा वि नि र्मु क्ता ध न धा न्य रु ना चि न ४ म नू श्वा म ल्य सा द न रु वि थ नि न स ग य
 ४ ॥ गु त्वा म मे ग त्मा हा त्मं ग थ वा त्म रु य ४ ३ रा ४ य ना रु म व य द्द षू जा य न नि रु य ४ पु मा न् ॥ नि य व ४ सं रु यं या नि क त्वा नं वा य य द्वा न्। न द न च रु लं पुं सां मा हा त्मं

ममश्रुत्वेनां॥उपसर्गोभवेत्यानिग्रहयोगश्चदानुष्ठापः॥दृष्टं सख्यं मय जायते॥संख्या गुरुदत्तं नृणां मेही कनका मरुमं॥दृष्टं नाना मण्यार्ण
 वलहानिकर्तयनं॥नक्रुद्धं गणितावानां॥० नादवनागर्न॥सर्वे ममेतत्ताहात्म्यं ममसाविधिकानर्कं॥यद्युपस्थाप्येधुयेभ्यगन्धदीपैस्तथाहमेष्टविद्याणां
 हाउनेहोमेष्टयुक्तीयेनहर्निर्गं॥अथैवविदित्वेहोमेष्टयदानेष्टेनलया॥योनिरमेक्षियनसास्मिन्सकलसुचनितयुक्तं॥युक्तं हननियायानिगथात्रार्थय
 क्कनि॥नक्रांकनागिद्धगथाऊमनांकीरुनेमम॥युद्धयुवनिर्गंरुम्भदृष्टदेत्यनिवहर्लं॥गच्छिद्धुमेवेतिहर्गंरुयंयुंसांनजायते॥यस्याहिरुगथायाभ्या
 भवत्तापिरिष्टकृताष्टवक्रुणाचक्रुणास्तुप्रयच्छंतिशुभंमर्ति॥सर्ववाधासुधावासुवदनात्यदितापिवा॥सुननमेनञ्जिर्गंनयामुञ्जगर्तकटागु॥ममय
 हावात्सिंहाद्यादस्यवावेतिहोमेष्टय॥द्वनादवपनायैकस्मन्नगन्धविर्गंमम॥गथाचदवाउचु॥यस्यमर्त्यसुवेनरिह्यास्तुमलानन॥गस्यविरुद्धिविरुद्धे
 द्वेनयानादिसम्यदा॥वृद्धयस्तुयसन्नात्वंरुवत्तसर्वेदाधिक॥गथास्तुगार्सपूजितापुष्टीद्वयगन्धादिरिह्या॥ददामि विहंयुगांभ्यमनिन्धमेनथाशुर्गं॥॥

१४

अथद्विगीयादिप्रवक्तादियुक्ता॥गुरुभालिहर्गं॥अथयुक्तिशुक्लयकनित्योद्विगीयादिसफनार्कं॥गुरुदिवाकनकिनलोचनस्यहावाजिनावञ्छा॥गथाशु
 क्कहनिमृद्धुयश्चापनिष्टसपूनादिगुहा॥कृमर्मगतसंस्तानावाहानुभालायवगथन॥गिनसिक्तपयद्वंनवर्नयुक्तयत्तदा॥गथानानाखाद्यनिवद्यानि
 प्रवक्तयनिवदयन॥वक्रुपूना॥अथयुक्तशुक्लयककुल्लानिथालासुल्लारुन॥पूर्वमुष्टेष्टयवानामयधर्मस्येमावहर्गु॥गस्तात्तात्वेष्टयनस्तुगुपूक्षाः
 सोयद्धयासदा॥युक्तीयांभुक्तनगान्नवमीयावदवदि॥गानिस्वस्त्ययनकार्येगदागुर्मादिनदिन॥धार्म्यरुत्तागर्ककुर्द्धवर्वांसिद्वार्थकांस्तथा॥यंवर्गल
 सुगुल्लगर्माकल्लनित्याऊथन॥वायवेवोत्तुलेष्टोर्मेष्टसवेष्टुवेष्टवेष्टवेस्तथा॥गन्धेहामाकायोदिनदिन॥उन्नययकलीयाभ्ययन्नयेष्टगम्भ
 यालिरिष्टानवगाश्चाष्टविरुद्धनववाक्कांर्थचन॥वायवेवित्यादिवद्धवचनगुवत्तात्कथिंरुलयाथनगिरिभिरिवोयद्यादिमन्त्रेष्टेष्टेष्टोमष्टकलेष्टा
 ॥भालिहर्गविनिहिममन्त्रेप्रयिहामष्टकार्य॥॥अथगुरुपूजा॥वक्रुपूना॥अथाथागपूनागुरुगजाभ्योमहावलाष्टयथिवीमहवन्नूर्ध्वसंगेलः

वनकाननी॥ कर्मदेवावत॥ यमः ४ पुण्यदत्ताथवामनः ४ सुयमीकांचनानीलसुखाकर्मयूजयन्॥ गीकादृक्तात्तमानवद्यनवद्योर्नवयूजवन्॥ अग्निः ४ ग
 शुक्रयूजामंग॥ पालुवावसुवाचूडा आदित्यासुमनूज॥ ४ रुक्मिणं नरुनालसुमयः ४ यनियात्यर्ग॥ अवायूहिजयंरुद्रसुमयस्वलिनावज॥ यीलुः
 सामाद्वर्लरुद्ररुद्रयूजानिलान॥ ४ यैमना ऊयाचूडा अग्निदवात्यनंदनान्॥ यद्वनरुद्रनागसुखी दिगम्यसहदेवने॥ अग्निनीसहमंभवे
 ४ यौतुर्लसुद्ररुद्र॥ ॥ अथषष्ठावित्वातिमकुर्ल॥ गदृकं कालिकायुजा॥ वाधयद्वित्वाग्नखायां षष्ठादवीरुलषूच॥ गथा अग्नीयां वसुमः
 यत्रोसुलनयनियूजयन्॥ पूर्वोहनास्यामयत्रोवत्तनं विसर्जयन्॥ लोकमनिवन्ध॥ अग्निनरुद्रयूजायां षष्ठं वित्वा रिमकुर्ल॥ रुविश्व॥ षष्ठां वि
 त्वाग्नीवाधं सायं सन्धासुकाययन्॥ ॥ अथसप्तम्यां पतिकायवगं विधिं॥ अग्निः ४ गं ॥ अग्निनस्यगिनयकं सुमूकुरुनसयमी॥ गथां वयनिकायूजा
 कुरुशानवनायके॥ यसं सुरुलोवित्वाग्नीखासाहययूजयन्॥ यूजयद्वित्वाग्नीखायामव आहवतकर्मनयानस्याउयस्त्रिः ४ २ गीयूजाउवित्वाग्नीखायां

१३

वित्वा यमयूजयदिनि आदिवाक्का नानु वित्वा वित्वाग्नीखायामिनि निवन्धयाख्यानां अनाहनायाः ४ यूजानुययलुनाहवमयिसयस्यामवकार्यका
 लान्नयस्यानुयदमां॥ गिष्ठा ४ ० नि कदली दकिमीधनं ह विडा मानकं कचू॥ वित्वाग्नीकाययनी व विरुयानवयनिका॥ वक्ताली कदली काले दकि
 मवक्रवलि का॥ धात्रे लक्ष्मी ह विडायां दूर्गमानकयक॥ चामुन्दा कालिका कथां गिवा वित्वा यनिल्लिगा॥ अग्नि कग्नि कवहि ना ऊयं र्था कालिकी छिगा
 ॥ वित्वाग्नीखा सहवक्रादि सहनवयनिका ४ समावा ना दय ना जिनालगावद्धा ४ स्नाययित्वा यवगं यन् वित्वाग्नीखा सह मृन्मययनिमायवगं नयूजनः
 वाकं दवीयुना॥ ॥ गस्मिन् दवीयकुरु आहमीवा नाऊगी गथा॥ मृदा क्रीनक्रुणायगा वित्वाग्नीखा वयूजयदिनि॥ ॥ अथ महासमी कर्त्य॥ गगाग्निनशु
 क्लाधिका यवक्रयुना॥ वक्ता वाच॥ गगाग्नी रुद्रकाली रुद्रयूज विना सिनी॥ यादुरुता महाधाला यागिनी काटि रिः ४ सह॥ अगर्थयूजनी यासा गस्मि
 न्नहनिमानवै॥ उथा विने व्रुधूय मात्यनानुलेयने॥ दीयेने वसुधा रुद्र ४ रुले मूलं म्यधायके॥ अमिषे चि वित्वाग्नीका ४ हा मे वाक्का ययलो॥

विल्वपत्रेऽशीरुले मधुन न च न च ॥ यमुनिऽयानके द्वाये नाजिजागवलेन च । इर्गो गृहगुगुला नि पूजनीयानि यलिनेऽ॥ वाद्यरात्रिनिचिद्वानि
 कवचायायुधानि च । नाको च गिलिहिरिस्तानि खानि पूज्यानि सर्वदा ॥ दवीयुना ॥ कं आरुतु न वा विषयुक्ता स्यायुयुक्तयुक्ता । सायवाभानि गार्धु मदा
 विरुवविस्तनेऽ॥ पूजां समालरुदद्या न कुरुवा नूयिवा । यमुद्यामयकले आंगवलाजवधस्तथा ॥ वलि कर्षं सूनभानां कृत्वा सर्वानि गन्तव्य ॥ १३
 आश्विने वा नूले गमरिषजि यमुनरुगवलाजवधनिचिक् ॥ गवनामहिषऽसूनभानामिन्द्रादिलाकयालानां ॥ पुनर्दवीयुना ॥ कथासंस्तुतवो वस्तु
 क्ता स्यायुयुक्तयुक्ता । सायवाभानि गार्धु मदा विरुवविस्तनेऽ॥ पूजां समालरुदद्या न कुरुवा निरुयिवा । यलायानऽयकले आंगवलाजवधस्तथा ॥ वलिः
 कृपयुनकायऽकार्यऽसर्वो निगन्तव्य । न कुरु मूलन कुरुवा निरुयुक्तयुक्ता ॥ कालिकायुना ॥ कथासंस्तुतवो विषयायुक्ता निधिनश्चमी । गस्यां नको
 पूजिगया महा विरुवविस्तनेऽ॥ नर्दयां वलिदानं कुरु कुरुयं वे यथाविधि ॥ कथं हर्षव विधिवत्कुर्यात् कुरु विरुगय ॥ उक्तं वदवीयुना ॥ माहृत्तवेवद

१३

वीनां पूजाकार्योक्तानि ॥ ॥ महासमी महानवथाऽकृत्यस्तुचनं ॥ दवीयुना ॥ प्रवक्ष्यामि ॥ हकथा न महावीयसूनासूनरुयंकन । दद्याउयास
 कादवाऽयुक्तगाना कृतास्तथा ॥ आगता आगिर्गद्व्या महि र्वर्गसुदुर्जय । वक्तु विष्णु सूनभानां नूदवन्दयमानिलां ॥ आदिद्या वसेवा नूदा यहा
 नागऽसूयुक्ता ॥ समस्त सर्वदेवास्तु दवीरुक्ता यमुक्तवृ ॥ वनं च सर्वलोकाणां पुददीरुयनागिनी । वलिंददम्यरुगानां महिषाजामिषचन ॥
 यलादुऽगं खरुयं च गमयथ सहस्रगऽहमाह न्दहिनादां म्य पदगद्वाऽसमर्द्धना ॥ यमाकाधजसंस्तुतं यं वा मनःगारिर्ग । नदिर्नकानया
 मासु दवीरुक्ताऽसूना रुमा ॥ न गस्मिंश्चदिनवत्स मांगम । कृत्वा च सर्वदेवैश्च महापूजा च गन्तव्यी ॥ आश्विनमासि मवान्न महिषाभिः
 निवर्हिणी । दवीं संपूजयित्वा य अर्द्धनाशुमीयुव ॥ आगयं नियमूरुक्ता नरुर्वेति महावला ॥ वलिं च ययय च्छेति सर्वरुग विनागर्न ॥ गस्यां नः
 उद्यमदवीया वत्कल्युक्तगानं ॥ सर्वरुग विनागर्नं सर्वो लिङ्गानि विहिम महिषमयादीनि विनाशयन् ॥ यस्मिन् च लो न मिह्यर्थऽ॥ कोऽं निवि

धेहागे देवलाक सुदलेर। नाधयाथाधयस्तथा नच गकरुयं रुवगु॥ नचदवगुहादेहा नासुवानचयनगुहायीरुयं गिसुना अरु दवीयादोस
 माकिता न॥ यावद्वो यवा कार्गं ऊर्लवक्रिगगियहागनावचवलि कायूजारुविश्वं गिसुदाउवि॥ यावत्कालविगयल आग्विनशुद्धमीष
 व। महागंधानवर्थाय लाकेव्यामिंरुविश्वसि॥ यावत्कालं निमासचकुद्धयात्मकवर्थाकालाहियायल॥ नगुरुदवना ऊर्ल स्वर्गवास
 लेयदं। यनायनविरागल कियार्थां गं नकोलिं॥ ॥ अथमहाहमीमहानवस्था नेवदुर्गविधिः॥ गित्यिगमः॥ नवयद्यात्मकं नयू
 द्वा दृष्टोऽस्त्वसूक्तिः॥ आदोम (अथ) न्द्रादो नवगत्वा कर्त्तुं कामा॥ अस्मादगुत्तं कान् यी नवकल्लान्हा। मुद्देर्गुत्तं कंघ्यलामादुर्गं नर्त्तनी
 धन॥ अर्त्तं उमन्तुं दार्गं विजुगीवायक न॥ गकिमुहले पूलं च वरं यममर्थां कर्गं॥ गनं चर्गं गला कान् च नमं वायुधेयना॥ गमाऽश्वा उग
 रुलाभ्यं नर्त्तनी उमन्तुं धिना॥ नूदवन्दाय न॥ च व॥ अथ व॥ नायिका। च॥ अथ व॥ वनीयेव च॥ नूया गित्यिगमः॥ नवमीर्थां गनाम॥ अमः

११

अस्त्वयकीर्तिना॥ नावनां कानूलाकृष्णा नीला उक्ता च धूमिका। यीगचया उल्लेखका अलीहस्तहनिस्त्रिणा॥ महिषाथ महानुगन्त्री गत्वा च यहमूष्टि
 का। अस्त्वावृत्तयं क्त्वा वा॥ अर्त्तं कं दयामले॥ महिषाथ महामाय वा मू॥ मू॥ मालिनि। उग्रमावाय विजयं दहिदविनमः॥ दृष्टं दहिअ॥ द
 हिरुं गंरु गवनिदहिम। यगन्धहिधनं दहि सुवोक्ता मान्ययक्तम॥ आदोयथ मगधय मध्वलिना उयच॥ अस्मादगुत्तं कान् यी नवकल्लान्हा। मुद्देर्गुत्तं कंघ्यलामादुर्गं नर्त्तनी
 गवलिनामुष्ठा उमन्तुं दार्गं विजुगीवायक न॥ गकिमुहले पूलं च वरं यममर्थां कर्गं॥ गनं चर्गं गला कान् च नमं वायुधेयना॥ गमाऽश्वा उग
 यसिद्धः॥ अलीहधन॥ अर्त्तं कं दयामले॥ महिषाथ महामाय वा मू॥ मू॥ मालिनि। उग्रमावाय विजयं दहिदविनमः॥ दृष्टं दहिअ॥ द
 दर्गनीयः॥ गत्वा च यहमूष्टि का गदीयमुद्देक कर्गं धमूष्टिः॥ अस्त्वावृत्तयं क्त्वा वा॥ अर्त्तं कं दयामले॥ महिषाथ महामाय वा मू॥ मू॥ मालिनि। उग्रमावाय विजयं दहिदविनमः॥ दृष्टं दहिअ॥ द
 मंगलायूजाविधिः॥ दवीयूना॥ मंगलानन्दिनी रुडा लक्ष्मीः॥ कीर्तियंगलिनी। यष्टिर्मधा गित्याधी यमाऽश्वा उग यधूमिः॥ अना न्दावसूनन्दावद

[illegible]

नसा मल्लानि विन गयाना रिनां जनचय यकोषव अहिहवाहिलो ॥ नकनगामहामाया यूका दगवा दूरि ॥ अरुमां न धिने मां से मेहा मां से ॥ १ ॥
 म्भिरि ॥ पूरुय दूरुजा नीये वेलिरि र्नां जने ॥ गिवां । सिंदूने ॥ यदु वा से नाना विध विलेखने ॥ पूरुये न न क जां नीये ॥ रुले व दूरु विलेखने ॥ पूरुयित्वा
 महा रुमां न वं गी वलिरि रुथा ॥ विरु जेय दूरु गीमां रु य व ल ग म व न स वे ॥ उय वारं महा रुमां पूरु वान्न समाचन ॥ यथा गेथे व पूजात्मा यमी द वीयः
 पूरुय न ॥ ॥ अरुय द ग रु जा पूजा ॥ अरुय द वा द ग रु रुं पूरु वी क रु विचि न य ॥ यथ्य माना य ह ले न ग न द मा य म्भ रु ॥ अरु हिय न म ग नि सानि
 ध मिह क ल्य य ॥ पूजा रु गं गृहा ल्य र्दू र्गे द विन मा रु न ॥ दू र्गे दू र्गे हा ग रु ग ले ॥ य वि क ये ॥ १ ॥ पूजा रु गं गृहा ल्य र्दू र्गे द विन मा रु न ॥ नाना यः
 ल्ये वि न रु ह ल्या व लिका ये रु धी म हि ॥ ल य ग म रु ग य ग्ना रु न व ली य वा द या न ॥ द ल्या खान म न ने व दू र्गे ग रु ल वे य न ॥ अरु व रु न म रु ल यार्थ
 दी न य धा रु ग ॥ विरु न दू य वा नां य पूरु वी क रु व रु न व ॥ दू र्गे ग रु ल म रु ल द द्या र्थ ग नि पूरु य न ॥ दू र्गे ग रु न न रु द र्य पू न दू र्गे ग रु न न रु ॥ गि र्वा क व

वनगवि वाक्पदादंभ्यर्चयन्नि॥ वादिपंचाङ्गने॥ गाय॥ पूजयत्कमग॥ सुधी॥ पूर्वलागमललस्य दद्या॥ गङ्गीभ्यपूजयन्॥ उयच॥ अयच॥ अच
व॥ अर्चयन्नेनायिका॥ व॥ अ॥ च॥ व॥ गी॥ वे॥ व॥ न॥ उ॥ नृपा॥ च॥ व॥ उ॥ का॥ दद्या॥ मु॥ क॥ न॥ ग॥ द्या॥ नि॥ वा॥ ह॥ न॥ ॥ पंचाननं कामसुखं च देहम॥ यच
पूजयन्॥ ज॥ ह्वा॥ शु॥ त्वा॥ वे॥ लि॥ दद्या॥ न॥ म॥ स्त्र॥ त्या॥ व॥ गु॥ ष्ठ॥ च॥ ॥ या॥ नि॥ म॥ दा॥ य॥ द॥ भ्य॥ थ॥ नि॥ मो॥ त्वा॥ दि॥ गि॥ गू॥ लि॥ न॥ ॥ व॥ ॥ भ्य॥ र्थे॥ न॥ म॥ ॥ नि॥ नि॥ क्रि॥ श्य॥ व॥ दि॥ स॥ र्ज॥ य॥ न॥ ॥
न॥ थ॥ उ॥ य॥ व॥ अ॥ दि॥ का॥ य॥ अ॥ आ॥ गि॥ श्या॥ क्षो॥ न॥ थ॥ गु॥ रा॥ ॥ या॥ गि॥ नी॥ भ्य॥ च॥ उ॥ ॥ ष॥ ष्ठि॥ न॥ थ॥ वे॥ का॥ ठि॥ या॥ गि॥ नी॥ ॥ न॥ व॥ द॥ र्गा॥ स्त॥ थ॥ ल्य॥ च॥ दद्या॥ ॥ स॥ नि॥ हि॥ गा॥ ॥ गु॥ रा॥ ॥
॥ ऊ॥ य॥ त्या॥ द्या॥ र्ग॥ ध॥ य॥ ष्ठे॥ स्मा॥ दद्या॥ म॥ स्त्र॥ त्या॥ य॥ न॥ ॥ दद्या॥ ॥ ग॥ ग॥ गि॥ वा॥ स्त्रा॥ नि॥ ह॥ ष॥ ला॥ नि॥ क॥ ये॥ व॥ च॥ ॥ अ॥ ग॥ य॥ ह्यं॥ ग॥ य॥ का॥ नि॥ वा॥ ह॥ न॥ सि॥ ह॥ म॥ व॥ च॥ ॥ म॥ हि॥ वा॥ स॥ न॥
म॥ दि॥ न्या॥ ॥ पू॥ ज॥ य॥ हू॥ न॥ थ॥ स॥ दा॥ ॥ न॥ थ॥ य॥ हा॥ भ्य॥ द॥ ग॥ दि॥ क्षा॥ न॥ पू॥ र्वा॥ क॥ न॥ क॥ म॥ न॥ उ॥ ॥ पू॥ र्वे॥ व॥ त्य॥ पू॥ ज॥ य॥ दी॥ मा॥ न॥ र्ते॥ न॥ र्वे॥ च॥ वी॥ म॥ पि॥ ॥ न॥ थ॥ द॥ कि॥ ल्य॥ पू॥ ज॥ य॥ द॥ ना॥
भ्य॥ उ॥ ॥ ष॥ ष्ठि॥ भ्य॥ या॥ गि॥ नी॥ ॥ ॥ अ॥ थ॥ च॥ उ॥ ॥ ष॥ ष्ठि॥ द॥ द्या॥ ॥ द॥ वी॥ य॥ ना॥ ॥ ॥ ग॥ लू॥ गं॥ क॥ य॥ व॥ आ॥ मि॥ च॥ उ॥ ॥ ष॥ ष्ठि॥ क॥ नृ॥ य॥ कं॥ ॥ म॥ हा॥ रा॥ ग्यं॥ वि॥ ला॥ ष॥ ल॥ ध॥ न॥ ध॥ मे॥ स॥

मन्त्रिर्गं॥ पूजयद्दिग्गजाद्वीं गूलयद्वाकधनिर्लीं। वनाद्यर्गसिंहसंस्कं सर्वसिद्धियदायिनीं॥ मंगलां पूजयद्द्वीं सर्वसिद्धियदायिनीं॥ सिंहयद्वासनां सोम्यं
ऊठामूकटधनिर्लीं॥ गूलाकसूगवनदामरुयंदंकिंलोकन। रुदां पुजयद्द्वीं रुदासनव्यवहितिर्गं॥ नीलात्यलकां गूलाकसूगवनधनिर्लीं। धृतिं स
पूजयद्द्वीं चलासनव्यवहितिर्गं॥ यद्ददयेलधनिर्लीं सर्वोरुनलहृषिर्गं। गान्निः ४ गन्त्रियदाकार्यो यद्वासनव्यवहितिर्गं॥ मूकसूगकनादेवीवनदा
द्यनयालिहिः ४ गिवावृषासनाकार्यो गिनवावनयालिका॥ उमनूतगधनिर्लीं गूलानारुययदा। ऊठामूकटखलुन्द्वीं सूकीकनर्ककला॥ रुमा
यद्वासनसूगुयनिर्लीं ययालिका। मखलागूलसंयुक्ताया गयदालनीयका॥ सिद्धिं यद्वासनाकार्यो सिद्धार्थेकवनयदा। मूथयद्वासनसूगुयनि
हृथोयल्लिर्गं॥ उद्धिं वपूजयद्द्वीं कलगायनिर्लीं। यागं कृण्वन्तीं सोम्यं यद्दस्वस्तिकधनिर्लीं॥ उमा यद्वासनाकार्यो मृगसिंहयनावृणा।
यागयदालनासं गकमलुनूकनागुला॥ वनाद्यर्गसिंहसंस्कं पूजयद्द्वीं यनिर्लीं। यहमालाविनाऊनी यगुलुलधनिर्लीं॥ गिवावृषासनादेवी

पृष्ठिः कार्यायथाशुभं । खड्गहस्तामहावृत्त्या त्रयमूत्रनधात्रिणी ॥ अग्न्याश्रयस्त्रययाद्या पृष्ठिः सर्वविधाशुभं । शिवायथासनाकार्यायद्यशीरुः
 लधात्रिणी ॥ गजेन्द्रहीनकलगीः स्त्रायमानासुगमरुना । मर्दियुजययद्यस्तुवनदारुययालिका ॥ दानाद्यनकनांदवीं आहवंगीं शुभानिव । वीः
 लावाद्यनयेद्यस्तु नमिः कार्यासुलाचना ॥ दीक्षाचलासनाकार्या किनलाहलधात्रिणी । सिंहासनंगमावापियद्यस्तुसुगमरुना ॥ नीलात्यलक्षि
 नाकांमिः कमलात्यलधात्रिणी । अग्न्यालक्षिमादवी सर्वोरुनलचञ्चिना ॥ पर्येकादयसंस्तुचयगमः कार्यासुगमरुना । गंखयस्तु कधात्रीच अग्न्याला
 रुनलाहल ॥ लक्ष्मीयथासनाकार्यायद्यशीरुलधात्रिणी ॥ अग्न्याश्रयस्त्रययाद्या पृष्ठिः सर्वविधाशुभं । शिवायथासनाकार्यायद्यशीरुलधात्रिणी ॥ वन्दार्द्धलासनादवी शिगुलाचगमरुना
 । कलगस्तु रुवद्वित्रीजयूनकधात्रिणी ॥ थागयद्वारुनासंका ननमा लाधनाशुभा । गङ्गागङ्गासनाकार्या वज्रहस्तसुगमरुना ॥ जयावगी सिंहसं
 स्तु गनगं गधनाशुभा । हंसासना रुवद्वित्री मंजुभयलधात्रिणी ॥ वज्रवेकाखयुयाद्या दलुकाष्टकमलुलं । अग्न्याश्रयस्त्रययाद्या पृष्ठिः सर्वविधाशुभं । शिवायथासनाकार्यायद्यशीरुलधात्रिणी ॥

२०

त्रिणी ॥ थागयद्वारुनासंका ननमा लाधनाशुभा । गङ्गागङ्गासनाकार्या वज्रहस्तसुगमरुना ॥ जयावगी सिंहसं
 स्तु गनगं गधनाशुभा । हंसासना रुवद्वित्री मंजुभयलधात्रिणी ॥ वज्रवेकाखयुयाद्या दलुकाष्टकमलुलं । अग्न्याश्रयस्त्रययाद्या पृष्ठिः सर्वविधाशुभं । शिवायथासनाकार्यायद्यशीरुलधात्रिणी ॥
 नाउकर्त्तुया सिंहाचला महावना ॥ पिनाकगनहस्ताशु खड्गश्वटकधात्रिणी । विनेशसुजराहला रुमवास्तुकिधात्रिणी ॥ यद्मां कृगकनादवी अजिः
 नामकनासना । नथस्तमानसी कार्या यल्लामूत्रनधात्रिणी ॥ वज्रां कृगधनादवी सर्वोरुनलचञ्चिना । अग्न्याश्रयस्त्रययाद्या पृष्ठिः सर्वविधाशुभं । शिवायथासनाकार्यायद्यशीरुलधात्रिणी ॥
 दिगिर्दलधनाकार्या सर्वोरुनलचञ्चिना । रुलनीलात्यलवना उत्तंगवालकान्विना ॥ मायायागं कृगवना मायाचामनधात्रिणी । शूकनस्तु महामो
 याभाहयं निवनाचनं ॥ भाहनीमृगयाचला ध्वजगुला कधात्रिणी । वज्रहस्तासनायाग हानकयूनक्षिना ॥ ललासागसंस्तु मालादयेलाधात्रि
 णी । गानागकटमाचला विमलाह द्यवचैसा ॥ मूकाकस्तु कधात्रीच कमलुलकनाशुभा । नीलीयथासनस्तु वनदारुययालिका ॥ अग्न्याश्रयस्त्रययाद्या पृष्ठिः सर्वविधाशुभं । शिवायथासनाकार्यायद्यशीरुलधात्रिणी ॥
 दवी कमलुलधनाशुभा । गनलासिंहमासीना वनदारुययालिका ॥ कोमिकीकोमिका चला शिगुलमूलाधात्रिणी । कयालकर्त्तिकाहस्ताधनयुयाः

महावना। मनिमनस्य कर्तव्या सर्वोत्तमं कृषिना॥ वीणावादनगीलाच नृत्यमाना सुगमरुना। इगोदिगक्रमरुचि यष्टम विष्टम दनी॥ पिनाकः
 गवचमो सिधनिनी महिषापहा। नञ्जी धौल महा कार्ये लुहटे ४ यनिवाचिना॥ नक्रमुद्रक नरेभ्य नर्जिना न महावले १ वक्षिमाना गपा गान कचि
 च्छिन्ना गगासव १॥ देवी गूलगगा कार्यो ४ सर्वे न समुखानना १ यादी यद्वा सनचे क मर्क सिंह निवेगिर्ग ॥ नर्वविधेन नृयल द्रुगो कार्यो न चान्यथा
 । यद्वा यनि समासीना कि कार्यो सुगमरुना॥ यष्टमालावेना नञ्जी यसा मण्डल कृषिना। सुवमखन धानी च सर्वे गगा समन्विता॥ वगस्त्य नृधमीः २१
 कार्यो यष्टादक कना गुहा। यष्टा लु यष्टा दवी यष्टा हस्त निगुलिनी॥ कर्णस्य नृया कर्तव्या सकलं सुगमरुना। यद्वा कर्ण धानी च महवग
 धना गुहा॥ कपालिनी सदा कार्यो कपाल गूल धानिनी। नृद नृया गथा नो दी वृष संस्तु सुगमरुना॥ उटा मुकट सा द्वेन्द्र ४ उगवा सुकिर्क कला। न
 थस्तं यष्टा यलाली कपाल गूल धानिनी॥ मयूनी गिस्त्रि संस्तु च पा गग किधना गुहा। निनगा गक कर्तव्या सर्वोत्तमं कृषिना॥ द आसन संमा

नृदां यष्टा स्वस्तिक धानिनी। स्वनृयां यष्टा यष्टा दवी हान क यून कृषिना॥ गूल स्व नृधना दवी वरु नृयां न नासना। निनगां यष्टा यष्टा दवी गूल यष्टिः
 सधानिनी॥ उटा नग गि नृधनं कृषिना गिव नृपिनी। निष्टा गग नागार्थे वरु वरु नृधना॥ अग्न नृदा नृधनां यष्टा सर्वोत्तमं कृषिना। अग्नि
 कां गूल स्वस्तिक धानिनी यष्टा यष्टा ॥ यद्वा सनस्तं द वन्द च विर्को सां यष्टा यष्टा ॥ यगा नृदां महा दवी नागारु नृधनां कृषिना॥ उद्व कर्ण कनाली नृ
 मुलु कर्ण कधानिनी॥ सन यष्टिना लु कर्तव्या गगा नृदा महावला। वडां क गधाना दीवी गथा वेवस्त्र गां यष्टा ॥ कपाल द उहस्त नृधना यष्टा यम
 सना। कोमानी यष्टा गग क मयूना सन ग किष्टा ॥ निद लु वान नृया उ नक्र माल्या सक कृगो। माहम्वनी वृषा नृदा निनगा गूल धानिनी॥ वीणा वाद
 नगीलाच हान क यून कृषिना। गं स्वच कधना यष्टा वेष्टा वी गनृया सना॥ वन माला धना दवी महा लक्ष्मी लथ यष्टा। गग लो सिगुला च नृत्यमानाः
 कपालिनी॥ शोमान नां स सं यष्टा निनगां यष्टा कृषिना। नृत्या ४ संमुख गा कार्यो कर्ण की यम संस्तु ॥ गिव दूनी य कर्तव्या यो व नारु नृधना लाला गि

वावडां कू भधना निर्मोहा काटलक ॥ अविनली नत्येवो विरुग्गना गवक्षना । मूडालं कू न पू र्णु ड वाभा नू क न संस्किता ॥ यी ० संस्कु न या म्य
 न गथा ० विरुग्गना नना । वाम ० अ पू र्णु न दं वि उर्दे के गी रु या न का ॥ यमा स न क्का निर्मोसा माला ख द्वां ग धा नि ली । कया ल गूल ह का च कलि का रु
 न ॥ ० कू ला ॥ मूडा वस्त्र धन वी ० संस्किता वाम कां गुलि १ गज च मा सु ना नो डी ना गार न ० ल ह षि ना ॥ च उ ४ ष ष्ठ नु द वी नां त्रय कं का थ कं न व । सां
 य नं च सू धा धू क महा रा म्यं व दा म्य हं ॥ ॥ वक्ष्मा वा च ॥ यथा गिव स्य ने वा न्ना विद्य न ग क पू र्ण ना गथा वा नं न य ग्या मि च उ ४ ष ष्ठ नु द वी नां ॥ २२
 सू व लू क मि दान स्या ॥ आ दान स्य च यत्न लं । रु लं ग द धि कं गं क च उ ४ ष ष्ठि स्म न नि ह ॥ या सा द म लु यं ग ह विरु व न्नु च ला थ ना । च उ ४ ष ष्ठि मे हो
 रा ग पू र्णि ना ना अ दा रु ना ॥ च उ ४ ष ष्ठि य नि ष्ठा य द्वा रिं ग धा उ म्मा थ वा । व स सं स्था म था यी नु स र्व न न नि दू ४ द्द मं ॥ ॥ गथा मा लू च कं ॥ म
 त्य प ना ॥ ॥ मा लू ० ल क लं व क्ष्मा य था व द नू पू र्वे ग १ व क्ष्मा ली व क्ष्मा स द्द गी च उ र्वे का च उ र्वे जा ॥ हं ता धि रू हा क र्त्त वा सा क सू र क म लु लू १

माह ग्व नी ख नू य ० न था मा ह ग्व नी म ना ॥ रु रा मू कू ट सं य क्का वृ ष ष्ठ वं ड ० ष लो । कया ल गूल ख द्वां ग व न दा च च उ र्वे जा ॥ कू मा न नू या को मा नी
 म यून व न वा हि ली । च क व क्ष्मा ध ना ग द्द ल ग कि ध ना म ना ॥ हा न क यून स म्यं ना कू क ना कू ० ना गथा । विष्णु वी विष्णु स द्द गी ग नू आ स न सं स्कि
 ना ॥ च उ र्वे कू म्म व नं दा र्ग ख च क ग दा ध ना । सिं हा स न ग ना वा पि वा ल क न स म च्चि ना ॥ वा ना ही च य व क्ष्मा मि म हि षा य नि सं स्कि नां । व ना ह स द्द गी
 द वी य ० ॥ वा म न धा नि ली ॥ ग दा च क ध नां ग द्द दान व न्नु वि नां सि नी । ० डा ली मि न्द्र स द्द गी व क्ष्मा गूल ग दा ध नां ॥ ग जा नू र्छं तु ना न्द वी लो च न
 वे कू रि वृ र्णा । ग य कां च न व र्णु र्णा व क्ष्मा रु न ० ल ह षि नां ॥ गी कू ख द्वां ग ध नां ग द्द द क था गी म्म नी मि मां । दी र्घे जि क्का मू र्दे क गी म स्कि ख लु म्म म लु
 नां ॥ दं क्का क ना ल व द नां कू यो र्वे व क्ष्मा आ द नी । कया ल मा लि नां द वी मू ल माला वि लू षि नां ॥ कया लं वा म ह क्क तु मां स ० आ लि न यू नि र्ण । स क गं च
 मि ना य स्मि न् ग म्मि कां द कि ० न था ॥ गृ ध ष्ठा वा स व क्ष्मा वा नि र्मो सा वि ग ना द नी । कला ल व द ना न द्द क र्त्त वा सा नि ला च ना ॥ वाम ० अ व द्द य ० १

नी। अकार्थमहनीयाका नवमी तं सदा तूषे ॥ पूजयित्वा महादवीं नवम्या मग्नवलि को। महत्वं या यवाची नवम्या विष्णु नथामना ॥ नत्मा दिशं महायुष्मा
नवमी या यनागिनी। उपा कौतुय यन्न न सगर्गं सर्वे पार्थिवे ॥ मूलारु नल मकल संयुक्ता विधिवन्तुय। विगवना धजी श्रेय बालं वृद्धे ॥ सथो वने ॥ वाः
मूलो ॥ कृति ये चैत्ये ॥ गूदे नये म्यसव के ॥ अरु दाना निदया निताय वा से चैत्ये नृपे ॥ गम्य वल्लो निना ऊ नु वक्रा विवि विधा निव। स्वमां सन धिने दहे
देवी तु श्या निवेष्टुर्ग ॥ महि वक्र गम मावा नू धि नल मथानृय ॥ रुल मय वक्र म ॥ गथा पूजयित्वा रुगांदवीं यद्वया स चैर्मगलां। यं नालिध के य ॥ कूर्य
दहा ना नं न नाधिय ॥ गून्ना धा नल नासे लरु ग वल्ला विव कल ॥ मासि वा म्ययूजवी न नवम्यां यद्वया चि न ॥ नृत्तगी न निना दे म्यगं खवा दि न निस्वने
॥ कूर्यो कू ग न लं चैव ना नापूषा य गारि ना ॥ स चै पाय वि निर्मूका दि य न जा म य स्रु था। मा द न दू र्ग या सा द्दे दू गोला कमही यन ॥ न वं म्यां मु क्त प क
उसाय वा स य ना नृय। स्नाययित्वा यून नायां स चै पाये ॥ पमूचन ॥ ॥ अथ गि गूलिनी पूजा ॥ रुविषय ना ल स म क न वा च ॥ ह न न व प न म

हनस्यं पाय नागनं। धर्मयगस्य मायुष्यं सर्वदेवे नूष्टिर्ग ॥ काष्ठं वा कां च नं वायि। जिगूलं च लि का लर्क। स्नाययित्वा नना रुक्मा कूंकुम नानुलि यच ॥ ल्यने
विकसिने ॥ यथै ॥ पूजयित्वा यल म्यव। गऊ नथ हथ वायि वृष रुवान नाधिय ॥ आवा यर्ग महा ला गम लिकां च नूष्टि र्ग। ना ना वा दि न निधो ये वे द्वा था
ये म्ययूक्त ले ॥ नथे दा य न नंद या ॥ कृ न सो र्ग स मं न न ॥ दू गो या ॥ य न न स्नाय विस्वयने म्ययूज यन ॥ यल म्यगि न सा द वीं मुत्वा वे व क्र मा य थ न। अ न
न विधि ना द वीं पूजयित्वा रुचलि को ॥ वक्र नूड विष्णु श्रे ॥ पायं उय न मं य दं। य न वं यूज य द वीं जिगूला रु नि मा द ला नू ॥ मूचन स न न ॥ या ये वे द्वा ला
कं व ग कृ नि। न न ल हा व र्गं पूष्यं गूल पूजा ख मू र्ग ॥ रु क स्य न म या ख्या नं महा या न क ना ग नं ॥ गथा मासि वा म्ययूज वी न रु मू य कृ जि गूलि नी। न व
म्यां यूज य थ मु न स्य पूष्य रु लं गृ ल ॥ अ म्भ म ध स ह स स्य वा रु य य ग न स्य च। न रु लं ल रु न वी न दि वि द व ग ने वृ न ॥ ॥ द वी य ना ल ॥ व द्वा वा च ॥
य का य क रु नि कृ त्वा ह म नू य म यी गि वा। जिगूल पूज य द ल स्रु थ का या न वा वि ला ॥ च द ना रु न ग म्भ्यां स म्भू ये मु य यूज य नू। स रु दि द्वा ॥ रु र्ग ह

आत्सकृत्तमकृत्तमयुन ॥ १॥ सुखासंयुक्तकायानवाचिगीर्थकृत्तम ॥ नदकं पातं नाम सुखं स्वार्थं पापं कर्म सुकर्म ॥ यस्मात्कलो नयत्ताका कायानं न कीर्त्य
 न ॥ ॥ अथ मातृवकयुजा ॥ दवीयुना ॥ मातृणां वसदां चकं हसनाकृत्तमसुखं ॥ युक्तिं विधिनागकसंवल्लभमायहं ॥ नमः पापं ॥ अथ त्रयः
 मूलिष्टद्विजाह्याविष्मथवा ॥ शुद्धावारुकिमास्तुययुक्तयिष्टं निमानन ॥ माननामातृ ॥ स्वयं यथा ॥ ननयो विषयास्तुष्टुयं किं विरुविष्टानि
 ॥ गवश्च विषयस्तु द्विजायकसमाकृता ॥ निवृत्तवेनाह्यालारुविष्टं निनसंगय ॥ सुखिकं कर्म मानां यं यज्य ॥ कामदृष्टिद ॥ रुवत्तमस्य संपः २५
 हि ॥ मातृणां युक्तनास्तदा ॥ सदगिरुत्तनसुमधुन ॥ यत्तदं युक्तनदस्यापिरुत्तं ॥ उकाहमपि यरुक्ता कं न्यासं कृदिवाकन ॥ युक्तयित्वागिवाचकं दी
 पार्थवाधयं निव ॥ कलरुक्तमुत्ताका न आयुना नायसं पद ॥ संधा कालं सुखाय युक्तयित्वा रुमानन ॥ यददनिष्टुने दीया
 नकनेयाननाचिर्न ॥ ननयो द्विर्न किं विद्विष्टमसुनिसरुम ॥ मानवावका ॥ आद्या ॥ या युक्ता ॥ उक्तं मासमिष्टरुक्तं यल्लं मांसं ॥ रुविष्टयुना ॥

॥ रुक्ताश्वेननेकेषु सद्यमांससमचिर्न ॥ संधाकालनवंशोथा वलिं कुर्यात्तनाधिय ॥ वल्लिकायनरुक्ता महिवात्रनियामने ॥ सगच्छनिपनं कृत्तं
 यनसावलिं कालिना ॥ ॥ अथ कुमालिकायुजा ॥ दवीयुना ॥ वक्ष्मावाच ॥ ननयो युक्तमगक हसनाकृत्तमसुखं ॥ युक्तयित्वागिवाचकं दी
 सीदनि ॥ यिनना वसवा नूडा आदित्यागललाकया ॥ संधेन युक्तिना कृत्तं कुमार्थयन युक्तिना ॥ युक्ताश्चमी वरुद्धं न्येवशो वविष्मथग ॥ रुष्टुयकविः
 ॥ गवश्च रुक्ताय कृत्तमात्रिका ॥ युक्ताय पादोसर्वोसं कुमानीनां च वासव ॥ वलिं कृत्तं नलदिष्टं ननमास नलिना ॥ युक्तयित्वागिवाचकं दी
 नावमेश युक्तयित्वाविधानन रुक्तनं नासदापयन ॥ स्वलुलु सुउं सयिं द्विधिका नं समाकिर्क ॥ नासां दयं कुमानीनां गनेरु जायथ चनां ॥ पानीयं या
 चिर्नंदय मनेवायाचिर्नं सुखं ॥ नाह्यास्य ये दासवो लदास्वाचमनं ददन् ॥ आवयना कृत्तमासर्वो न दत्तात्वा कृत्तमिष्टुन ॥ दातुं गिनसिदाना ॥ रु
 यकारिना कृत्तमा ॥ ननापियलिया नं सु कलं थारुकि पूर्वक ॥ अन्नविधिनागक दवी किर्यं युसीदनि ॥ ददनि विविधा कामानुमनारिष्टानुनाधि

य॥ नार्थं कृत्वा न गच्छेत्तद्वत्ताकं वगच्छति ॥ अथ वलिदानं ॥ कालिकायूना ॥ यत्कृत्वा वलिदानं च नवम्यां विधिवच्च नम् ॥ दवीयूना ॥ वलिं च यथ
 यच्छंति सर्वे ह्येव विनागनं ॥ न श्युः कुशुभं न दवीयावत्कल्युगं कनं ॥ सर्वे ह्येव विनागनं महिषादिच्छदनं कलं ॥ तथा ॥ नवधायगुह्या गंतुं महिषाजाः
 विद्यागनं ॥ कलं यत्कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥ कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥ कलं यत्कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥ कलं यत्कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥
 म्भुगलास्तथा ॥ महिषाणां धिकां भयस्तथा नवविधामृगां ॥ नवविधामृगां ॥ कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥ कलं यत्कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥ कलं यत्कृत्वा नवम्यां नात्मकायया ॥
 गच्छंति ॥ रुविश्यायूना ॥ सहस्रं विधिमया निस्सदहं नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥ नृधिनेषु ॥
 स्वेव न च स्वेव यथा कमान् ॥ वलिं मोहावलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं वलिं शान्तिं
 योर्लोत्तमवत् ॥ कालिकायूना ॥ गालिगं मनुयूगं नृगीर्णं यीयूयमृशं ॥ गालिगं मनुयूगं नृगीर्णं यीयूयमृशं ॥ गालिगं मनुयूगं नृगीर्णं यीयूयमृशं ॥ गालिगं मनुयूगं नृगीर्णं यीयूयमृशं ॥

[illegible]

पिता। चित्तचित्वाग्रसत्यं सुद्धिं न स्यादुक्तं नव॥ मन्त्रादवीं समुद्दिश्य काममुद्दिश्य चात्मनः॥ अरिषिञ्च न गच्छेत्काले वालमुपूजयन्॥ न सनात्वं वः
 न्दिकायाः ४२ नलाकयसाधकः॥ क्रीडां स्वर्गमिमं ८॥ आत्मा स्वर्गं च पूजयन्॥ ध्यानं यथा॥ कृष्णं पिना कया लिं वकाले नातिस्वपुषिर्वा॥ उग्रं न काह्यन
 यनं न क्रमात्मा नूलयनं॥ न क्रां वनधनस्येक या महर्त्तं कृद्विने॥ पिवमानं च नृधि नं कुं जानं दयसं यमं॥ अश्विर्चिगसन ४२ स्वर्गकी कृधाभा इनासद
 ४॥ गीगर्गो विजयस्येव धर्मपाल नभा मुनः॥ पूजयित्वा न गच्छेत्स्वर्गं आं कूं रुठिनि मन्त्रके ४॥ गृहीत्वा विमलं स्वर्गं कृदथ दलि मरुमं॥ उं नुं जां गी को गि कीः
 नि नृधिने ८॥ आया यना मि नि। स्तन निथा जयं दकं गिन स्य सय दी पकं॥ नवं दत्वा वलिं पूर्यं हलं या धानि साधकः॥ हीन रुत्या दिन मायां निष्कलं स्यादि
 पयं स्यात्॥ अथर्षा महिषा दीनां वलीना मथ पूजनात्। काया मध्वल मोया नि न कं गृह्णा नि वे गि वा॥ वलिदान रुद्र गोयाः ४२ सर्वे गायं विधिः ४२ ग ४॥ दवी
 पुना ८॥ देहानां मत्स्या मां सानि दवीनां यत्नोदनं॥ कालिका पुना ८॥ कृष्णालुमि कृदलुम्य मद्य मा सवन वच। न वलि समा कृया कृष्णो कृग समा स मा

२१

४॥ वन्दहासन कदम्बे कृदने सुखमिच्छन्। दाग सिधे नृक कच गं कला रिमु मध्यमं॥ अरिधे नृ ४ कृलिका गं कला कर्त्तु नी रुन रुन यरु लस्य अधर्मं पनि
 कीर्त्तु गं॥ नृ ४॥ अथै ४ ग किं गूलाद्यै ४ वलि कृद्यै ४ कदा घिन। नाहि दवी वलिं गनु दा ना नृय मवा नृयात्॥ वलिदान वलि कृत्वा स्वर्गं ले नृधिने ४२ सर्वे ४॥ सर्वे व
 न मन्त्रे ८॥ ललाट निल कं यमं॥ नाजा वा ना ज पुना वा लिथा वा यक ना कसा ४॥ सर्वे गत्य वर्गं यां नि कृग याम स मन्त्र उर्विध ४॥ ॥ अथ नी ना जने॥ वक्रा य
 ना ८॥ न व ग्या नृ कृग साने ४२ सर्वे पूजा दिजा नय ४॥ उक्ता रु गं नि ४२ कृत्वा था ग ग्या धूलि नाम लि॥ यद कं गालि हा न व आ नि ४२ गानु रु य न मं॥ अथ सर्वे दय
 त्या कं ग च ग स मा वन न॥ किं ह्यार्त्त कृत्तं कृगं कृहि मदा नृ व स नि। गव ८॥ वाथ र्त्तं ध्यायां नि ईह रु गृह न ग ४॥ नि ईह मा नो नी ग रु नि गे कृन्नी विहा व
 यन्। दिगं ग्यं नां य दी फा म्वा गत्य लं वय य कृ नि ४॥ दृष्ट्या म्वा रु ग कृ लि ना कृ नी ना ज नृ ज ना ४॥ ॥ अथ गालि हा नी य रु न ग नी ना ज न विधि ४॥ नी ना
 जि गे रु नं ग कृ ग व लो हा रि हा नि क य कृ॥ अरिषि क ना जा म्वा न ना नृ या ८॥ रु व द्या गा॥ लो हा रि हा नि क नी ना ज ना य था ज न क हा म॥ अथ य किं रु य कः

गित्ये दृमी आदिपद नानु ॥ वरुवा नूय लोकस्वादि ॥ ४ सो न वर्य वहनि ॥ सा ल न ला का का कृ द्या नू यानू निनी कृ न वा हानू ॥ न यौ स त्वं व लं च कृ षू नि
 गृ द्या नि ॥ हं ज्ञायं न ना ग म हा य स र्गे ॥ ४ स म न्वि ना ॥ क द्या ॥ ग स्मा ग्रा ह्य य ना य वा जि षू पी उ रु व नू म ह नी ॥ ५ वं स य न र्ग त्वा न ॥ ४ स ग्रा न ॥ ५ नि दि द्य ॥ ४ ॥ ग य
 दि वा क नं कि न ले न ह्य द्या वा जि ना न द्या ॥ ४ ॥ ग्ग ला न द्यो य लि कं म ना न मां व र्जि नां व न वि कि न ले ॥ ४ ॥ ना ना का ने ॥ ४ ॥ य द्ये न लं कृ नां धू यि मां कृ यो न ॥ ४ ॥
 ह्यां ह्या ना सु न मा ॥ ४ ॥ धू यि नां अ द्यि नां द्वि ती या यां ॥ ४ ॥ य नू धे श्व ग म रु ह र्के ॥ ४ ॥ स द्या हं न कि न द्या नू ॥ ४ ॥ गु लू लू हिं गु व य लू ॥ ४ ॥ स व वा या मा र्गे न लू लू लो हं
 ॥ ४ ॥ सि द्धा र्थो श्व ल लू न व द्नी या द्या जि नं कं ॥ ४ ॥ व य लू आ म न की ॥ ४ ॥ य मा मा र्गे न लू ला लू द्यो ज नि च ल लू न व नू व द्या नू ॥ ४ ॥ व द्यां व क ल्य यि त्वा धू चि च वि
 ध न न वा व कं रु द्या नू ॥ ४ ॥ धू चि ग्ग ला नि ना रा ग ॥ ४ ॥ वि ध न न व द्या मा ले न ॥ ४ ॥ सा र्यो पा न ॥ ४ ॥ ४ ॥ वि ४ ॥ य ना हि नां व द्या वा नी श्या नू ॥ ४ ॥ ग्ग लि हा न ग दि न न म नू
 ॥ ४ ॥ यो य य ल्य थ मा दू नि ॥ ४ ॥ न न हा म य नू ॥ ४ ॥ ना हि ना स्मि म हा रा ग रु द्या वा ल म ना रु म ॥ ४ ॥ धू म धू ज क उ द्या न स्व र्ग स्य य थि न ॥ ४ ॥ य थि ॥ ४ ॥ उ नि द्य द्या मं गृ द्या मं ग्ग नि

नमो ह्यथ यत्र । स्वाहनि मग्नमकुलपाययत्यथमाद्रुतिं ॥ नमः ४ यत्रायगीन्द्राय सामायवन्तयत्र । विवश्वनकवनाय सूषणायाहिमायिन ॥ श्री
दित्यस्य लुधाग्निर्मां नूडयावसृजि ४ सह । विष्णुश्च विश्वदेवानां साध्वानां मनुजि ४ सह ॥ स्वाहा कानलरुद्राय त्वधर्महृदयवाहन ॥ विद्याधनयक्रुग
न्धर्वेन कलागणनां वयहाणमसूत्रस्यत्र ॥ वासुकीयकृमीनागनां गनुत्थय ॥ सर्वेसां धोर्मासीनां देवानां नदीनां सागनां वनस्यमीनां स्वाहा
कानलरुद्राय द्वितीयं च क्रुमासनं । देवानां भवमथर्षां स्वाहा कानलरुद्राय मथ ॥ दूर्वेना नीह नर्कां सिषत्य षवक्रुगजसा । रुर्वनिनस्मात्यत्यूषस्त्राय
येत्याययद्ययान् ॥ यनाहि गच्छुद्वि ४ कालं नयेदित्वा द्विजं रुमान् । यथाहं कानय नित्यं स्वस्त्वागीमंगलाचिर्ग ॥ नटनरुं कगन्धर्वो ४ सुगवानलः
मागधा ४ कुवगात्रयनिष्ठयू ४ सफाहं गानिका नय ॥ मनाङ्गानेधुना नैदान् यद्वा गच्छति वेयहा ४ वादिर्वाहनागन नस्मान्नित्यं पथाजय ॥
अनिकं मय च सफाहमल्लेयां स्त्राययद्ययान् । वन्तयवलिं दत्वा यथाहं यवगोहय ॥ सुष्टया द्वितीयामा नत्या सुमनित्यो विद्वथयच्च मानगति

४ नमः शिवाय वासु यन् ॥ नमः शिवाय नवम्यां च निःकृत् नगना द्विष्टाद्विष्टवोरुना योऽङ्गदणयावन (लभुवो) ॥ सुक्ता नवम्यां वृत्तीयायाया मिनिगव
 ॥ द्वितीयाय यत्नमिदं नमः नक्र विधि मष्टमदि नवम्यां धिसनं वारिधाय सुक्ता नवम्यां नो नाऊन विधान द (थोपि नये वा नगम्य न) ॥ व्यवहारापि नीः
 नाऊन नय दगम्यामेव ॥ गथाशु नाऊन ॥ उत्सव विधिं च विनमं वलिं च नी नाऊन च वल वृष्टो ॥ आश्वयुज सुम्यादि सुकृती गयथा कर्म नृपनि ॥ नगना
 नलमूलाया दगहस्त समुच्चिर्न ॥ विष्णो नक्षो समाख्यार्ग ध्रुमाला विह्वलिर्न ॥ सूनकिर्न वायु वीथी ॥ यथा सुखं कुमना नमः ॥ सुदन्ता गमना वाहां ॥ सान्ना
 हिक पुनस्तन ॥ सन्नाहाय पुनर्वसि सन्नाहिका ॥ पुष्पाहवस्तथा धेय गीतवादि कुनिष्ठने ॥ सुममा गधग ध्वज सुयमाना त्वलं दगा ॥ गध्वजो ग
 यना ॥ गसहस्त पुनर्धेय सुयवाय जीविरिष्टाने गवाचक माधव नगना नलमन्त्रिषो ॥ दक्षिण संकट निवृत्त दत्ता वाग्निं पुनादि न ॥ दिग्ग मूर्तिना
 दत्ता स्वस्ति नाऊन निवेदयन् ॥ उत्काशी नृपि नक्रा सिने वहिं सन्निवाहनं ॥ उत्कां पकालय लुत्मा दक्षिणे ॥ रुनपा म्वथा ॥ अश्वी मन्त्रा अश्वी गा उत्काहः

स्त्रादि धास्ति ना ॥ नवाग्नि यानि हा नल कुर्ये नृत्का यदीयनं ॥ अग्नि यानि ह नल अग्ना नृत्का स्ति नात्का यद्वलिनन ॥ हविः ॥ गय ल नाऊन म्वथा कृत्तिवा उग
 योथन ॥ हविः ॥ गय ल वनृ गय ल पि लुं दद्यात्त्र वाजिनं ॥ निगम्य नृत्का नदगं ना ॥ अश्वनाऊन पुनाधा सु विष्णु सुपुन ॥ सुक्ता नवम्यां वृत्तीयायाया मिनिगव
 सुन ॥ येन नक्र ॥ वेवम्वन कृव नो च पा म्वथा य नि नक्र गो ॥ चन्द्रादित्यो पृष्ठवंश मुद नं पृथिवी धना ॥ नक्र कुवकं गध्वजो वल मिन्द्रा ददा उग ॥ ह
 विः ॥ गय मिमं याङ्ग म्व विजयार्थं महीयन ॥ नमस्तं यासिर्न वापि युजयद्विष्टा म्वन ॥ कर्णु जाय मिमं वा स्य दक्षिणे ॥ गय व ल य स न ॥ कृत्ता रिजन जाः
 त्यावल कृत्ते र्जने ॥ सुक्ता नवम्यां वृत्तीयायाया मिनिगव ॥ अश्वनाऊन पुनाधा सु विष्णु सुपुन ॥ सुक्ता नवम्यां वृत्तीयायाया मिनिगव
 दिग्ग ॥ सिद्धमान ॥ कृत्ता नवम्यां वृत्तीयायाया मिनिगव ॥ अश्वनाऊन पुनाधा सु विष्णु सुपुन ॥ सुक्ता नवम्यां वृत्तीयायाया मिनिगव
 नाजिर्न नम्वे सुगालो हा रिहा विर्क ॥ कुर्यो दा म्वयुजं कर्म सचैमन द्विगय न ॥ निष्ठा निर्या निका नामा म्वनी नाऊन विधि ॥ ॥ अथ आनि ॥ गम्यः

स्वामिं संपादयामि ॥ स्वामीनाम नवयन्त्री वरुवाचूयिणी नर्थ । वहं गीमाग्निन माप्ति नृदाह्वयसमाधिना ॥ सफाहं पीठयद्वाहं लन ४ स्नागाग्निना नृद ।
नवमं यूजयित्वाथ वद्वापाद नि कांगला ॥ मूवाथाऽनिच्छहिं उभायं वनत्वाक गभये ४ धूयालिम्बाय सिद्धार्थे नृक गीमूनादिरि ४ ॥ द्विगीयादिनवये
नृक यकृ कं नृक स ४ सफाहं नान्यट सस्मात्यने वा वृह्य नृक यग ॥ वागथाद्यान नं नाशो कावय नृक ४ ॥ माय कृष्णा ३ मां साधे दयादि कृवल्लि
निगि ॥ उं लाकपाल ग्रहन कृक सूना सूना गग नृक यकृ वा कृक स विद्याधन गनृक महां गग नृक दवता नृक यि सावक याद मनूष्या मनूष्या यः
माह नृक ममादाय समना दय गभय नृक स्वमा लयं गनृक नृक स्वाहा ॥ गान्निह । मोच सगर्भं कृष्णा च वृष ४ धनूजा ४ ॥ मूनाला ३ उ नृक निय सिद्धि ४ ॥ मूथालो
हं नृक निच्छ ह नि ० ॥ निय सिद्धं उवाववा ॥ ॥ ग्राग्निना धिकान नृक ४ गभय ॥ यकृ यकृ ॥ द्विगीयायां गभली संवत्स नृक यग ॥ ग्रादि ल्य नृक सिंहा वाहा
कटव नृक दि के स्रथा । गभय गगदिन कन के रादीन य कवे यग ॥ यवार्थे गोपू नृक दद्यात् यावत्सं ध्या नृक जायत । गभलाय वग विहिता नृक कं १० यदायथ

[illegible]

त्वय वक्तिमान्। नार्थय ऊलकेऽपूथो वोहानये विधिं यति॥ सो गन्धिकां विष्णुं लक्षणान् च द्यान् सर्वदा। यह हामस्तु कर्तुं द्या गहाणामर्चनं तथा॥ अमनः
 विधिना यस्तु केनास्ति नृपत्न्या त्वत्तव। नस्य तु नमनाथस्य नरुयं विद्युनक्तविश्व॥ पूर्वोक्तिमूखऽधीमान् चैवाथ्यवचर्मणि लिखिता वाजा॥ निष्ठदजलसमीपस्तु
 नगरिष्वेव विलसति न॥ पिण्डमस्ति मन्त्रदद्यात्पूजाहिना नास्ति नस्य दिक्किञ्चन॥ अग्नीयादाजय कृद्वियत्री मल्लन्यथा लिखितं॥ यद्यानी मस्तिष्ठद
 किञ्चन वरं हयऽसं वक्तुं श्यासजय निददान नन्दऽगुरु न चिना निना यत्नात्॥ आनाह निक्किजिय जीविनया ययना यागान् लभ्यन्तु नर्म यनिह विन ३१
 म्य॥ वक्तुं वा ल्य गति यक्किं मात्म पार्थ साऽश्वऽसुस्तु न चिना ल्य चिना निलम्बी॥ अथ यागः॥ नगवनाहऽलिख नंदया यदद्यादस्ति मस्तु पूजाहिना
 लुगना वाजा॥ आनयाद कपूर्वाया यानी नास्ति नऽसवलऽष्टदं गं स्वध्वनि कृष्ट कृं जे न स वनमा दसृगन्धिमान् न॥ गिना मलि वा नवल ल्य लावे क
 लनि वस्त्रानि वना यदा ल्य ये॥ हंस यक्किं विन लुगना दिना दसं पग रि विवशु क्ता वामनेऽष्टा गन्धपवनान् वा हि लिख्य मान् नूचि नम गन्धनऽस

[illegible]

[illegible]

यगमा नाक्षत्रा ऊच्यते ॥ शूलं च शो निश्चयम् ॥ धीमहान्ता जायमानो दास्यीधनं चोदानदानास्तु ॥ सविः ॥ घृतं चिथायाजिघृक्षुः ॥ यथा ॥ स रुधा यवास्त्यय ऊमा
नस्य वीना जायमाना नि काम नि काम नन ॥ य ऊं न्यावर्षे रुद्र लवस्थान उ अवधय ॥ यश्च मांथा गन्तमान ॥ कल्याणं ॥ जिमकुलपाद्यादिदत्त्वा ॥ दमनूलय
नं ॐ वृक्षलानमः ॐ वृक्षलानमः ॥ निपुण्यां कलिरथ नैयूत्रयित्वा ॥ नानिगन्धयुष्यधूपदीपगां वृत्तनैवद्यादि ॐ वृक्षलानमः ॥ ॐ दं वस्तु वृहस्पति
देवर्गं ॐ वृक्षलानमः ॥ निदत्त्वा ॥ गगः ॥ यदकिं लीकृत्य नमः कुर्यात् ॥ ॥ अथ यमिषदादि यमिदिनया ऋद्धर्गं पूजाविधिः ॥ कालिकायूना ॥ ॥ यमि
पदमूयकम्य ॥ गावदू सय नाशालि ॥ सर्वदेवैः ॥ पूजिता ॥ ॥ पूजामूर्तेः पिदवीयूना ॥ ॥ पूजामलुलकमस्तु ॥ ॥ गगनमः ॥ सपुष्या कृगमादाय ॐ ह
उं वः ॥ स्वः ॥ रुगवनिदुर्गं ॥ हा गच्छ ॥ रुगिष्टया वास्तु ययीत्वा ॥ सीनाद्यर्घ्याय रुद्रलयुष्या कृगदधिदूर्वा कृगनिल कृं कृमविल्वयनादिनिधाय ॐ रु
यं गीमंगला काली रुद्र काली कयालिनी ॥ इर्गं कृमागिवा क्षणी स्वधा स्वाहानमा मुने ॥ ॥ निदवीयूना ॥ ॥ कृमकुल ॐ दूर्गे दूर्गे नक्रिलिस्वाहा ॥ ॥ नि

ऊयदूर्गोमनुजवा ॥ एगानियाद्याद्योयमनीयस्त्रानीयघननाचमनीयानि ॥ ॐ दूर्गोथेनमः ॥ गियाद्यादिदत्ता ॥ दमनूलयने ॥ ॐ दूर्गोथेनमः ॥ गित
न्दनकूंकमादिनानूलिया ॥ ॐ दूर्गोथेनमः ॥ गियुष्यांऊलितुथनेषूऊयित्वा ॥ एगानिगन्धयुष्यधूपदीपगाम्बूलनेवद्यानि ॥ ॐ दूर्गोथेनमः ॥ द्यः
वसुं दृहस्यदिदेवर्ग ॥ ॐ दूर्गोथेनमः ॥ गिदद्यान् ॥ गग४किंविगुस्तुत्वापलम्यपार्थयदनन ॥ ॐ महिषमिमहामाय ॥ वामू ॥ लूमू ॥ लुमालिनि ॥ इत्यमाभी
ग्यविजयं ॥ दहिदविनभास्तुन ॥ सर्वमंगलमोगत्य ॥ गितसर्वार्थसाधक ॥ गन ॥ ल्यगुं वक ॥ गोनी ॥ नानायलीनभास्तुन ॥ नूयंदहिय ॥ आदहि ॥ र्गंरुगव
गिदहिम ॥ पूर्णदहिधनेदहि ॥ सुव्वांकामान्यदहिम ॥ ॐ गगदिवलिनानाविधकामनयादबोधद्यान् ॥ ॥ दवीगृहघृणयूनिमान् ॥ गेलयूलिगान्वा
हानागुल्लयिनादीयान्पकालयन् ॥ सगिससुवदवीमूदिग्य ॥ यगियदिचन्दनकूंकमादिकगसंस्कारकडव्यं ॥ द्विगीयायांकगसंयमनार्थघटशाल
कं ॥ लगीयायांचनलनागार्थमनककं गितसिधानलार्थसिद्धनं ॥ मुखविलाकनार्थदर्योर्णं ॥ चतुर्थांमधुयक्कं ॥ नगमंजलायककुलं ॥ पंचम्यांचतुस्रमा

33

नूलयनमनंगनलीवायहनन॥ यष्ट्यादियूदवीवाधनादिविधिः यश्चादहिकास्यन॥ ॥ अथ श्वश्रूलायामश्वयवगनविधिः॥ गृहस्थिनमुक्तादि
नीयायां स्वाग्निनक्रयकायां केवलायां वा श्वश्रूलोमनामममूलिकां सर्वगयविष्टगानानाकानयूयालं दगं स्वयं यिगां विधाय गस्यां मुख्याः
श्वयधनह्वनात्यग्निमदिगिवयुगयावृणं सुंठिलमूयकल्या गदपत्रिवन्दनादिना मलुलद्वयं कृत्वा गृहं नवनमूचेऽथ वं चयुजयन् ॥ गृहकम
४कृगयनिलजलायादाय ॐ अशकलाश्वश्रूलायातयीगयगमननेनूकदीर्घायूकसमृद्धिका नवनमूचेऽथ वं चयुजयिष्य ॥ गिरि
कल्या सुयूयाकृमादाय ॐ कुरु वं ४स्व ४रुगवननवनक ॥ हागच्छ ॥ हगिच्छ ॥ त्यावाकृत्वा ययित्वा र्द्यपागजलपूयादिनिधाय नगानियाद्याया
चमनीयस्त्रानीयपूननाचमनीयानि ॐ नवनकायनम ४ ॥ नूलिया ॐ नभादवाधिदवाय ॥ वृवं गवलवानि ॥ ॥ स्वर्यपूजायदवाय ॥ वं गनीहिः
गायच ॥ वृवं गयनिषद्य ॥ नृगजायनिधायनि ॥ श्वश्रूमश्वधियं नकृगनलीवां यजामहे ॥ ॥ गिरि ॥ ॐ नवनकायनम ॥ गिरि ॥ ॐ नूलिया ॥

[illegible]

34

पथम् ॥ धनू वृषा रुमघान् कृपय दलिक नक्षत्रानं वानथम् ॥ वायवा दिवेदि क मन्त्रे ॥ गान्निहामं वकानथम् ॥ ॥ ह्यग्धगालापवगनविधिः ॥ ॥
अथ विल्वद्वीवाधनामकुलविधिः ॥ गन्धर्विनः शुक्लवस्त्रां अष्टानं कुरु कार्या ॥ कवलायाच्चासायं कालं विल्वगुरुसन्निधानं गत्वा अर्घ्यपात्रं पूज्य कला
कृमादि कृत्वा ॥ अर्घ्यं ॐ विल्ववृक्षा यनमः ॥ ह्यर्घ्यं ॐ दमनूलयनं ॐ विश्ववृक्षा यनमः ॥ ह्यनूलयनं ॐ विल्ववृक्षा यनमः ॥ गिर्युष्मां कलिगुणं दत्वा
धूपदीपने वद्यादि वासां सिद्धयान् ॥ गुरुयुष्य समन्विता कुरु मादाय ॐ ह्रुं वृषं रुं गवमिदं ॥ गं ह्रं हा गं ह्रं हं गि हं गि विल्ववृक्षद्वीमा वा द्युक्ता य
यित्वा ॥ अर्घ्यपात्रं कलयुष्या कृमादि कृत्वा ॐ कुरु यं गीत्यादि मन्त्रं ॐ इ गं ये नमः ॥ ह्यनूनयाद्यादि रिचूयचा ने ॥ पूजयन् ॥ गन्धर्वी गन्धर्वमंगलया य
पूजयन् नंदवीं विल्ववाधयदनं ॐ ने नावणवधाया यनामस्यानूय हा यच ॥ अकालवक्त्रा वा ॥ धा दद्यात्त्वयि कुरु ॥ पूजा ॥ गुरुमद्याग्निनयस्त्रां
सायाङ्गवाधया म् ॥ ॥ निद्वीवाधयित्वा विल्वगुरुमामकुलयदनं ॐ मनुमदनकोलासहिमवच्छिखनगिनी गान्धीरुले वृक्षत्वमधिकार्या ॥ सदा

प्रिय। श्री गेलगिखनकाग श्रीरुलगीनिकनन॥ ननश्चासिमयागृह पुष्पादगोस्वययन॥ निवित्वा मंजुषाविधि॥ ॥ अथयजि कायवगनविः
 धि॥ नगाम्बिनमुक्तसफम्यांमूलनकगयुकायां कवलायाप्या पुष्पादिनामलि नवित्वा ननु सन्निधानं गत्वानमस्य श्रेष्ठगो जलि॥ यसादननमंजुषा
 ॐ वित्वा वृक्षमहाकाग सर्वेदार्गकनप्रिय। गृहीत्वा गवभाखां कु दगपूजां कनाम्यहं॥ गोखा च्छुदा रुवंद॥ खं नचकार्यत्वयायरा॥ निप्रसाद्यभाखं
 माकां च्छुदयगु च्छुदनमंजुषां गो व (श्च ॐ छिन्धि २ रुट् २ ॐ रुट् स्वाहा नन॥ रुलं यूर्गो द्वयं वित्वा गोखा मनीय गृह्यांग (० यो) यनिष्कपयित्वा हय ३१
 यगु ॥ यार्थ ॐ वित्वा गोखा येनम॥ ह्यर्घो नूलयनययधूयदीयनेवद्यवाशलि॥ पूजयगु वित्वा गोखायां मृन्मययजिमायां च दवीमावा च्छु पयि
 त्वा पाद्यादिरि नूयवा ने॥ पूजयगु च्छुमादिवलि च दद्यान्॥ अथ दालया वित्वा गोखा मृन्मययजिमां च पूजा गृह दान दगमानीथ गगु (ममयनकन
 मंजुषां रुगानि संपूजा यसा नयगु॥ ननु विधि॥ पूष्या कनमादाय ॐ रुग ॥ हागच्छुग ॥ रुदि छाम्ब्या वा च्छु पयित्वा ॐ रुग नानमं निपाद्यादिः

रि॥ पूष्या माषरुक्क वलि च्छु दानन ॐ रुग ॥ यगा॥ पिगा वाग्धयवसुत्वा गृह गल। नगृह्णु मयादल वलि नययसाधिन॥ पूजिनागधयुष्याद्येव
 लि रिक्तपिगा लथा। दगा दस्मादिनिष्क य पूजां गृह्णु मल्लगां॥ ॐ रुग नय प्रपमाषरुक्क वलि नेम॥ निप्रययं जलमादाया लृजगु॥ ॐ अयस्ये नुन
 रुगाथ रुगाहं मिह मिपालका॥ रुगानामविना (धनपूजा कर्म कनाम्यहं॥ रुलित्यनन रुगाय यसा नयगु॥ ॐ रुट् निप्रययवा नारिमन्त्रिगान् प्रिग
 सयययवादी नु सचेविध्यायगान् ययूजा गृहविकिनग॥ कालिका पूना (०॥ छिन्धि पूष्ये रुगयू नेवद्यं मंजुषां गथा वित्वा गं निप्रदाल्वा नच गृह्णं नि
 दवगा॥ गस्माद्यत्नन कलं रुगानामयगानं॥ ननु मंजुषा सहिग॥ गत्य मंजु उदा रुग॥ गग न दालि लक॥ विकि नानिकि नरुग सफरुका नगनापू
 ना॥ ॐ रुं रुठि निमृन्मंजुषा॥ लाजा च्छु नसिद्धार्थ रुलययकगा रुगा वि कना निप्रदद्या॥ सचेविध्या विनागना॥ अरुगायवा॥ अथयून च्छित्वा गोखा
 यां वा मंजुषा येनमं निपाद्यादिरिम्बाम् ॐ पूष्या श्री गेलगिखनकाग श्रीरुलगीनिकनन॥ ननश्चासिमयागृह पुष्पादगोस्वययन॥ निवित्वा मंजुषाविधि॥

ॐ मूलमालिनि। उद्यमालो ग्ये मे श्रयं दहिदविनमास्तु न॥ ॐ कूं कमनस मालव वचनन विलयिन। विल्वपुत्र कृपायी कृद्वर्जं हंगवर्जं गन॥ ॐ सर्व
 मंगल मंगल्य निवसर्वार्थसाधिक। सनत्प्रम्वकलो नीना नाय पीनमास्तु न॥ ॐ यंदहियं दहि रंगं रंगवति दहि म। यशोदहि धनं दहि सर्वोक्ता
 मान्यदहि म॥ ॐ गियथित्वानमस्तु यो न॥ ॥ कदली दालिमी धान्यं हविदामानकं कवू। विल्वं कजयं गी च विरूयानवपणिका॥ नरकदल्यां व
 कालीं दालिमी नरकवैठिकां धान्यं लक्ष्मी हविदयां दूर्गं मानकं चामूर्त्तुं कवू यणिकायां कालिकां विल्वं गिवां अलं कलं कनहिनां अयथ्यां कालिकां ३१
 ॥ यथक मावास्तु यथित्वा यं वा यवाने ४ पूजयन् ॥ कृगमय महिषा दिवर्लिंदद्यान् ॥ सर्वोयधनि वाद्यानि च जादिविज्ञानि दवी गृह यथा सन्निव
 र्गस्तु यथ न॥ नाना र्थं रुपाकादि दवी गृह दान दण्ड यथा गृहं समुद्रयन् ॥ ॐ गियं किकाय वगन विधिः ॥ ॥ अथ महाष्टम्यां दवी पूजा विधिः
 ॥ नरक कर्त्तृ स्नान ४ पूज कालि नया विद्या दस्त्रा चान् ४ शुद्धासन यां मुख उय विम्व कृग मिल गला न्या दाय संकल्पं विधाय स्नानादिक माचनं ॥ नरु गिव

नरु ह्यदूर्गं स्मन लक्ष्य ॥ गायं गियं गि विष्णु गी च विला कयं गि ध्यायं गि वामन धियं गि वास्मं नं गि। गी नी मूं मां रंगवर्गीं उगद कदवीं गिय ययां गिय
 नमं यदमिन्द्र मोले ॥ अथ ॐ न्द्र मोलिय नम यदया फिका मारुगव ह्या दूर्गदद्या ४ स्मन लम हं कनिथ्य ॥ ॥ नरेव स्मन लक्ष्य ॥ यगां स्मनं गि निगदेन
 यिव दया दा द्या खाहि चो न नृप वक्रि रुय च दूर्गं। गी न किं विदयि शुक्ल रुयं नृणां स्या दद्या मुक्ति मय न स्य सुखं नमं ॥ अथ सर्व रुया रावका
 मारुगव ह्या दूर्गदद्या ४ स्मन लम हं कलिथ्य ॥ ॥ मार्क ॐ ययूना ॐ स्वस्त्य स्मन लक्ष्य ॥ दूर्गं स्मना हन सिरी निम लो वरुका ४ स्वस्ति ४ स्मना मनि मनी
 वरुकां ददा सि ॥ अथ गि गयि न्द्रु म निया फिका मारुगव ह्या दूर्गदद्या ४ स्मन लम हं कनिथ्य ॥ ॥ गिव नरु ह्य स्मन लक्ष्य ॥ यमना गयि सर्वालीं स्म
 न किं गन लो वि ४ ४ पा ना या न सं सान सा गन लो यन निन ॥ ॐ अथ दूर्गया न सं सान सा गन यन ना रावका मारुगव ह्या दूर्गदद्या ४ स्मन लम हं कनि
 थ्य ॥ ॥ रुविथ्य सं न स्मन लक्ष्य ॥ स्वयां लिष्ठ नृत्त ला पि विं लय र्त्ता जन न न ४ स्मन न स न गे दूर्गं सच मूय न वधना न॥ अथ वध मूक्तिका मा दूर्ग

दद्याः ४ सगुणस्मरणमहं कविश्व ॥ ॥ अथ कीर्तनस्य ॥ गिवनहस्य ॥ गमाया लंजनं वक्र ४ गमसा राखना दद्याः ॥ गमाया कलत्रयो दद्याः ॥ दवीना मानूकी
 लंन ॥ अथ कलिकलमयो द्युपसमनका भारुगवत्या दूर्गो दद्याः ४ नामानूकी लंनमहं कविश्व ॥ ॥ रुविश्वना मानूकी लंनस्य ॥ इर्गो नामानिर्हं कीर्त्य
 गमाया लोकमहीयन ॥ अथ दूर्गो लोकमहिगत्वकाभा दूर्गो दवीना मानूकी लंनमहं कविश्व ॥ ॥ गिवनहस्यनामा चानलस्य ॥ नामा चानलमागल
 यस्याः ४ कीर्त्या यस्वय ४ रुवत्य वायु कल्याण ४ कल्याणानाधय छिर्वा ॥ अथ यस्वय कृत्य कल्याण वादिकाभा दूर्गनामा चानलमहं कविश्व ॥ ॥ ३८
 अथ दूर्गनस्य रुविश्व ॥ सर्वो वस्त्रं गमायिवा मुक्ता वासवं पागके ४ इर्गो दद्याः ४ सापियया गियनमं यदं ॥ अथ यनमय दयादिकाभा दूर्गो दद्याः
 ४ दूर्गनमहं कविश्व ॥ ॥ रुवे वदूर्गनस्य ॥ दूर्गो यादूर्गनं पूष्यं दूर्गो नादरि वंदनं ॥ वन्दनात्यर्गनं पूष्यं दूर्गो नादरि पूजनं ॥ अथ पूष्ययादिकाभा
 दूर्गो दद्याः ४ दूर्गनमहं कविश्व ॥ ॥ अथ रुवन्दमानस्य ॥ अथ दूर्गो दूर्गनं रुग्य पूष्यं अधिक पूष्ययादिकाभा दूर्गो दद्याः ॥ रुवन्दनमहं कविश्व ॥ ॥

[illegible]

३१

नमो यममने ४ मुनिवशयन ॥ नवमूक नृपांश्चात्वा सयुष्या कनमादाय ॐ नहि दुर्गे महाला गनकार्थममसर्वदा ॥ आवाहयाम्यहं दवि सर्वकामार्थ
सिद्धय ॥ अस्यां मूर्त्तौ समा गच्छ क्लिप्तिं मल्लयया कनू ॥ नकां कनू सदा रुद्र विष्णु धनि नभा मुने ॥ ॐ रुद्र गवनि दुर्गे ॥ हा गच्छ ॥ हनिष्ठ ॥ हसनि ॥ धहिः
॥ हस्ति नारु वसूय स नारु वल्ला वाहना दिवि क्षाय सो व ॥ दियानयूय च नयुगं घाद्या दधनि क्षाय ॐ ऊय नीमं गला काली रुद्र काली कपालि
नी ॥ इमं क्रमा निवाधा नी स्वधा स्वाहानभा मुने ॥ ॥ निमं ॐ ॥ दुर्गे ॥ दुर्गे न कि विस्वा हा ॥ निवामनु मूत्राय ॥ दया द्यं दुर्गा ये नमः ॥ निघाद्या दकं दत्वा
सुवर्णं द्यन्य नमया गच्छ कूं कम विल्व पत्रा कनयूय दधि दुर्वा कू गा यग यगिल के व रुले नर्घ स म्या द्य मूल मनु मूत्राय ॥ धाये ॐ ॥ दुर्गा ये नमः ॥ ह्यर्घ्यः
दत्वा मूल मं नु मूत्राय ॥ दमा वमनी र्यं ॥ दत्वा नी र्यं ॐ ॥ दुर्गा ये नमः ॥ निदत्वा दधि मधू द्य नमल काम कं मधू यर्क मय नी य मूल मनु मूत्राय ॥ यमधू
यर्क ४ ॐ ॥ दुर्गा ये नमः ॥ निदद्यात् ॥ मूल मनु मूत्राय ॥ दं पून ना वमनी र्यं ॐ ॥ दुर्गा ये नमः ॥ निनेव द्य मूल मनु मूत्राय ॥ दम नूल पनं ॐ ॥ दुर्गा ये न

मः निचन्दनं कृमानुलिप्यलमनुमूचायः ॐ इगोयेनमः निपूष्यां कलिगयनेपूजयन् ॥ विल्वपगार्थं कलिमादाय ॐ अमृरुवंशीवृकं गंकन
 सदाधिर्यं । विल्वपगुययचामि यविर्गं नसुनध्वनि ॥ ॐ इगोयेनमः निनिवदयन् ॥ डालपूष्यां आदाय ॐ वक्त्राविकृगिवादीनां डालपूष्यां
 सदाधिर्यं । नरुदगेषयचामि सच्चैका माथेसिद्धय ॥ ॐ इगोयेनमः निनिवदयन् ॥ ज्ञानीचम्य कयद्य कूमदमल्लिका कनवीनरुवादि कूममे
 र्यथासंरुवमवेयन् ॥ अगुनगुल्लुपुल्लु निधूपदयं पागुल्लु कलिगां गावेषु निक्षिप्य मूलमनुमूचायः एषधूप ॐ इगोयेनमः निदद्यान् ॥ १
 वंमूलमनुमूचायः एषदीप एगानिनेवेद्यानि एगानिगामूलानि ॥ दं हि न व्यमग्निदेवगमगानि मुक्ता नत्नानि वनूलदेवगानि ॥ दं कुरु मूलाः
 नागिनादेवर्गं एगानिवासां सिद्धहृत्पनिदेवगानि ॐ इगोयेनमः तूत्तुजन् ॥ १ वंमूलपूजां विदध्यान् ॥ ॥ अथवनलपूजा ॥ गगदद्यादकि
 णदिगि सपूष्या कनमादाय संवाधनपदनावाद्यक्ययित्वा पाद्यादि रिचयवा ॥ १ पूजयन् ॥ ॐ डीजयन्नेनमः ॥ ॐ डी मंगलायेनमः ॥ ॐ डी काः

त्येनमः ॥ ॐ डी रुद्रकाल्येनमः ॥ ॐ डी कपाल्येनमः ॥ ॐ डी इगोयेनमः ॥ ॐ डी गिवायेनमः ॥ ॐ डी क्रमायेनमः ॥ ॐ डी धायेनमः ॥ ॐ स्वधायेनमः
 ॥ ॐ स्वाहायेनमः ॥ पूर्वेराग ॥ ॐ डी वीरुमवदत्वा दद्या १ मी १ पूजयन् ॥ ॐ डी उयचअयेनमः ॥ ॐ डी यचअयेनमः ॥ ॐ डी वल्लाययेनमः ॥ ॐ डी
 वल्लनायेनमः ॥ ॐ डी वल्लयेनमः ॥ ॐ डी वल्लवयेनमः ॥ ॐ डी वल्लुयेनमः ॥ ॐ डी वल्लुकायेनमः ॥ वामदिगि ॥ ॐ डी कानमवयक्रिया ॐ डी उ
 यदंकायेनमः ॥ ॐ डी महादंकायेनमः ॥ ॐ डी उरुदंकायेनमः ॥ ॐ डी कनाल्येनमः ॥ ॐ डी लीमनरायेनमः ॥ ॐ डी विगालायेनमः ॥ ॐ डीः
 मंगलायेनमः ॥ ॐ डी विजयायेनमः ॥ ॐ डी जयायेनमः ॥ दवीपूज ॥ ॐ डी पदमवदत्वा ॐ डी मंगलायेनमः ॥ ॐ डी नचिनेनमः ॥ ॐ डी नूदायेन
 मः ॥ ॐ डी लक्ष्म्येनमः ॥ ॐ डी कीर्त्येनमः ॥ ॐ डी यगल्येनमः ॥ ॐ डी पूष्येनमः ॥ ॐ डी मध्यायेनमः ॥ ॐ डी गिवायेनमः ॥ ॐ डी सांध्येनमः ॥ ॐ डी
 यगायेनमः ॥ ॐ डी गारायेनमः ॥ ॐ डी जयायेनमः ॥ ॐ डी धृत्येनमः ॥ ॐ डी आनन्दायेनमः ॥ ॐ डी सुनन्दायेनमः ॥ अथदक्षिणे ॥ सकलां स्व ३४

पनस्य ॥ श्रीनक्षत्रायथद्युगुग्राहकिसमन्विष्टावलि कांविधिवद्दीनं च लोकाकमदीयन ॥ अथ च लोकाकमहिनत्वकाभाः मूनादुप्यनरु
 गवर्गीदृग्दवीमहंउपयिष्य ॥ ॥ दधिस्रयनस्य ॥ स्नायथद्विधिनावीनदध्वाद्गमिहीयन ॥ नाऊनविमाननगिवलाकमदीयन ॥ अथना
 ऊनविमानकनलगिवनाकमहिनत्वकाभाः मूनादध्वाद्गवर्गीदृग्दवीमहंउपयिष्य ॥ ॥ यंचगद्यनस्य ॥ यंचगद्यनथादृग्गथाचं
 दनवाविना ॥ स्नायथद्विधिवनमले ब्रह्मस्नानं हि नस्मृत् ॥ नथनिगवलाकगुणमध्वकगवाविनासमूचय ॥ नकाहमपिथारुह्या यंचगद्यनचलिः
 को ॥ स्नायथचुयगाहूलसगच्छनलीयनं ॥ अननसाकोकवाक्स्नाननवरुलकथनं यंचगद्यनियुगीकनायल्लयवाक्कवाक्कगाननाध्वक ॥
 अथसूनलीयनगमनकाभाः मूनाकगवाविनयनयंचगद्यनरुगवर्गीदृग्दवीमहंउपयिष्य ॥ ॥ नानायल्लेविश्वहचलिकायनधीमहिगे
 मलागुगमायगाः ४ नचलिपवादया नृगिकालिकायना ॥ ॥ देवीस्नानमकुउक ॥ नवाकनदृग्गमिष्य ॥ ॥ अथ श्रीनयुगकपिलायंचगद्य

१३

स्रयनस्य ॥ कपिलायंचगद्यनयुगकीनयुगनच ॥ स्नानं गगुलं याकमिननस्थाननाधिय ॥ अथद्युगपुरुगीनचस्नानदध्वाकनलकदृग्गस्रयन
 ऊनरुलगगगुलरुलपाफिकाभाः मूनायुगकीनयुगकपिलायंचगद्यनदृग्दवीमहंउपयिष्य ॥ ॥ यंचामृगस्रयनस्य ॥ गिवनहस्य ॥ य
 मनुमुद्दिगिवसं रुगारिषकां यंचामृगेनिनिसूगं अरिषवयं नि ॥ नदिद्यकल्यमनूहयसूनगनाया र्तिषकमकुलंयूननायुर्वेगि ॥ अथदिद्य
 कल्यावच्छिनसूनगनाय उह्यरुनाउलनाया र्तिषकपाफिकाभाः मूनायंचामृगनरुगवर्गीदृग्दवीमहंउपयिष्य ॥ स्नहउद्यस्रयनसर्वेगयव
 लधूमविल्वयगादिद्युल्लेनविद्युथेने सुखाधूवाविनास्रयनं च ॥ ॥ अथरुनस्रयनस्य ॥ रुविथचलिकां स्रयथद्युगुननश्चेरुनसनच ॥
 लेनिकनस्रयाननविष्कनासहमादन ॥ लेनिकनलेवल्लेन ॥ अथलेनिकयानकनलकविष्कसहहर्षकाभाः मूनायुगकीनदृग्दवीमहंउप
 यिष्य ॥ ॥ मधुस्रयनस्य ॥ पिरुनूदिथयादृग्गमिधूनायथसनच ॥ स्नायथद्विधिवरुह्या नथयुल्लरुलं ग ॥ रुकारुवगिपिननस्रयवर्ष

गनदयं॥ अथ वर्षे गनदयावच्छिन्नपिहृदिकाभाः मूनामधूना इगर्गदेवी महंस्त्रययिश्च॥ एवं पायसस्त्रयनपि॥ स्नानद्वयसमूच्चयरुलमि
 त्येक॥ ॥ उदकादिस्त्रयनस्य॥ यो लूमास्थी नवस्थां वा अष्टस्थां वा ननाधिय। स्नाययित्वा शुर्गादूर्गा वा अथय रूलं लरु॥ अथ उदयविगषान
 लखादूदकनापिरुलं॥ अथ महाद्वयां महानवस्थां वा वा अथयय अरु अथय रूलं समरुलपाफिकाभाः मूनानाथन इगर्गदेवी महंस्त्रययिश्च॥ ॥
 वन्दनवानिस्त्रयनस्य॥ स्नाययित्वा नारुक्का गन्धवन्दनवा विष्णु। चंडांशुनिर्मलस्थी मोन वन्दलाकमहीयन॥ अथ चंडांशुनिर्मलत्वथी मेत्वचं
 उलाकमहिगत्वकाभाः मूनासूनरि वन्दनवा विष्णु इगर्गदेवी महंस्त्रययिश्च॥ ॥ सूनरिपूष्यनाथस्त्रयनस्य॥ सूनरिपूष्यनाथन स्नाययित्वा न
 नशगिर्वा। नागलाकं समासाद्य कीठनसहयन्नगे॥ अथ नागलाकपाफिपूर्वकवदूयन्नगसह कीठनकामाः मूनासूनरिपूष्यनाथन इगर्गदेवी
 महंस्त्रययिश्च॥ ॥ डाणपूष्याद्यन्यनमयूगवानिस्त्रयनस्य॥ डाणपूष्यं विल्वपरुं कनवीनात्यलानिच। स्नानकाले यथाकानिदयेयीनिकनातिव

११

॥ अथामकनमंस्नानं कृत्वा वेद्यद्वयान्विगठारुगवत्थेन नारुक्का विष्णुलाकमहीयन॥ अथ इगर्गयानि विष्णुलाकमहिगत्वकाभाः मूनाडाणपूष्ययूग
 वानिष्णु इगर्गदेवी महंस्त्रययिश्च॥ ॥ विल्वपरुं कनवीनात्यलान्यनमयूगवानिस्त्रयनस्य गदवरुलं॥ ॥ हमवानिस्त्रयनस्य॥ स्नाययित्वा ननाइ
 र्गशद्वयाहमवानिष्णु। सोवर्णयानमात्रुटा वसूरिः सहमादक॥ अथ सोवर्णयानानाहनपूर्वकवसूरसहहवकाभाः मूनाहमवानिष्णु इगर्गदेवीः
 महंस्त्रययिश्च॥ ॥ नलवानिस्त्रयनस्य॥ नलवादकनविधिवत्स्नाययद्यक्तुमानवशसदिशं यानमात्रुटा मादकहनिष्णुसह॥ अथ दिशयानाधि
 नाहनपूर्वकहविमहहवकाभाः मूनानलवानिष्णु इगर्गदेवी महंस्त्रययिश्च॥ ॥ कर्पूनवानिस्त्रयनस्य॥ स्नाययद्यक्तुवेदवीं ननः कर्पूनवा नि
 ष्णु। सगन्धयनमंस्नानं यरुहावल्लिकास्किना॥ अथ वल्लिकाधिल्लिगयनमंस्नानगमनकामाः मूनाकर्पूनवानिष्णु इगर्गदेवी महंस्त्रययिश्च॥ ॥
 अथ नूवानिस्त्रयनस्य॥ वल्लिको स्नाययित्वा उद्यद्ययानुवा विष्णु। नन्दलाकं समासाद्य कीठनसह किन्नने॥ अथ नूदलाकपाफिपूर्वकवदूकि

ननसहस्रीठनकामाश्मनाश्चुत्रवात्रिणादूर्गदवीमहंस्त्रयत्रिंशत्॥ॐ॥इतिगोत्रेनमन्त्रिसर्वेननिवदने॥नदकंचक्रुचक्रुचमन्त्रलायाद्यादीनां
वषाठने॥विमनदयत्रानांश्चयूवेयाकांशुलेनवशा॥इतिमिनिचक्रुचक्रुचमन्त्र॥॥अथार्घ्य॥गुरुविश्व॥पृथ्वादकार्यस्य॥दत्त्वाद्यविधिवरुक्त्वा
दूर्गायैपृथ्वावात्रिणा॥संपूज्यमानागन्धर्वेनमनदिविदववन्॥अथगन्धर्वेयुक्त्वामानत्वादूर्गालोकाधिकनलकदववत्कीठनकामन्त्रमपृथ्वादकार्य
रुगवत्कीठनदूर्गाद्वीशुक्त्वामहंदद॥॥गन्धर्वदकार्यस्य॥दत्त्वागन्धर्वदकनहगन्धर्वेसदनवसन्॥अथमित्यनूयकन॥अथगन्धर्वेसदनवास
कामन्त्रदंगन्धर्वदकार्यदूर्गाद्वीशुक्त्वामहंदद॥॥यंचगन्धर्वस्य॥यंचगन्धर्वनदत्त्वायुंचवृजालयवजन्॥यंचवृज४यंचवृज४॥मिवन्मियावन्
॥अथयंचवृजालियगमनकामन्त्रमयंचगन्धर्वरुगवत्कीठनदूर्गाद्वीशुक्त्वामहंदद॥॥द्वादशगन्धर्वस्य॥द्वादशगन्धर्वगनथाद्येलावेलिकांपूजयत्नने
४दगयसहस्रीलावर्षाभादकदिवि॥अथदगयसहस्रीवर्षाविविचित्रस्वर्गधिकनलकहर्षकामन्त्रमद्वादशगन्धर्वरुगवत्कीठनदूर्गाद्वीशुक्त्वामहंद

[illegible]

[illegible]

कथं न कं कर्म देवो दद्यात् नूनं लयनमहं कविष्य ॥ ॥ दवी पूना ॥ ॥ वहु ४ समा नूनं लयनस्य ॥ मद कथं न कांभी नं नाचना वच वहु ४ यं । ॥ न न लेयय
दवी सर्वे कामानवाप्नुयात् ॥ मद ४ कस्तुनिका कोभी नं कं कर्म नाचना ॥ नाचना ॥ अद्य सर्वे कामानवाप्नुयात् ॥ नाचना कं कर्म कथं न कस्तुनिका
देवो दद्यात् नूनं लयनमहं कविष्य ॥ ॥ अथ पूष्यालि ॥ न न दवी पूना ॥ ॥ विहि न ये स्या मा नस्य ॥ न य ४ गी लय ॥ ॥ अथ न पा न व द स्या या न ॥ ॥ दे ग दर्व
सर्वे नूनं लयनं कस्तुनिका ॥ सर्वे नूनं लयनं ॥ अद्य न य ४ गी लय ॥ ॥ अथ न व द या न य व द स्या या न ॥ ॥ स य दान क द ग स व द स्या या न ॥ ॥ न न रु ल स म रु
लयापि कामानरु ४ कस्तुनिका ॥ देवो दद्यात् नूनं लयनमहं कविष्य ॥ ॥ उं दौ देवो दद्यात् नूनं लयनमहं कविष्य ॥ ॥ अथ पूष्यालि ॥ न न दवी पूना ॥ ॥ मल्लिका
मूल्यं लयनं गमी पुन गचम्य कं ॥ अथ कं कस्तुनिका नं व द स्या या न ॥ ॥ क न वी नं गमी पुष्यं कस्तुनिका न ग क स लं ॥ ॥ य ४ य य नूनं लयनं ॥ ॥ अथ पूष्यालि ॥ न न दवी पूना ॥ ॥ मल्लिका
गानिहान न ॥ ॥ अथ कं कस्तुनिका नं व द स्या या न ॥ ॥ क न वी नं गमी पुष्यं कस्तुनिका न ग क स लं ॥ ॥ य ४ य य नूनं लयनं ॥ ॥ अथ पूष्यालि ॥ न न दवी पूना ॥ ॥ मल्लिका

कद्गोन्वचनत्वरुवनका मनसा श्रीमल्लिकारिष्यथैरुगवर्गोद्गोदवीमहं पूजयिष्य ॥ उत्पन्नपद्म गमीयन् ॥ पुनाग चम्यक ॥ अल्लिकान
 डालय्य ॥ कनकोच ॥ गमीय्य ॥ कुमुद ॥ नागक ॥ गालय्य ॥ पूजनयानदवरुल ॥ ॥ दवीयूना ॥ लय्य विगयस्य ॥ पुनाग चम्यक ॥ कन्द ॥ युधिकाव
 कमलिका ॥ नगनाशनमलीच ॥ वृहती ॥ गमयलिका ॥ गथा कुमुद कलान विल्वयाटलमालनी ॥ जवाविचकिला ॥ अक ॥ न कनीलायलानिच ॥ दमनामः
 नृपुनं वगनधाय्य ॥ वृद्धय ॥ अथ ॥ गनय्य कनका कदवीयूजनजयपूज्यगमगुलपूज्य ॥ वृद्धिका मन्त्रिश्चम्यकयूथैरुगवर्गोद्गोदवीमहं
 पूजयिष्य ॥ चम्यकयूथ ॥ कन्दयूथिका ॥ विल्वयग ॥ जामीय्य ॥ जवायूथ ॥ पूजनयानदवरुल ॥ ॥ एवं वकादिकसूमे ॥ पूजनयानदवरुल ॥ ॥
 कनकी कुसुमादिनाञ्जनस्य ॥ कनकी चानि मुकुटं च वंशुकवकुलाययि ॥ कठे च कलिकान्त्रिश्चम्यकसिंदवान ॥ ॥ अथ समृद्धिका मन्त्रिके नकीकु
 सूमेरुगवर्गोद्गोदवीमहं पूजयिष्य ॥ वंशुकादिनाञ्जनयानदवरुल ॥ ॥ कालिकायूना ॥ लय्य ॥ विल्वयगञ्जनस्य ॥ सर्वेनाविल्वयगं दुदद्याथीनिक

१६

दय ३

नयनं ॥ अथ यनमद्गोयानियाफिकामन्त्रिश्चिल्वयनेद्गोदवीमहं पूजयिष्य ॥ ॥ दवीयूना ॥ लय्य ॥ अथ लुविल्वयगञ्जनस्य ॥ विल्वयने नखले
 य ॥ ॥ अथ दवीयूथ ॥ सर्वेयापविनिर्मक ॥ गिवलाकमहीयन ॥ अथ लुविल्वयगञ्जनस्य ॥ अथ सर्वेयापविनिर्मक ॥ गिवलाकमहीयन ॥ अथ लुविल्वयगञ्जनस्य ॥
 अथ लुविल्वयगञ्जनस्य ॥ ॥ दवीयूना ॥ लय्य ॥ विहिनयूथयगञ्जनमस्य ॥ रुक्मा निवत्सर्वे नागुरं किंचिदाप्रयान् ॥ अथ सर्वे
 गुलानवाफिकामन्त्रिश्चिल्वयगञ्जनस्य ॥ विल्वयगञ्जनस्य ॥ गवलीद्गोदवीमहं निवदयामि ॥ ॥ रुक्मिणी अथ गन्धिनयूथाली ॥ प्रथमं मूकयूथयद
 गनिष्क रुलं नृय ॥ अथ गवलीद्गोदवीमहं निवदयामि ॥ ॥ रुक्मिणी अथ गन्धिनयूथाली ॥ प्रथमं मूकयूथयद
 रुदद ॥ ॥ अथ गन्धिनयूथाली ॥ अथ वदधनश्च वदधिनयूथाली ॥ काचनस्य दगनिष्क रुलद्विगुल रुलमित्यर्थः ॥ अथ गवलीद्गोदवीमहं निवदयामि ॥
 अथ गन्धिनयूथाली ॥ अथ वदधनश्च वदधिनयूथाली ॥ काचनस्य दगनिष्क रुलद्विगुल रुलमित्यर्थः ॥ अथ गवलीद्गोदवीमहं निवदयामि ॥ ॥ अथ पूथमालाना

रुविष्ठा ॥ कनवीन ॥ ला ॥ कनवीन मुञ्जालि ॥ पूजयद्यमुचुवठिकां । शानिष्ठा मरु लं लवा सूर्य लाक मही यन ॥ अद्यानिष्ठा मय रूज न्य
 रुल समरु लयापि पूर्वक सूर्य लाक महि गत्व काम आरि ४ कनवीन पूष्य माला रि र्गव गींद गोदवीं पूजयिष्ठा ॥ मूल मनु मूत्राय ॐ द गोथेन
 मरु नि निवेदय न ॥ ॥ अथ यद्य मालाया ॥ पूजयित्वा न नारु र्का वठिकां यद्य मालया । आनिष्ठा मरु लं पाथ सूर्य लाक मही यन ॥ अद्यानि
 ष्ठा मय रूज न्य रुल समरु लयापि पूर्वक सूर्य लाक महि गत्व काम नया नया यद्य मालया द गोदवी महं पूजयिष्ठा ॥ ॥ वक पूष्य माला गयस्य
 ॥ वक पूष्य मुञ्जालि ॥ पूजयद्यमुचुवठिकां । वाजययस्य यरू सूर्य लां विन्द मिमानव ॥ अद्या वाजययस्य यरू ज न्य रुल समरु लयापि काम आरि च
 क पूष्य माला रि र्गव गोदवी महं पूजयिष्ठा ॥ ॥ डा ॥ पूष्य माला गयस्य ॥ डा ॥ पूष्य मुञ्जालि ॥ पूजयद्यमुचुवठिकां । वाजययस्य रु लं पाथ ग क ला कः
 मही यन ॥ अद्या वाजययस्य यरू ज न्य रुल समरु लयापि पूर्वक ग क ला क महि गत्व काम आरि डा ॥ पूष्य माला रि र्गव गींद वठिका महं पूजयिष्ठा ॥ ॥

१०

गमी पूष्य माला नां ॥ गमी पूष्य मुञ्जालि ॥ आर्यो सं पूष्य यद्यया । गमरु लं पाथ विष्णु लाक मही यन ॥ आर्यो द गो ॥ अद्या गमरु लं पाथ न रूज न्य रुल
 समरु लयापि पूर्वक विष्णु ला क महि गत्व काम न गारि ४ गमी पूष्य माला रि र्गव गींद गोदवी महं पूजयिष्ठा ॥ ॥ क ग पूष्य माला गयस्य ॥ पू
 जयित्वा न नारु र्का वठिकां यद्यया विधिवन्नुय । क ग पूष्य मुञ्जालि ॥ यि र्ग ला क मही यन ॥ अद्या यि र्ग ला क महि गत्व काम न गारि ४ क ग पूष्य माला रि र्गव
 गोदवी महं पूजयिष्ठा ॥ ॥ सूर्य रिद द्य वासि ग पूष्य माला या ॥ सूर्य गन्ध गन्ध पूष्य मुञ्जालि ॥ पूजयद्यमुचुवठिकां । माला रि माल या वापि सां ग मध रु लं लरु
 न ॥ सूर्य गन्ध गन्ध पूष्य ४ क पूष्य नादि सूर्य रिद द्य वासि ग पूष्य ४ ॥ अद्या गन्ध मध यरू य न्य रुल समरु लयापि काम नया नया सूर्य रिद द्य वासि ग पूष्य
 मालया द गोदवी महं पूजयिष्ठा ॥ सूर्य गन्ध वासि ग वाज गी यरु नि पूष्य माल या पूज नथ गद व रु लं ॥ ॥ नव ग्रां सूर्य रु लं विल्व य ग माला या ॥ अ
 गि हा ग य न विष व दे व दां ग या न ग । सूर्य व र्ण नां सूर्य व र्ण य ग न द रु रु य रु लं ॥ न रु लं ल रु न ना रू ज यित्वा न वठिकां । माल या विल्व य ग नां नव ग्रां

उग्रुलनरु ॥ सुवर्णस्य हि वक्षस्य स्रग्धोर्नामालका नोदवंशश्रीयस्रवर्णमालकगनदहयत्कलं गदमाश्रयादित्यथे ॥ वयुनर्गुलुनासमूत्रय
 ॥ कविदोग ४ उग्रुलनरुध्रया ॥ ध्रुवाधिहिपूजायका नवभ्रुगवध्रुवाहनिह नपि वृत्तमवद्याख्या नं ॥ अद्याग्निहोत्रनिनगवदपात्रगवाक्ष
 संयदानकस्रवर्णमालकगनदानरुलसमरुलयाफिकामनयासुग्रुलुवित्त्वयगमालयारुगवर्गोदगोदवीमहंयूजयिष्य ॥ ॥ वित्त्वय
 गमालादयस्य ॥ मालादयनसंयूज दगोदवीननाधिय ॥ वित्त्वय कस्ययगाधोनाजस्रयरुलंलरु ॥ अद्यनाजस्रययरुलसमरुलयाफिकामावि
 त्त्वयगमालादयनामनारुगवर्गोदगोदवीमहंयूजयिष्य ॥ ॥ नीलात्यलमालानां ॥ नीलात्यलमजोरिमुपूजयद्यमुवठिका वाजययरुलंयायाः
 नूडलाकमहीयन ॥ अद्यवाजयययरुजयरुलसमरुलयाफिपूर्वेकनूडनाकमहिगत्वकामनगारिनीलात्यलमालारिदोदवीमहंयूजयिष्य ॥ ॥
 नीलात्यलसहस्रमाला ॥ नीलात्यलसहस्रयावेमालोययच्छनि ॥ दगोयाविधिवदीनगस्यपूष्यरुलंलरु ॥ वषेकाटिसहस्राणिवषेकाटिगमानिच ॥

१०

दगोयानूचनारुत्वा नूडलाकमहीयन ॥ सन्धिश्चान्दसत्वा ॥ अद्यवद्वषेकाटिसहस्रवद्वषेकाटिगनावच्छिन्नदगोनूचनत्वरुवनपूवेकनूडलाकम
 हिगत्वकामनया नीलात्यलसहस्रमालयारुगवर्गोदगोदवीमहंकनिष्य ॥ ॥ जमीकसूममालाया ॥ अद्यसोणमणियरुजयरुलसमरुलयाफिपूर्वे
 कविष्णुलाकमहिगत्वकामोचनयाजमीकसूममालयारुगवर्गोदगोदवीमहंकनिष्य ॥ ॥ अनूलिफस्रगन्धियूष्ययूजिनदगोयाकालवृंनवीऊनय ॥
 रुविष्य ॥ विलिफांयूजयदगोदिव्ययूष्याधिवाहिर्गा ॥ मालवृंननसंयूज महास्रगरुलंलरु ॥ अगलयनानकनयूजनमंगं ॥ वीजनरुलयवठान ॥ अः
 यमहास्रगजयरुलसमरुलयाफिकामनया मालवृंननूलिफस्रगन्धियूष्ययूजिर्गादोदवीमहंकनिष्य ॥ ॥ हमयूष्यस्य ॥ दवीयना ॥ मलिमी
 किमालाग्यविगानेवदरुलजं ॥ यथादिहवेदादत्वाहमयूष्यरुलंलरु ॥ अद्यवद्वमलिमीकिमालादरुलवितानद्यथादिहावेकालिकदानरुल
 समरुलयाफिकामनगारिहमयूष्यरुगवर्गोदगोदवीमहंयूजयिष्य ॥ ॥ आदित्ययना ॥ सुवर्णवर्णनय ॥ निविसन्निगिवालाकसदायज्ञैर्यज्ञनिच ॥ स

वेदानरुयंनसां ज्ञायननासंगयः॥ वियन्नपचिन्ः पूरेः पोरेः (वेवसमन्नः॥ शियासदेवशुश्रूष ह मयूष्यः॥ गिवाचैना न॥ गिवाइगे॥ अद्यदगे
 लाकनिवाससाचैकालिकवद्रुयद्रुयाजित्वसदा रुयालावपुत्रयोग्यचिद्वगत्सदायीरुसुख कामगति हेमयूष्ये रुगवर्मा इ गेदवी महं पूजयि
 थ॥ ॥ अथधूपयकनली॥ गरुविश्वपूना॥ गुग्गुलुधूपय॥ सर्वेषामवधूपानां इर्गाया गुग्गुलुपियः॥ अद्यदगेयीनि कामः॥ मेगुग्गुलुधू
 पंरुगवर्मा इ गेदवी रुय महं दद॥ ॥ सद्य न गुग्गुलुधूपय॥ द्यनयूकाविगधल सनर्गयीनिवर्द्धनः॥ अद्यसाचैकालिकदगेयीनि विवृद्धि
 कामः॥ मेसद्य न गुग्गुलुधूपयं इ गेदवी रुय महं दद॥ ॥ धूपार्थं दवदवसि द्यनगुग्गुलुयाजिनः॥ गृहानवनदमार्गं इर्गेदविनभाशुन॥ नि
 निवदथन॥ ॥ अगुन्रधूपय॥ अगुन्रधूपमावद्यवा जयय रुलंलरुन॥ अद्यवा जययय रुजय रुलसमरुलपाफि कामनया॥ ममगुन्रधूपं
 इ गेदवी रुय महं दद॥ ॥ कृष्णगुन्रधूपय॥ सित्यगुन्रननादत्वा गोसहस्र रुलंलरुन॥ गित्यं गुन्रः कृष्णगुन्रः॥ अद्य गोसहस्रदान जयरुल

११

समरुलपाफि कामः॥ मेगित्यगुन्रधूपयं इ गेदवी रुय महं दद॥ ॥ सद्य न महिषाक गुग्गुलुधूपय॥ महिषाकं द्यनाकनु द्वावित्वमथापिवा।
 वाजयय रुलं पाथ सूर्यलाकमहीयन॥ वित्वमपि द्यनाकमकसाधननासध्वान्॥ अद्यवा जययय रुजय रुलस रुलपाफि पूर्वक सूर्यलाकमहि न
 त्वकामः॥ मेसद्य न महिषाक गुग्गुलुधूपयं इ गेदवी रुय महं दद॥ ॥ सद्य न वित्वरुलधूपय॥ अद्यवा जययय रुजय रुलसमरुलपाफि पूर्वकः
 सूर्यलाकमहि न त्वकामः॥ मेसद्य न वित्वरुलधूपयं रुगवर्मा इ गेदवी रुय महं दद॥ ॥ सद्य गृगुन्रसद्य न महिषाक गुग्गुलुवित्वरुलान्यनलधू
 यय॥ सद्य गृगुन्रधूपयन पीठिना सचैर्मंगला॥ गोधयत्यायकलिर्न यथागि विवर्काचर्न॥ सद्य गृगुन्रधूपयन कृष्णगुन्रसद्य न महिषाक गुग्गु
 लुवित्वरुलधूपयानन्यनव॥ अद्यदगेयीनि पूर्वक यायकलि न विगुद्धि कामः॥ मेसद्य गृगुन्रसद्य न महिषाक गुग्गुलुधूपयं रुगवर्मा इ गेद
 वी रुय महं दद॥ ॥ सद्य गृगुन्रसद्य न वित्वरुलधूपय॥ अद्यदगेयीनि पूर्वक यायकलि न विगुद्धि कामः॥ मेसद्य गृगुन्रसद्य न वित्वरुलधूपयं

[illegible][illegible]

दीपयुधानंथादद्याद्देवनवाक्कलषुच। ननदीपयुधाननश्रुक्रयांगनिमायूयागु॥ अद्याकथ्यगमिप्रापिकामनया॥ मंदीपंरुगवत्येदुः
 गोदयोकुल्यमहंदद॥ ॥ दीपवृष्ट्या॥ रुविष्टयूना॥ ॥ अग्निमालमयंकलानांनादीपसमन्विनं। दीपवृकसमृद्धाधुदगोया॥ ४५॥ नना
 नृय॥ दत्ताकल्यायुनंसागुं दुर्गलोकमहीयन॥ अग्निमानमयंलोहयटिर्न॥ अद्यासायकल्यायुनसमयावच्छिन्नदुर्गलोकमहिगत्वकाम॥ मंअग्निमा
 नमयसम्बद्धाधिननांनादीपसमन्विनदीपवृष्टेरुगवत्यादुर्गदद्या॥ ४५॥ ननाहंदद॥ ॥ कार्तिकामावास्यायांनवश्रावाद्युनदीपसंघातस्य॥ क २३
 लिंककृयोदित्यपकृम्यद्युननकृनुगादूलासावास्यायांकुगकिंन॥ विष्णवनानवश्रांरुह्याश्रदासमन्विन॥ यावन्नंदीपसंघातंयुननायुय
 वाधिनं। नावत्कल्यसहजालिदुर्गलोकमहीयन॥ वाधिनंकृयोदित्यर्थेय॥ नावदीह्यद्यदीपसंघातमिह्यननद्वेनीयविनिथागादीपसंघातसम
 र्ख्ययांकल्यसहजाधमवच्छेद॥ अद्येनद्युनयूदुदीपसंघातसमर्ख्यकल्यसहजावच्छिन्नदुर्गलोकमहिगत्वकाम॥ मंयुनयूदुदीपसंघा

नंरुगवत्येदुर्गदयोकुल्यमहंदद॥ ॥ अथनेवद्यानि॥ नगरुविष्टयूना॥ ॥ गुठखलुअसंमिश्रनस्य॥ गुठखलुअसंमिश्रमन्नंदत्वानन
 धिय। वेष्टवस्यरुलंयाशस्त्रयेलोकमहीयन॥ वेष्टवस्यविष्टदवनाकयागस्य॥ अन्नंयायसपिष्टकयूनिकायूपरुक्रमलुकयलुनिसिद्धानं॥
 अद्यवेष्टवयागजुन्यरुलसमरुलयापिपूर्वकंरुलयेलोकमहिगत्वकाम॥ नानिगुठखलुअसंमिश्रानि रूगवत्येदुर्गदयोकुल्यमहंदद॥ ॥
 गुठदिक्कनद्युनयकानानां॥ गुठखलुकनानांनवश्रासंकेतयानृय। द्युननयनियकानांप्रदानादुक्कल॥ ४५॥ यादामीनिगव॥ अद्यवद्यय
 दयापिकाम॥ नानिगुठसाधिनद्युनयकानानिखलुसाधिनद्युनयकानानिवागर्कनासाधिनद्युनयकानानिवागवत्येदुर्गदयोकुल्यमहं
 दद॥ ॥ गत्यादनादिनेवद्यस्य॥ गत्यादनंनसानांच। पानंवदनंनथा। यद्ययच्छुनिदुर्गयेसगकुनिगिवालये॥ गिवादुर्ग॥ अद्यगिवालये
 गमनकामनया॥ नानिगालिरुक्कानिस्त्र्यंजनानिरुगवत्येदुर्गदयोकुल्यमयादहानि॥ ॥ नसानानिवदनस्य॥ अद्यगिवालयेगमनकामनः

या ॐ मां न सानां रुमवहोदगोदवो रुममहंदद ॥ ॥ न साना ल क ॐ ह्य कान मा भु ॥ ॐ व द ह द धि से र्क नाय य ४ सा धि न न्द्र म नि वा व द्धु र्गि ना
॥ न ग या व स न पु न या नृ ॐ का म दं न क नू न न स ल या ॥ ॐ न्द्र ४ क यू नं ॥ ॥ व न द या न क स्य ॥ नू द्य गि वा ल य ग म न का म ॐ दं व न द या न क रू ग
वहोदगोदवो रुममहंदद ॥ ॥ या न क ल क ॐ वै द्य मा भु ॥ ॐ उ म म न च्वा या न कं स न री क र्म ॥ न द व ख ॐ मृ द्दी का ग र्क ना स हि र्मं य न ४ ॥ र्ग
मूं स गी र्कं स हि र्मं या न कं स्या नि न ह्य र्ग ॥ य ल व का ॐ को ला नां रु द्यं वि र्ग र्गि या न कं को ला नां व द ना ॐ ॥ ॥ दृ ग र्ग र्क ना स हि र्ग या य स स्य ॥ या य १४
सं दृ ग र्ग र्कं र्ग र्क ना स हि र्मं य न ४ य ४ य य क्ति दृ ग र्ग र्क ना स र्क क न क्ति र्ग ॥ नू द्य क न क्ति र्ग ना स र्क या धि का म ॐ दं स दृ ग र्ग र्क ना या य र्ग रू ग व हो द
गोदवो रुममहंदद ॥ ॥ का लि का य ना ॐ ॥ स र्ग र्क न या य स स्य ॥ अ मि र्कं य न मा नं व द धि वा यि स र्ग र्क नं ॥ म हा द वी नि व द्ये व वा जि म ध रू लं ल रू
ग ॥ अ र्ग र्ग म ध य रू रू रू रू ल स म रू ल या धि का म ॐ र्ग र्क ना या य र्ग रू ग व हो द गोदवो रुममहंदद ॥ स र्ग र्क न द धि दान य न द व रू लं ॥ ॥

[illegible]

स्थितिदेवगानिरुगवहोदुर्गादयोऽस्त्यमयादहानि ॥ आसुखरू नवीरुयूनामन्यमदानयनदवरुलं ॥ ॥ रुलमानुदानस्यदवीयूना ॥
 ॥ रुलमूयकथ ॥ रुक्मनिवदथस्तर्चनार्थं कविदासुयान् ॥ अथसर्वोत्तमानवाफिकामनगानिरुलानिवनस्यनिदेवगानिरुगवहोदुर्गादवीडु
 स्थमहंदद ॥ ॥ विष्णुधर्मोत्तमवक्ररुलदान ॥ रुलानिदत्तादवेत्यसुरुलंविन्दनिकियां ॥ अथक्रियासांरुलयाफिकामनगानिकदत्तादिरुला
 निवनस्यनिदेवगानिरुगवहोदुर्गादयोऽस्त्यमहंदद ॥ ॥ कालिकायूना ॥ नालिकलादिरुलान्यममया ॥ नानेगंकमूर्कंदत्तावचकंकनमहं
 कं ॥ सोलास्यमकुनंयायदवीलोकमहीयन ॥ नालेगंनालिकलंकमूर्कंउवाकंनूचकंवीरुयूनकंकनमहंकंयानीयामनकं ॥ अथाकुनसोलास्यया
 फियुर्वेकदवीलाकमहिनस्यकामनगानिनालिकलरुलानिपूगरुलानिवायानीयामनकरुलानिवावनस्यनिदेवगानिरुगवहोदुर्गादयोऽस्त्य
 महंदद ॥ ॥ कालिकायूना ॥ रुक्मनिवदनस्य ॥ रुक्मनियेवकेदवीदहेनवानिउथनि ॥ रुक्मंरुक्मंवलंरुक्मंययंवाथंययंमं ॥ यनमाः

११

त्रंयिष्टकंचयावकंकुसत्रंनथा ॥ मादकंपृथुकादीनिकन्दूयकानिवात्तुजम् ॥ हनिष्मात्यादनंदिद्यमाअयूकंसगकंनं ॥ निवदथमहादयोसर्वो
 लिष्टंरुनानिव ॥ श्रीनादीन्यथगशानिमहिषानिचसर्वेगशसर्वेष्टांरुलजानीनांमध्यदवीपियंरुलं ॥ नालेगंवकपित्तंचडाकाकमूर्कमेवच ॥ कव
 कंनूचकंकालंरुक्मंयनसंगथा ॥ वक्रुनंवमधूकंचनासांनामनकमयि ॥ अकनंयिषुखरूनंकनूलीशिरुलंनथा ॥ अइम्वनंचयूनागंरुयंयंक
 कंटीरुलं ॥ काम्बनंवापिखरूनंवीरुयूनंचरुलं ॥ हनीनकीचामनकंषष्टिधंनगनंगकं ॥ गंगटकंकलगनंचगात्तुर्कंचमृष्टालकं ॥ नवमादीनिवा
 नानिदवीसर्वोलिवात्तुजम् ॥ सर्वेगयूयकंदुर्गायनमयीनिःरुलं ॥ ॥ कायकानस्य ॥ अथवक्रुतागलागित्वकामनयागनकायकानदंविष्णु
 देवगारुगवहोदुर्गादयोऽस्त्यमयादहानि ॥ ॥ सुधूपिकजलस्य ॥ अथदुर्गायनिकामनयागदंरुधूपिकजलंरुगवहोदुर्गादयोऽस्त्यमहंदद ॥ ॥
 अथगामूलदानस्य ॥ अथदुर्गायनमयीनिकामनयागध्वंलाकयाफियुर्वेकविष्णुलाकगमनकामनयावानगानिगामूलानिगध्वंदेवगानिरुग

वहोदगोदवीकुसुमहृदद ॥ ॥ अथ वक्रदानस्य ॥ विष्णुधर्मोक्तम् ॥ वक्रदानं नलाकमिन्द्रगन्धर्विजायते ॥ अथ नलाकाधिकनलाकसूत्रगत्वं
रुवनकामन्दवर्गवृहत्स्यनिर्देवर्गं रुगवहोदगोदवीकुसुमहृदद ॥ ॥ ननु सन्तानसन्तर्जं नंजिनं नागवक्रना । दर्गदविरुजयीनिवाप्तम्
यन्निधीयर्गं ॥ निनिवदथम् ॥ नवमप्ययि ॥ ॥ विविगवक्रगयस्य ॥ रुविथ ॥ वक्रालिसूविचिगालि सृष्मालिवमृदुनिच । यथयचक्रनिर्दग्
ये सुगच्छुनिनिवालयं ॥ यावन्नसन्तवावीननष्ववक्रष्वकीर्तिनाष्टमावद्वर्षसहस्रालिमाद्वर्षकालयं ॥ अथ निवालयगमने न द्वन्द्वं न सुप्तमर्षं १४
स्ववर्षसहस्रावच्छिन्नचक्रिकालहर्षकामनानि सूविचिगसू अष्टवक्रालिवृहत्स्यनिर्देवगानिरुगवहोदगोदवीकुसुमहृदद ॥ ॥ अथालं
कनलदानस्य ॥ ननु नद्विष्याला ॥ मूकदाद्यलंकनलस्य ॥ अलंकालमुयादद्याद्विषयाथसूवायवा । सगच्छदानलंलार्कं नानारुनलरुषिगशाज्ञान
पृथिव्याकालने ममादीययतिरुवम् ॥ अलंकालामूकदादि ॥ सूनाथनिर्पुल्लस्याविनक्रलद्गर्गसंयदानकदानयीदंरुलं ॥ अथ नानारुनलरुषिग

सर्ववृत्ताला कगमनपूर्वक गत्तो किक क्षीययनित्वरुवनकामः दं ह म कू मे टालं क न लं व क्रि देव गं रु ग व लो दू र्गा द शो ड श्य म हं द द ॥ ॥ ह म मू क
ट द्य ष्ठा रु न ल क ट क क यूर नो गु नी य क कां वी नू यून पा द क ट क पा दो गु नी य का न्य म मालं क न ल दान य म द व रु लं ॥ ॥ वि ष्णु ध मारु न श लं क न
ल दान य ॥ वि ष्णु ष ल य दान न ना जारु व नि ष्णु ग न ॥ वि ष्णु ष ल म लं क न ल कि नी टा दि ॥ अ द्य ष्णु ग ना धि क न ल क ना जारु व रु व न का म न या दं द म लं क
न ल य था दे व गं रु ग व लो दू र्गा द शो ड श्य म हं द द ॥ ॥ गं र्व नू य व ल य हा ना द्य लं क न ल दान य म द व रु लं ॥ ॥ ह म गि ल क श्य ॥ रु वि श्य ॥ स व र्ण नि
ल कं य ष्णु रु ग व लो य य च्छु । स ग च्छु नि य न ष्णु नं य रु सा य न मा क ला ॥ अ द्य य न म क ला त्म क दू र्गा धि क्षि त य न म ष्णु न ग म न का म दं क न क म य नि ल
कां व क्रि दे व गं रु ग व लो दू र्गा द शो ड श्य म हं द द ॥ ॥ ह म ला व न यो ॥ सो व र्ण अ क्रि टी य ष्णु व लु का यो य य च्छु नि । ग स ह म रु लं या य स्य र्ण ला क म
ही य न ॥ अ द्य ग स ह म दान रु य रु ल स म रु ल या यि पूर्व क स्य र्ण ला क म हि ग त्व का मः ह म ला व न व क्रि दे व गं रु ग व लो दू र्गा द शो ड श्य म हं द द ॥

हम कांची दानस्य ॥ अली सुख दानन मही सागनमखलां । प्रमालि निहता मिश्राना रुकार्यो विना न ॥ अथ गुरु निहनन सूत्रे कसागनवलियन
 मही गभकत्व कामः मां हम कांची मन्त्रि देव गौरु गवह्ये दूर्गा देवो उल्लमहं दद ॥ कांची अली सुख ॥ ॥ हम नृपुनस्य ॥ पादारु नल दानन लून
 सूत्रे न विंदति ॥ अथ निखिल दूर्गा धिक्लि गल्ल नलारु कामः मो नृपु नो वद्वि देव गौरु गवह्ये दूर्गा देवो उल्लमहं दद ॥ ॥ हम यथा नस्य ॥ सुव
 धू नृ वृह ॥ अं दवमवै यल न यथै न यय च्छु नि । गस्य लो क निवसति ॥ अथ दूर्गा ला का धि क नल क निवा स काम नरि ४ सुव धू यथै र्ग व गी दूर्गा २१
 दवी मरु मवै यि ॥ दूर्गा ये सुव धू दानस्य नद व रु लं ॥ ॥ विष्णु धर्मो ह न सुव धू दानस्य ॥ न न ४ सुव धू दानन सवो क्ता मा स म स्त्रे न ॥ अथ सर्व
 कामा वा फि कामः दं सुव धू मन्त्रि देव गौरु गवह्ये दूर्गा देवो उल्लमहं दद ॥ ॥ वन वसु दानस्य ॥ गिव न ह स्य ॥ दा धू य न क न क द लु विना जि
 ने म्भ सर्वो मने ४ य व न क ल सु न्द नी रि ४ दि श्या च न मु ग न्ध ल य न रु षि गौ ग ४ रु त्वा मृ ठा नि रु व न व न व सु पू र्जा ॥ मृ ठा नी च लु का ॥ अथ क न

कदलु विन विन वदु सञ्जाम न क नल क य व ल क लु व दु स न्द नी वी अ मान ल दि श्या च न मु ग न्ध ल य न रु षि गौ ग ल्वा कामः दं व न य द व रु
 वृ ह स्य नि दे व गौरु गवह्ये दूर्गा देवो उल्लमहं दद ॥ ॥ वदु हम पाग दानस्य ॥ रु वि श्या य ना ल ॥ ले नि क स्य उ पा गा लि दूर्गा ये य ४ य य च्छु नि ।
 गस्य य ल रु लं पा कं ना ना ग ल य दं दि वि ॥ ले नि क स्य सु व धू स्य ॥ अथ दूर्गा ला का धि क नल क ना ना ग ल य द या फि काम न ना नि ह म पा गा लि वे
 द्वि देव ना नि रु ग वह्ये दूर्गा देवो उल्लमहं दद ॥ ॥ गं क्ता य क यो ल्य व दू त्व वि क ल्य ४ ॥ उल्ल मा थै द वि द या वि नि वा अ ल षा न ॥ ॥ न उ न या
 न दानस्य ॥ निष्क का टि सु व धू स्य आ द द्या दं द पा न ल ॥ दूर्गा यो रु ल म कं उ न उ न स्य न ना धि कं ॥ न उ न स्य पा ग नृ य स्य ॥ नृ गे पा गा नृ ॥ अथः
 व द या न गे वा क्ता र्ग स दान के निष्क का थ व च्छि न सु व धू दान न न रु ला धि क रु ल या फि कामः दं न उ न या र्ग व न्द दे व गौरु गवह्ये दूर्गा
 द धू उल्लमहं दद ॥ ॥ म पाग दानस्य ॥ हम पा गा लि य द त्वा पू र्ण स्या दं द पा न ल ॥ ना म पा ग य दान न द धू ग न सु र्ग ल रु न ॥ अथ

वद पात्रगोत्राभापरा... काननकासीयवदहमयात्रदाननन्यरुलमगुरुलयापिकामन्दंमात्रयागमादित्यदेवर्गवलेदुर्गा
 दशैकुल्यमहंदद॥ ॥मृन्मयपात्रदानस्य॥नामयात्रयदाननन्यरुलंवेदपात्रग।नस्यावृणुलंयार्कंदत्वामृन्मयमादनात्॥दुर्गाथे
 पात्रयात्रीनस्यालंथानागुसंगयथा॥मृन्मयपात्रमिनिगयथा॥अथवदपात्रवाक्कायसंयदानकनामयात्रदाननन्यरुलसमरुलयापिकामन्दंमृ
 न्मयपात्रंरुगवलेदुर्गादशैकुल्यमहंदद॥ ॥दवीस्नानपूजापथागिकलगादिदानस्य॥विष्णुधर्मोक्तम्॥उपस्कनयदाननन्ययमात्रात्
 नुरुमां॥उपस्कनस्नानपूजाद्यपथागिकलगादिगामयी॥अथानुरुमयीयापिकामन्मानिदवीस्नानापथागिकलगादियागालिरुगवलेदु
 र्गादशैकुल्यमहंदद॥दवीपूजापथागियागादिदानस्यनदेवरुलं॥ ॥दयेलदानस्य॥रुविश्व॥वन्द्यांशुनिर्मलंस्वच्छंदयेलंमलिरुविनं।
 यथैकलारिर्गदत्वा नानामाल्यापलयने॥दुर्गायाःपूजनकालागच्छयापनयान्विग्नानांरुलंयथाहंगलाकमहीयन्॥हंसलाकसूर्ये

१४

लाके॥अथवाजसूययजूज्यरुलसमरुलयापिपूर्वैकहंसलाकमहिरुलकामन्दंवन्द्यांशुनिर्मलमलिरुविनंनानामाल्यापलयनायगारिग
 यथैकदयेलंविष्णुदेवर्गपूजनारुगवलेदुर्गादशैकुल्यमहंदद॥ ॥चतुर्दानस्य॥गिवनरुल्य॥दद्याच्चययनमरुकियुनारुवायायच्छाविना
 नमथचामलचक्रवर्तित्वकामन्दंचक्रमूलांनिनादेवर्गवलेदुर्गादशैकुल्यमहंदद॥ ॥कनकदधुधवलचक्रदानस्य॥रुविश्व॥गंखरु
 दन्दर्शकागंयवालमालकूलं।हमदधुमयंचक्रुंदुर्गाथेयययचक्रि॥सचक्रुलविचिगुलकिंकिनीजालमालिना॥धार्यमलिनंनिनसिहंनला
 कमहीयन्॥अथविविगुकिंकिनीजालमालिमरुकायनिधार्यमानेचक्रकनकाकहनलाकमहिरुलकामन्दंहमदधुमयमलिरुविनधवल
 चक्रमूलांनिनादेवर्गवलेदुर्गादशैकुल्यमहंदद॥ ॥विष्णुधर्मोक्तम्॥नीयचक्रदानं॥यानंगयासुनंचक्रंयादृक्वाप्रापानही।वाहनंर्गाव
 धमेकृन्निगगत्वाददापि॥गुकेकस्मादवाधानिवक्षिषामरुलंनन॥वाहवदत्वायकयार्संयदानवदत्तं॥अथवक्षिषामयजूज्यरुलसम

रुलयापि कामं ददं नानिना देवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ सिगच्छुगदानस्य ॥ नाकलिं गं यदानं नानाचरुवगि किं नो ॥ ना
 कलिं गं कनकं ददं सिगच्छुगं वामनादि ॥ अथ किं निना अयापि कामं दं सिगच्छुगं मूलानां निना देवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ अ
 थ वामलस्य ॥ अथ किं निना अयापि कामं दं वामनं वायुदेवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ गिवनहस्य वामनदानस्य ॥ अथ कयू
 नहानमलिं कुलं रुषिगलननाधियगित्वं रुगलचक्रवर्त्तित्वं कामं दं वामनं वायुदेवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ नामदं वा २९
 मनस्य ॥ रुविश्या ॥ नामदं विचिरं वेदुर्गोदशैः संययच्छति ॥ सगच्छुगियं नमं माहृणां लाकघृजिर्गं ॥ नामदं वामनमव ॥ अथ लाकघृजिगयिह
 गलयनमल्लनगमनकामं दं नामदं विचिरं वामनं वायुदेवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ कनकदं वामनस्य ॥ नृकदं वि
 चिरं यश्चामनं संययच्छति ॥ वायुलाकं समासा अक्षीरुगवायुना सह ॥ अथ वायुलाकपापि पूर्वकं वा अक्षरुकीरुनकामं दं कनकदं विचिरं

वामनं वायुदेवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ सुवर्णमागच्छति नदं वामनस्य ॥ सर्वसावर्ण्यं नदत्वा च मनमूलं ॥ इगोदशैः न
 वल्लभं वक्ष्मलाकमहीयते ॥ सर्वसावर्ण्यं न सुवर्णमागच्छति न ॥ अथ वक्ष्मलाकमहिगत्वकामं दं सर्वसावर्ण्यं वामनं वायुदेवर्गं रुगव
 त्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ मलिदं वामनस्य ॥ आर्यायाश्चामनं दत्वा मलिदं विरुषिर्गं ॥ सुवर्णं नो यचिरं कुदुर्गोलाकमहीयते ॥ अथ
 इगोलाकमहिगत्वकामं दं सर्वसावर्ण्यं नो यचिरं मलिदं विरुषिर्गं वामनं वायुदेवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः कुलमहं ददं ॥ ॥ नानावर्ण्यं विचिरं
 मायूनयकं वा रुनस्य ॥ रुविश्या ॥ मायूनयकं रुनं नानावर्ण्यं विचिरं ॥ रुगवत्तुर्गोदशैः ननादत्वा लरुदुर्गं सुवर्णं ॥ वक्ष्मसावर्ण्यं वक्ष्मसावर्ण्यं
 यचिरं गवर्ण्यं मिथ्यार्थं ॥ अथ वक्ष्मसावर्ण्यं कं रुनं रुनं रुलसमरुलयापि कामं दं नानावर्ण्यं विचिरं मायूनयकं रुनं वायुदेवर्गं रुगवत्तुर्गोदशैः
 कुलमहं ददं ॥ ॥ विचिरं कर्मोपगारिणं गालं रुनं दानस्य ॥ गालं रुनं महावाहा विरुकर्मोपगारिर्गं ॥ रुगवत्तुर्गोदशैः ननादत्वा विष्णुवर्ण्यं

लं० ॥ नालवृत्तं यजुर्न ॥ वसुवस्य विष्णुदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ अष्टादानस्य ॥ अथ कयुत्तुहानमलिकुलविष्णुविगलननाधियमित्वरुगलवक्रव
 हित्वकामं मां यच्छा विष्णुदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ अथ गय्यादानं ॥ गजविष्णुधर्मो नीयगय्यादानं ॥ अथ वक्रिष्णमयः
 रुगलसमरुलपायिकामं मां गय्या विष्णुदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ आदित्यपूजा नीयगय्यादानं ॥ यवगय्याय यजुर्न दिदव ८०
 वृत्तुत्तुहानमलिकुलविष्णुविगलननाधियमित्वरुगलवक्रव हित्वकामं मां यच्छा विष्णुदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ दधिमिदिदाहवद्रुत्तात्तुं यदानवद्रुत्तुं ॥ अथ कलकविनाम कामं मां गय्या विष्णुदेव
 र्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ सायकनयगय्यादानस्य ॥ रुविष्णुपूजा ॥ नत्तायकनलेयैर्कादन्नदानमयीशुर्गा गय्यानिवदय
 यमुरुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ दद्रुलपूलेवक्राणां यनिसंख्यातुयावनी गावद्वयसहस्राणि द्रुगलोका महीयन ॥ अथ नव्वयादान इद्रुलपूलेवक्र

समस्तस्य वर्षसहस्रावच्छिन्नद्रुगलोका महित्वकामं मां सायकनयानत्ता विनाम गय्या विष्णुदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ द्रुगोत्तुं यजुः
 दानमिदं ॥ ॥ गिवलहस्य ॥ विगानदानस्य ॥ अथ कयुत्तुहानमलिकुलविष्णुविगलननाधियमित्वरुगलवक्रव हित्वकामं मां यच्छा विगाननर्कं वृहस्य
 निदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ विष्णुधर्मो नीयात्तुनदानं ॥ अथ वक्रिष्णमयः रुगलसमरुलपायिकामं मां सनधिव
 देवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ विष्णुधर्मो नीयकाष्ठपादकादानस्य ॥ अथ वक्रिष्णमयः रुगलसमरुलपायिकामं मां काष्ठपादक
 विष्णुदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ अथ वायानदानस्य ॥ अथ वक्रिष्णमयः रुगलसमरुलपायिकामं मां उयानहावृत्तानां
 नादेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ विष्णुधर्मो नीयाग्वदानं ॥ अथ वक्रिष्णमयः रुगलसमरुलपायिकामं मां ममर्थं यमदेवर्गा रुगवत्तुर्गोदयोऽस्य महंदद ॥ ॥ दालादियानदानं नदवरुत्तुं ॥ ॥ विष्णुधर्मो नीयादानस्य ॥ अथ वक्रिष्णमयः रुगलसमरुलपायिकामं मां

गं नृदेवर्गं रुगवर्गं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ धनूगवीदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ यागं ययस्त्रिनींदद्यात्तु नृणां गीतमल्ललां ॥ रुगवर्गं महावाहाग्रथ
 मधरुलं लरु ॥ अथाश्वमधयक्रुज्यरुलं समरुलयाफिकामः ॥ मोययस्त्रिनीं गं नृदेवर्गं रुगवर्गं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ अथ नृवृषः
 रुदानस्य ॥ वृषर्षं ययिपूष्कं मुदासीनं गगियर्षं ॥ यमुदद्यात्तु नृणां रुगवर्गं सुरुलं ॥ यावन्निनामकूपानि दृषदहस्त्रिनीं निठ ॥ नावत्कल्य
 सहयाणि नृदलाकं महीयन ॥ उदासीनं महिर्षं गगियर्षं ॥ अथ नृवृषः ॥ अथ नृवृषः रुदहस्त्रिनीं नामकूपानि दृषदहस्त्रिनीं निठ ॥ नावत्कल्य
 लाकं महिर्षं कल्य कामः ॥ मंथनं वृषर्षं नृदेवर्गं रुगवर्गं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ दासीदासदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ सुविनीर्गं स्त्रियं दासीं रुतर्कं
 बाननाधिप ॥ यययचक्रुनिदूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ नाजस्रयाश्वमधयक्रुज्यरुलं विन्दनपत्रं ॥ अथ नाजस्रयाश्वमधयक्रुज्यरुलं विन्दनपत्रं
 लयाफिकामः ॥ मोदासीयजापनिदेवर्गं रुगवर्गं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ दासदानस्य नृदेवर्गं ॥ ॥ अथ धनूदानस्य ॥ विष्णुधर्मो नृणां ॥

ययिपूष्कं मुदासीनं गगियर्षं ॥ निर्नृदद्यात्तु यापानि महापातकजाययि ॥ धनूगवीदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ यागं ययस्त्रिनींदद्यात्तु नृणां गीतमल्ललां ॥ रुगवर्गं महावाहाग्रथ
 सिद्ध ॥ अथ महापातकादि वक्रुपापकृयकामः ॥ मंथनं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ सिद्ध ॥ अथ नृवृषः ॥ रुविष्णु ॥ यागं ययस्त्रिनींदद्यात्तु नृणां गीतमल्ललां ॥ रुगवर्गं महावाहाग्रथ
 रुविष्णु ॥ धनूगवीदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ यागं ययस्त्रिनींदद्यात्तु नृणां गीतमल्ललां ॥ रुगवर्गं महावाहाग्रथ
 वगिसूनसा नृवृषः ॥ यययचक्रुनिदूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ नाजस्रयाश्वमधयक्रुज्यरुलं विन्दनपत्रं ॥ अथ नाजस्रयाश्वमधयक्रुज्यरुलं विन्दनपत्रं
 षण्मूरुयुतसुधुन ॥ ययवक्रुनिर्मितं निष्ठानि नृदद्यात्तु यापानि महापातकजाययि ॥ धनूगवीदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ यागं ययस्त्रिनींदद्यात्तु नृणां गीतमल्ललां ॥ रुगवर्गं महावाहाग्रथ
 रुविष्णु ॥ धनूगवीदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ यागं ययस्त्रिनींदद्यात्तु नृणां गीतमल्ललां ॥ रुगवर्गं महावाहाग्रथ
 मंथनं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ दासीदासदानस्य ॥ रुविष्णु ॥ सुविनीर्गं स्त्रियं दासीं रुतर्कं
 बाननाधिप ॥ यययचक्रुनिदूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ नाजस्रयाश्वमधयक्रुज्यरुलं विन्दनपत्रं ॥ अथ नाजस्रयाश्वमधयक्रुज्यरुलं विन्दनपत्रं
 लयाफिकामः ॥ मोदासीयजापनिदेवर्गं रुगवर्गं दूर्गादेवैर्दुष्टमहंदद ॥ ॥ दासदानस्य नृदेवर्गं ॥ ॥ अथ धनूदानस्य ॥ विष्णुधर्मो नृणां ॥

धनुमालायाः॥ धनुमालाकलं यस्तु कृत्यो देवलि कालयः। महाधनुः कृत्यो वापि दिगास्तु विदिगास्तु॥ कल्याणं शुभं सार्गं दुर्गं लोकमहीयः
 न॥ दिगास्तु विदिगास्तु चलि कालयः सन्निधानादा कौन्ति नत्वा च॥ अथ सायकल्य नागाव चिन्नं दुर्गं लोकमहि गत्व कामः॥ मां दुर्गं लयनि
 वगिर्गं धनुमालांग कृत्यो देवगं रुगवत्तु दुर्गं दधौ कृत्यमहं दद॥ ॥ महाधनुः कृत्य॥ अथ सायकल्य द्वाव चिन्नं दुर्गं लोकमहि गत्व कामः
 ॥ मानं दुर्गं लयास्तु दिग्निवगिर्गं नष्टो महाधनुः कृत्यो देवगं रुगवत्तु दुर्गं दधौ कृत्यमहं दद॥ ॥ रुमिदानस्य॥ रुविष्य॥ रुमिदानम् ६२
 पकस्य॥ यावद्दुर्गं विमाननयमीययनियादिना। गावद्दुर्गं स रुमाणि दुर्गं लोकमहीयन॥ धनुः ४५ मां यन्मय चतुर्हस्त दत्तु॥ अथ द
 न्यस्तु रुमिधनुर्दत्तु मानसमस्तं स्वावदुर्वे स रुमाव चिन्नं दुर्गं लोकमहि गत्व कामः॥ यत्सं स्वावदुर्हस्त दत्तु मानयनि मिर्गं रुमिं प्रियदत्तं विः
 कृत्यो देवगं रुगवत्तु दुर्गं दधौ कृत्यमहं दद॥ ॥ धन्यादितस्य दाने॥ विष्णुधर्मोक्तं॥ निवद्य सत्यानि तथा गमिमाप्राप्त्य नुरुमां॥ सत्यादिधान्य

यवादीनि॥ अथानुरुमगमियायि कामं नानिधान्यानि यथापि देवगानि रुगवत्तु दुर्गं दधौ कृत्यमहं दद॥ ॥ यवादिदानं यनदवरुलं॥ वक्र
 पूनादिषु॥ अथार्थं पूजनीया सागस्मिन्नहनिमानवे। दीपे नैवेद्यं रुमा रुक्मि ४ रुले मूले धन्याय के॥ अमिषे चिन्नि विषे ४ मां के धन्य ननद्युर्गं न
 व। यस्तु रुमिं यान के दधौ नाहि जागन लेन च॥ कंकुमां जनवसे ध्वनिमिषि यथा गिरि ४ लव लान कृका श्यां वगु शर्द करुले स्रथा॥ सिंदूरलस
 लूननादि यद्यस्तु रुमिं विष्णु वली। निवद्य यथा गच्छा दद्या ४ यो मि कवम्य न॥ ॥ स्यादिना नावास्तु विदिगानि रुल मूल धन्य कामिष साक वन्द
 नद्युर्गं रुगवत्तु कलव लाल कृक सिंदूरलस लूनल कलि कागलं कयस्तु रुमि दधौ यान कानि दुर्गं यो मि काम नया दधौ दद्यात्॥ ॥ अथ द्वागादि
 द्यागर्गं॥ दवीपूना ले॥ यस्तु द्याग ४ यक रुं द्याग वला रुवध स्रथा॥ गवला महिष ४ यस्तु रुमि दधौ मयादि॥ रुविष्य पूना ले॥ दुर्गं यादुर्गं नैयुं धं दुर्गं
 नादहि वन्दनं। वन्दनात्त्यर्गं नैयुं ४ स्यर्गं नादहि पूजनं॥ पूजनात्त्यर्गं नैयुं ४ स्यर्गं नादहि पूजनं॥ गये आत्मा सदानं रुमहिषा रुनियाननं॥

मन्त्रवर्मेसेनयथायाम। नक्रमोवक्रवीयाहं नायनयनमाश्रुत॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥ ॥ अथ चामनपूजा॥
गर्गाककनसंकागहिमठिं नयाउत्र। यात्मानयत्वं इति नं वामनामनवत्तरु॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥ ॥ अथ
चूडपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
अथ चक्रपूजा॥ गङ्गाककनामहावीर्येऽस्वयन्कुलसिमागिरिः। यकिनाशवेननयल्लथानायायलध्वजः॥ काव्ययथाष्टनाहलोनागविचित्रवाहनः ॥ ५
। अयमथादनाधर्मो नलोदवानिहृदयः॥ गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
ॐ चक्रायनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥ ॥ अथ यगाकापूजा॥ इन्द्रकुम्भिसवाचूडां वायुः शर्ममहर्षयेऽनागकिन्ननगन्धर्वो यक्रुद्रमहावर्ग
ः। यमथाश्वसदादिवीर्येऽस्वयन्कुलसिमागिरिः॥ गङ्गाककनायगिहृदयः वनलोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥ ॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः

लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥ ॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
सिन्धवेवाद्यलोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥ ॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
अथ इन्द्रपूजा॥ इन्द्रकुम्भिसवाचूडां वायुः शर्ममहर्षयेऽनागकिन्ननगन्धर्वो यक्रुद्रमहावर्गः। यमथाश्वसदादिवीर्येऽस्वयन्कुलसिमागिरिः॥ गङ्गाककनायगिहृदयः वनलोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥
॥ अथ चक्रपूजा॥ यथा मृदुदम्बदयः गिवायमो वसुधनां। गन्धमोददयः चूडयः अद्वैतनिगर्गसदा॥ॐ निमन्त्रुं वमं लोचनमन्त्रं ह्यर्घ्यगन्धादिना पूजयन्॥

त्वयि गक ४ सु न ध्वन ४ त्वयि छि न ह निर्द्व वल्ल द र्धे न य न क य ४ ॥ न म स्तु स च्चे नारु ड गि वा रु व म ही य न । गे ला कृ त्र य स च्चे स्तु सिं हा स न न मा शु न ॥
 ॐ नि म नु ष सिं हा स नो य न म ॐ नि या द्या दि रि ४ सिं हा स न पू ज य न् ॥ ॥ अथ म्ब यू जा ॥ उ नं ग म चि नं जी व य न ग म्ब व ल कि न ४ स दा मां स म न न
 क स्वा मि का र्ये स दा कू न् ॥ ॐ नि म नु ष ॐ अ म्ब य न म ॐ त्व द्यो दि ना पू ज य न् ॥ उ नं ग पू जा यो ज ल कृ पू ष्या लि वि व ऊ थ न् ॥ क लू जा य मि र्मं ऊ थ न् ॥
 ग म्ब च्चे कू ल जा ग सि मा रु या ४ कू ल दू ष क ४ व क ४ ४ स त्व वा क्श न सा म स्य व न् ॐ स्य व ॥ न क सा च्चे व स्य य स्य मू नी नां न य सा ग थो । नू द स्य व क्श च र्थे ण य
 व न स्य व ल न च ॥ य रा वा च्चे कू ग म स्य व द्धे स द्धं उ नं ग म । स्म न त्वे ना कृ य ग सि को षु रं व म लिं स्म न ॥ मू नां स्ये र्म थ्य मा ना नू की वा दा द म्ब मा दि रि ४
 जा न ४ उ च्चे ४ य वा पू च्चे न न जा ग सि न त्त्त न ॥ यो ग निं व क्श हा ग क्श पि रु हा मा रु हा ग थो । दू स्य ये नू न वा दी च न ॐ य म्ब य नो मू ख ४ ॥ दू स्यो व न्द सो वा
 य यो व ल्य ग्म नि दू ४ कू नो । नां ग निं व क्श सि क्रिये न च्चे या र्ये रु वे व ड ॥ वि कृ नि य दि ग क्श थ य द्धे ध नि उ नं ग म । नि पू च्चि जि ह्वा स म न स ह र कू सू खी रु व न् ॥

४१

अथ उ नं ग म म्ब रु कि र्म ल कृ य न् ॥ न द्य थ ॥ य द्या नी ग लि छि रु द कि ण व न ण ह य ४ स मू क्ति य स कृ य नि दा न न न्द ४ ग गु न वि ना दि ना य त्ना न् ॥
 अथ व लि दा र्म ॥ न ग म्ब म थ्या प लि क्श रु ला ण मा य रु क्श दि व लि म्ब या दा य न य मा य रु क्श व लि ४ उं कू र यं थ्ये न म ४ ॐ त्वो दि क म ण ये र्थ्ये मं ग
 ला ये क थ्ये रु डे का थ्ये क या लि न्ये दू गे थ्ये क मा थ्ये गि वा थ्ये धा थ्ये ल धा थ्ये स्वा हा थ्ये ॐ त्वो का द ग थ्ये ४ ॥ १ ॥ उ य च्चे ॐ थ्ये य च्चे ॐ थ्ये च ॐ ना यि का थ्ये
 व ॐ थ्ये च ॐ व थ्ये च ॐ दू पा थ्ये च ॐ का थ्ये ॐ त्व द्ध ४ ॥ २ ॥ उ य दं द्ध थ्ये म हा दं द्ध थ्ये गुरु दं द्ध थ्ये क लो ति थ्ये सी म न रा थ्ये वि ग्ग ला थ्ये मं ग ल
 थ्ये वि कृ या थ्ये कृ या थ्ये ॐ नि न व थ्ये ४ ॥ ३ ॥ मं ग ला थ्ये न च्दि थ्ये रु डा थ्ये ल थ्ये को थ्ये य ग थ्ये य पू थ्ये म धा थ्ये गि वा थ्ये सा थ्ये य ग थ्ये गी रा थ्ये क या
 थ्ये धू थ्ये आ न द्ये स न द्ये ॐ नि या क ग थ्ये ४ ॥ अथ कू म नु वि ना ॥ वि कृ या थ्ये मं ग ला थ्ये रु डा थ्ये धू थ्ये गी थ्ये गि वा थ्ये क मा थ्ये सि थ्ये उ च्चे उ मा थ्ये
 पू थ्ये यि थ्ये सा थ्ये न लो दी का थ्ये का थ्ये य ग थ्ये ल थ्ये ॐ ग्म थ्ये व डे ग थ्ये क व थ्ये वा थ्ये कृ य थ्ये अ य ना जि ना थ्ये अ जि ना थ्ये मा न थ्ये ध्व ना थ्ये दि ह्ये मा

याये महा मायाये माहिने नजिला लसाये नानाये विमलाये नार्ये गनयाये कोमिथे मथे दुगाये क्रियाये अनंधये यच्छाये कपालिने नो
धो काले मयूये निनगाये खरूपाये वरूपाये विपूराये अविताये वज्रिकाये तनपूजाये वैवस्वते कृमाये वैष्णवे महालक्ष्मी कालिने को
मिथे गिवद्वये नाम्नाये निवकुंठयिद्वीत्या बलिंदद्यात् ॥ नमो वाक् ॥ महेश्वये कोमाये वैष्णवे वानाये रुद्राय ॥ वा मूलाये महालक्ष्मी
वल्लिकाये ॥ ह्यर्व नवस्था वलिमूलाय ॥ ॥ अथ सामान्य वलिदानं ॥ माषक माषमांसाद्ये दद्यादिह वलिनिधि ॥ नमस्तु ॥ लाकपाल
गहनकनसूनासूत्रगणगन्धर्वयकनाकस विद्याधनगनुमहानम किन्नरगकुलदवगासनाहगपिगावकद्यादमनूयमाहया निनीठाकि
नीगाकिनीगणां मंनानाडयं गृह्णन्तु कोलाहालं निवलिंदत्वा उं गिवा ८ कं कालवनाला ८ पूगना ८ रुकादय ८ ॥ नमस्तु ह्यिमायां वलिदान
नमो मिता ८ ॥ निदद्यात् ॥ ॥ अथ महाहया मर्द्धनाय विजयकामस्य नृपस्य दवीपूजा पूर्वक वलिदानं ॥ नमस्तु यहा नसम्यन्ना वस्तुन

लरुलादिरिशायस्येधडाविस्वाम् जामीपुनागवच्यके॥ पूर्ववदविविर्गा पूजां नवयित्वा दूर्गाय नमः मूलमर्त्यथा गकि जयित्वा मुखाय णम्य वनेया
ध्यां कृष्णगिलजलायादाय ॐ अद्याम्बिनगुक्रास्य्यां अर्द्धे नमः ॐ मये वाचं महिषमर्जं मर्षं वा विजय कामाहं दूर्गायै ध्यामयिष्यां ॥ ॐ निर्विकल्पाय
प्रसादाय ॐ कालिकालिलाहदभये नमः ॐ निर्मर्जं जयित्वा स्वर्गं नगन्धयस्य सुगन्धिरिनलकर्म महिषं ध्यामयन् ॥ नन्दं स्थापयन् कर्मसाध्यां महाको
शिकर्मशालिमन्त्रिणां धूमनादिस्थावर्तिदद्यात् ॥ गजकमः दूर्गाय हस्त्यनेम्यां दिगियाद्यादिरि नृपचात्रे धूमनां संपूज्य नृधिनमां सवलि मूयः
नीय ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं नमः ॐ कुरु १ गुलकल धन २ मालय २ विडावय २ कल्याणय २ पून २ मूलय २ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं रं वं ह्रीं रुद्र २ मर्द २ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ निमहाः
कोशिकमनुमूढायै नमः नृधिनमां सवलि ॐ निदद्यात् ॥ नवं वायुयां नमः नृधिनमां सवलि ॐ नृधिनयाय नमः ॥ निगन्ध्यां नमः नृधिनमां
सवलि ॐ वनये नमः ॥ आग्न्यां नमः नृधिनमां सवलि ॐ विनाये नमः ॐ निदद्यात् ॥ नवं ॐ यिलिपिं जाय नमः ॐ कथाध्यानमः ॐ ऊरुकाय नमः

ॐ क नालिन नमः ॥ क्रिया गा दि दद्यात् ॥ अथ गङ्गा यमि मां यिष्ट कम र्थां कृत्वा खड्ग न गिन श्रु द यित्वा ॐ क न्दा यन मः ॥ नि गिन र्त्वा दाय दत्वा ॐ गि
 त्वा यन मः ॥ ति क व र्ध वि ग्ना य्वा य दद्यात् ॥ अथ स व न ४ त्वा ला शु क्ता च न ध न ४ त्वा य कालि न ४ या लि या द ४ त्वा वा न ४ पु न न र्द यामि ॥ ग ष द र्वा पू र्ण थ न
 ॥ ग र वि धि ४ क्री न ल य न न द द्या ॥ ति क न स न म धू ना ग र्क न या जे ल न व य त्वा क म र्त्वा रु न ग य ल मि न न धू प दी पा न नि र्ग नाना वा द्य द्यो षे मूल म
 नु ल य य यित्वा य व ल ग धू म लो ध क ल्य वृ न न उ द्वा द क स हि न न वि नू क्त्वा सु ख षू वा नि ला य काल्य स ग न्ध वा लि ना स्र य थ न ॥ ग र ४ या द्या र्थ व म नी
 या दि दत्वा क र्क मा गु नू क र्पू न च न्द ना न्दा य मूल म नु मू च्छा र्थ ॥ द म नू ल य र्त्वा इ र्ग द द्ये न मः ॥ ह नू लि य को ण या दि व र्त्वा लि य थ वि रु र्त्वा नः
 त्वा नि ह म म या नि वि रु र्त्वा नि डा ण जा गी र्च य का दी नि सून रि य्वा नि ह म य्वा लि व मूल म नु मू च्छा र्थ ॥ नि नि व द य न ॥ धू प दी प य रु ति ने व
 द्या नि मू ख वा स मा मू ला ना र्त्वा क पा द्वा पा न रु क्त वा म न र्ज न य ॥ वि गान य व धा या दि दत्वा ग व ४ य ल य नु त्वा क्ता गा दि व र्त्वा दि द्या नू ॥ ह र्द

ना रिक दू र्ग पू ज वि धि ॥ ॥ अथ महा ह्म मी म हान व र्त्वा न व र्ग पू ज वि धि ॥ ॥ ग र ४ च न्द न क र्क मा दि ना र्त्वा द ल क म ल मा लि ख्य पू र्ण द ल
 ल ग लो च ना व र्त्वा नू उ व ॥ अथ य म्नि व र्त्वा य व ॥ या धा क र्क व र्त्वा च ॥ या नै म ह्य नी ल व र्त्वा च ॥ ना यिका वा नू ॥ लो क्त व र्त्वा च ॥ वा य थ धू
 म व र्त्वा च ॥ व र्ग मी सो ध यी न व र्त्वा च ॥ नू या ॥ गान या लू न नू या र्त्वा च ॥ ति व र्त्वा स र्वा ४ या ग ग रु ज मू र्द र्ज ख र क य ॥ द र्ग ध नू च ज या ग ग क्रि य म र्त्वा
 म ह स्ता मू न नू न व र्त्वा च ॥ क र्क ग न च क र्क ग ला का चि न द क्रि ण क ना ४ य म म ॥ अथ य म्नि व र्त्वा य व ॥ या धा क र्क व र्त्वा च ॥ ना यिका वा नू ॥ लो क्त व र्त्वा च ॥ वा य थ धू
 म व र्त्वा च ॥ व र्ग मी सो ध यी न व र्त्वा च ॥ नू या ॥ गान या लू न नू या र्त्वा च ॥ ति व र्त्वा स र्वा ४ या ग ग रु ज मू र्द र्ज ख र क य ॥ द र्ग ध नू च ज या ग ग क्रि य म र्त्वा
 दान क र्क वे च य ह र्द मू र्त्वा ना र्का ग यी न ल ना च्छ का ४ स र्वा ४ व र्त्वा च ॥ ग र ४ क म ४ स य्वा क र्क मा दाय आ वा क्त क य यित्वा ॐ क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क र्क
 लि त्वा ह नि म नु मू च्छा र्थ ॥ अथ य म्नि व र्त्वा य व ॥ या धा क र्क व र्त्वा च ॥ या नै म ह्य नी ल व र्त्वा च ॥ ना यिका वा नू ॥ लो क्त व र्त्वा च ॥ वा य थ धू
 म व र्त्वा च ॥ व र्ग मी सो ध यी न व र्त्वा च ॥ नू या ॥ गान या लू न नू या र्त्वा च ॥ ति व र्त्वा स र्वा ४ या ग ग रु ज मू र्द र्ज ख र क य ॥ द र्ग ध नू च ज या ग ग क्रि य म र्त्वा

वल्गुयेय वल्गुये नमःॐ कृष्णवल्गुये वल्गुये नमःॐ नीलवल्गुये वल्गुये नायिकाये नमःॐ शुक्लवल्गुये वल्गुये नमःॐ धूम्रवल्गुये वल्गुये
 नमःॐ पीतवल्गुये वल्गुये नमःॐ पाण्डुरवल्गुये नमःॐ श्रुतिचलिकाये नमःॐ गंगाशालपुष्पविलयगुजगीपुष्पकादिसूनकि कसुमेसुलमकुमचा
 श्रीदेवीमन्त्रेयम् ॥ गङ्गामधुदूर्गदद्याय नमःॐ आदिदलवल्गुये दूर्गगिरिनमःॐ वल्गुये लिङ्गिस्वाये नमःॐ स्वाहाकवचाय नमःॐ दूर्गदूर्ग
 वल्गुये नमःॐ निर्यवांगनिष्कथयम् ॥ दक्षालिङ्गिहासनं च पूजयम् ॥ स्वस्तिद्वन्द्वगङ्गाकपालान् गृह्णान्निवन्मन्त्रिणिका
 म्बपूजयम् ॥ यथासंस्मृतं वस्तुन हर्मालं कान्तुनादीनि गुरुकामलेयादये दद्यात् ॥ गङ्गाश्चलिवद्वा दूर्गगिरिवांगनिकवीमिह्यादिङ्गा
 लिययेत् ॥ गङ्गिनवदूर्गापूजाविधिः ॥ ॥ सर्वमहाक

गवत्ये चलि कार्थे नमः ॥ तिपा आदि दत्वा ॥ दं कं कमानुलयनः ॥
 ॐ चलि कार्थे नमः ॥ ति कं कमानुलिथ च च नागुच कर्पूनाश्च नलयनं च दत्वा ॐ चलि कार्थे नमः ॥ ति सि न कसूमां कलि यथ नं ॥ ४ यूज यग ॥
 कनवीन रुवा गमी विल्व पत्रादि माला लिनत्यर्थे न व सद्य न तु लुधू पारु गवत्ये चलि कार्थे नमः ॥ ५ व दीप ॥ ५ नानि गाम्भूलानि नानि नै ॥ ११
 वद्यानि ॥ दं वस्तुं वृहस्पति देव गं ॐ चलि कार्थे नमः ॥ ति यथ कं दद्यात् ॥ ५ वम वहिन ल्धन न ह्य षट् सिं हूलो न कय दृष्टि कादि दद्यात् ॥
 ४ यल म्य कां च न ह्य पि रं गि गूलं हय स मा ना य स म न ना च रु च्छु न वा म ना दि णा रा न्वि रं नाना वा दि ग व द नि र्धो ष द व्या ल यं नी त्वा द र्शो द र्श
 ४ पू न ग ल्प यत् ॥ अथ पू न ल्प ना पि पा आ र्घो च म नी य पू न ना च म नी या नि कं क मानु ल य न मि न पू य धू य दी प गां वूल ने व द्य वा सा रि स्थ ॐ चः

त्रिकायेन म० निरूप्य विधा यय लश्र उं दूर्गो गिवां गान्नि कनी मित्यादि स्तुतु वा उं नृपद हात्यादि उं सर्वमंगल मंगल्य त्यादि नापि सुत्वा
 क्रमस्व निविष्ट क्रु ॥ ॥ अथ महानवम्यां दवी पूजा विधिः ॥ रुविष्य पूना ॥ मासि वा श्वयुज्ज्वीन शुक्लपक्षे शिशुलिनी नवम्यां पूजय श्च शुभस्य पू
 ष्ठरुलं ॥ ॥ अथ मधसहस्रस्य वाजयय गनस्य च । गुरुलं लरुगवी न दिविदवगले च न ॥ शिशुलिनी दूर्गो कगरुय निलकुला न्यादा य उं
 अद्या श्विन शुक्ल नवम्यां स्वर्गो धिकन लय निवृत्तत्वा श्वे मधसहस्र वाजयय गन रुलया क्रिका मन्त्रि शूलिनीं दवी महं पूजयिष्य ॥ गिवाहि न संक
 त्या महाश्वमी पूजा क्रमः ॥ गल्लय नाश्वो नूलपन पूष्य धूप दीप गौ ने वद्य गाम्बूलं कन ल गय्या स न पाद को पान च्छु वा मन गं स्रव लूदि दाना च
 य नू पूजां विधा य उं दूर्गो गिवां गान्नि कनी वक्त्रा ली वक्त्रा लयिया मित्यादिना ॥ उं महिष द्वि महामा यत्यादि नाच व नं याथेय नू ॥ ॥ अथ कृगम
 हिषद्या गनस्य ॥ अऊनां महिषा नां च मया लां च गथा वधान् । यी लथ द्वि धिव दूर्गो मां स्रसा निग नयेथ नू ॥ नमः कृगयद्या गस्य उं अथ महानवम्यां

ॐ श्रुद्धमहानम्यां सकला ग्यागयी गगानिने नृक्ष दीर्घायुक्ष समृद्धिका भाववका चैष्टवस्तु नंगयुजनमहं कविथ ॥ ॐ निसंकल्या सुखिलाय
 विसृष्टा कृगमादाय ॐ नवका ॐ हागक्त ॐ हनिष्ठया वाक्ष कृपयित्वायाद्यादिदत्वा ॥ ॐ नमादवाधिदवायु नंगवनेवात्रिण ॥ सूर्ये पूरायदवा
 य ॐ नंगनाहिनायकु ॥ ॐ नंगयविषद्यस्य नृपजायविधावनि ॥ सायमस्वाधियं नृक्ष गन लंतां वक्राम्यहं ॥ ॐ नियधित्वा नवका यनम ॥ ॐ निसृ
 ष्यां जलिनृथनयुजयग ॥ नग ॥ गन्मादिदत्वा वस्तुं चदत्वां जलिवद्धा ॥ ॐ सूर्ये युगमहावाहा कृया ददयनन्दन ॥ गगिं कृ नृक्ष नंगनां नवगाय १४
 नमांशुन ॥ ॐ निसृत्वाये लभे नृक्ष गग दिवलिंदद्यान ॥ नगवाश्यां ॐ श्रुद्धमहानवम्यां सकला ग्यागयी गगानिने नृक्ष दीर्घायुक्ष समृद्धिका मः
 मं कृगं वक्रिदेवर्गं मयं वावर्णदेवर्गं महिषं यमदेवर्गं रुगवर्गं नवकायाहं द्यागयिथ ॥ ॐ निसंकल्या द्यागयनृ ॥ ॐ नृपंदही निवनं याश्च यणः
 मग ॥ नगस्तु किलाय विसृष्टा कृगमादाय ॐ उच्चैष्टवस्तु ॐ हागक्त ॐ हनिष्ठया वाक्ष कृपयित्वा ॐ उच्चैष्टवस्तु नम ॥ ॐ नियाद्यादिहिनृयवावेष्टपू

कथय ॥ अथ कृग को नानुस्त्रापि गानलं कृगानुस्त्राग्ययुनस्तनांशुनगा नानिधायो नृषाद्य ॐ उच्चैष्टवस्तु नम ॥ ॐ नृपंदही निवनं याश्च यणः
 यनृ ॥ ॐ नंगनां कर्णजायमिमं यथय ॥ ॐ गन्धर्व कलजगति मादृया ॥ कलद्रवक ॥ वक्रण ॥ सहावाक्ष नतामस्य वनृणस्यव ॥ नृक्ष सावेव सूर्यस्य
 मनीनां गयसागथा ॥ नृक्षस्य वक्रवर्धो लं यवणस्य वलनत्र ॥ यसावाच कृगा गस्य वद्धस्वत्वं उच्चैष्टवस्तु नंगमं ॥ सनत्वं नाजयुगासि कोक्षु रं वमर्लिं सन ॥ सूनासूने
 म्मेथमानानृक्षी नादादमृगादिहि ॥ ॐ गगउच्चैष्टवस्तु ॥ ॐ नृक्ष नंगनासिगत्मान ॥ यो गगिं वक्रहागक्त लिहृहामहृहागथा ॥ सूर्ये नृगवादीव यलं यथ
 यनां मुख ॥ ॐ सूर्ये वन्द मसो वायू यावत्यग्यं निद्र ॥ कृगं ॥ वक्रत्वं नां गगिं क्रियं गत्र यायं रु वरुव ॥ विहृतिं यदि गक्तथा ॥ निष्टुचि जिहृसमनसुहृहृ
 हृस्वीरुव ॥ ॐ नंगमचिने जीव यनगं नलक्रिग ॥ सदा मां सनन नृक्षामि कार्यं सदा कृन ॥ ॐ निनव नयुजाविधि ॥ ॥ अथ दवी विसृजने ॥ दगर्थे
 शं वलन कृगयुक्तायां कवलायावायागयाद्याद्यो वेमनीय गन्धयुष्टय दीय नां वूलनेवद्यवक्रादिनां जयनीत्यादिमेकल यथाविधि युजाविधायं यलम्य

इमं निवागं नि कनी वक्ता वा वक्ता नैव यथा । सर्वलोक यत्नं यत्नमा मिसदा गिवा ॥ मंगलां गुरुनां गुर्वा निः कलां यन मां कलां । विष्णु स्वर्गां विष्णु मा
 नां वल्लिकां यत्नमा मिसदा ॥ सर्वदेव मयीं दवीं सर्वनागरया यदं । वक्ता मविष्णु नमिगां यत्नमा मिसदा उमां ॥ विष्णु कला विष्णु निलयां दिशु कला ननिवा सिनां
 । आगिनी आगमा नात्र वल्लिकां यत्नमा मिसदा ॥ ॐ गानमानं दवी मीश्वरी मीश्वर यियां । यत्नमा मिसदा देगीं सा ना वीव ना निनीं ॥ यत्नं यत्नं कलाः
 गुं गला या द्या यिथान न ॥ समुक्तं ४ सर्वेया येन मादन दूगेया सह ॥ ॐ गिष्णुत्वां जलिवं ॐ महिष द्याया दिशु यं दहीया दि कं क्रमने समाल च द्या दिया १३
 ० त्वा वनं यार्थ ॥ विधि हीनं क्रिया हीनं रुक्मि हीनं यदचिर्न । पूर्वोक्त वक्तु गता चै त्वत्पसा दात्म हम्ब नि ॥ ॐ गिष्णुत्वां यक्रमम विविष्ट ॥ पूर्वमर्कं
 हीत्वा ॐ वल्लि स्वर्गे नमः ॥ ॐ गान्यां नि क्रिया ॐ उल्लिष्ट दवि वल्लि सिगुर्वा यूर्जा यग्य कव । कनूय मम कल्याण मकारि ४ गकिरि ४ सह ॥ गच्छ गच्छ यन
 स्तनं स्वस्तनं दवि वल्लिक । वक्तु आगा जल वृद्धी निष्ठ गह वक्तु गया ॥ ॐ ग्लुक्ता यगी नृत्वा वा यवक्तु यार्थ की शकोत्तु क मंगल पुन समनं आगा जल स

मीयं नीत्वा ॐ दुर्गे देवि जगत्मा नः स्वस्तनं गच्छ पूजित । संवत्सन यगी नृत्वा पुन नाग मना यवे ॥ ॐ मां पूजां मया दवी यथा गच्छ निवदितां । न कला यथ समा
 दा य वक्तु स्वस्तन मूरु ममि गिय थित्वा आग शिष वा हथे न ॥ अथ पूजा कला नमा गत्य सूय कालि गपालि वन व ॥ अथ कृगु यजला न्यादा य ॐ अथा
 यन गुक्ता दगम्यां निथो कने नृत्वा ली नृदगी दवी पूजा यगि द्याथे मक ववे मिग हि व ॥ ममि देव नं यथ नाम गाय वा कला यदा क्रिणां दाउ
 महं मूरु ॐ गिद क्रिणां दद्या न ॥ ॥ अथ विजय दगम्यां दवी संय वला न नम यना जिग पूजा विधिः ॥ ॥ गग कृगु यगि लजला न्यादा य ॥
 ॐ अथा गुक्ता दगम्यां निथो या गार्था विजय कामा रय ना जिगा पूजा महं कनिथ ॥ ॐ गिर्से कल्या चन्द नादि नो कक मल मालिख्य नमः ॐ अथ ना जि
 गाथे नमः ॥ ॐ ग्लुक्ता यना जिगां दक्रिणां ॐ क्रिया गच्छे नमः ॐ गिज्यां वाम उमा ये नमः ॐ गि विज्यां यगि द्या य वक्तु ज्ञां पीन वक्तुं सचो रन गल्लि
 नां । दक्रिणां वाम था नूय निगल हल्लथा ४ वक्तु चर्म धर्मा मधस्तन हल्लथा चै नारु यचिर्न निन गमीष दूय हसिग वदना मय ना जिगां धात्वा वा कला

पयित्वा ॐ कौंश्रुपना जिनाये नमः ॥ गियाद्यादिहिः पूजयित्वा वक्रगना पना जिनायूष्यदाणपूष्यवित्पयने मूयये ॐ कौंश्रुपना जिनाददयाय
 नमः ॥ गिद्वदयं ॐ कौंश्रुकाय रुदिनिदया मूकालि पूजयेत् ॥ गनादक्रि ॥ ॐ कयाये नमः ॥ गिजया ॥ वाम ॐ विजयाये नमः ॥ गिविजय
 पूजयित्वा धूयदीयने वद्यगावूलवक्रानि निवद्ययलं मू ॥ वानू ॥ मूखयभन विचि कनका कला । जयादवी गिवरका । सर्वोक्तमानददा
 उम ॥ कांवनन विचि कलकयूनल विहृषिगा । जययादां महा माया गिवरा विमयगसा ॥ विजयाचे महा रागा म ददा उ विजयमम । हाने ॥ १३
 सुविचि कल राग्वत्कनकभखला ॥ मूयना जिना नदनगा कना उ विर्यं जेमम ॥ गिउत्वा हनिदायी नवक्रु इवोसहि न सिद्धार्थकानु वद्धा ग्राः
 वानादयना जिना नगावनयं वदया रुदिनिधायारुलक्रि ग कामनया खां गधनयन ॥ समावा नादवक्रालि संयूय स्वममादाय ॐ कान मूधा
 नयनूपद क्रि लं कया ॥ ॐ मूदायना जिनायस्मा लं ल गोहृ रु माहृ गा । सर्वे कामार्थ सिद्धार्थं गस्मान्त्वा धनयां मूह ॥ रुवायना जिनाद विमम

सर्वे सर्वे मूद्वयः । पूजिनायां लयि यया ममा मूद्वनिर्गहनं ॥ गूययना जिनावल य मरि मन्त्र ॥ ॐ जयदवनदद विदगम्या मयना जिना । धनः
 यामि उजदक्रु जयला लारि वृद्धय ॥ वलमा धिहिवलय मयि गंजी यना जयं । ल्वदान ॥ रुवद्यं मे धन धान्य समृद्धयः ॥ गूयया ना जिनायू जावि
 धिः ॥ ॥ मूधालिषकः ॥ गगु ॐ उ गि वक्र लय गदवयन ल्वमह । उयं ययं उ मन्त्र ॥ मूदानव ॥ न्दया गूर्वं वां प्रव ॥ गिमन्त्र लं गी निक
 लसं मूक्तय गऊ लेन वाक् ॥ ॥ पीनालिक महा मने ये जमान मरि विचं य ॥ गगु मंग ॥ ॐ मूनात्वा मरि विचं उ वक्र विमह म्वना ॥ वासूदवः
 जगन्नाथ स्मथसं कर्षे ॥ विउः । यद्यु म्मनि नूद्व म्वरु वं उ विजयायन ॥ मूखलुला गिरु गवान यमावे निर्मे निरुथा । वनू ॥ ॥ यवेन म्वे वधा
 माध्र कृष्ण गिवः ॥ वक्र लसहि न ॥ गवा दिक्काला ॥ यं उ न सदा । कीर्ति ले श्री धृ निर्मे धा पूषि ॥ ॥ द्वा क्रियामनि ॥ वृद्धि ले जावयू ॥ गी नि मुधि
 ॥ कां गि म्वमा नवः ॥ ॥ नात्वा मरि विचं उ दवयय ॥ ॥ मंगना ॥ ॥ आदि यवेन माहो मा वध जीव सिगा कौंश्रु ॥ गहात्वा मरि विचं उ ना कं क उ म्वन

स्थिताः ददन्त नव गंधवो यक्रनाकस्य नगः ॥ मयथा मानवा गवो देवमानव उवच । देवपत्न्याः देवानां गवोऽप्याश्वपत्न्यां गणाः ॥ अक्रा-
 लिस्त्वे गच्छाति नाशनावाह नानिच । उषधानि च नानि कालस्यावयकाश्च य ॥ सवित्रः सा गना लीला स्त्रीर्था निरुलदानदाः ॥ नृनत्वा मः
 रुषिर्वैतं तु सर्वे कामार्थसिद्धयः ॥ ॐ निदुर्गं रुक्मिणं गिर्यां द्वितीयं यथा गमनं गच्छ ॥ ॐ अद्वैतमूर्तिं त्रिसुमं चिग्नं च मार्गं गीर्वेक-
 ॥ मुक्तापकं तथा दग्धं रुक्मिणं च विष्णुं नमः ॥ यत्रिधनं च तथा गनं कविवाचं तं यूनं ॥ गच्छेद्विभक्तुं लिखितं दूगं रुक्मिणं गिर्यां ॥ ॥ ११

